खण्ड-264, अंक-6
शनिवार, 21 फाल्गुन, शक संवत् 1887
(12 मार्च, 1966 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 264 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६६

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

LEGISLATIVE ASSEMBLY
UTTAR PRADESH

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, १२ मार्च, १९६६

विधान सभा की बैठक सभा-मंडप, लखनऊ में ११ बजकर ८ मिनट पर उपाध्यक्ष, श्री होतीलाल अग्रवाल की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य—२९७

अक्षयवर्सिंह, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अहमद बख्श, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासर्नासिह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
ऊदल, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
कंवईलाल, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनार्थसिंह, श्री
कल्याणराय, श्री
काशीनाथबहादुर पाल, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
कुमार करुणा कृष्ण नायर, श्री
कृष्णपार्लासिंह, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशर्वासिंह, श्री
कैलाश, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगार्सिह विष्ट, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तार्सिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गोपीनाथ दीक्षित, श्री
गोबिन्द सहाय, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री

चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह, श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जमीलुर्रहमान किदवई, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जसरामसिंह, श्री
जियाउर्रहमान, श्री (उपनाम वक्कन)
जुगलकिशोर, आचार्य
जुगलकिशोर, श्री
जेड० ए० अहमद, श्री
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखण्डेराय, श्री
झिलमिटराम, श्री
डल्लाराम, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम शाक्य, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवीदत्त, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
देशराजसिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पांडेय, श्री
धर्मसिंह, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरसिंहनारायण पांडेय, श्री
नरेन्द्रसिंह, श्री
नरेन्द्रसिंह बिष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवरंगसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पांडेय, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
पंचमदास, श्री
परमाईलाल, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पूरनलाल, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
फूलसिंह, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनवारीलाल विप्र, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवीरसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसंतलाल शर्मा, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजभूषण शरण, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वर सहाय, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवान सहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
मंगल, श्री

मंगलदेव, श्री
मंगलप्रसाद आर्य, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरासिंह, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधोनारायण मुदगल, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकुन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेघनाथसिंह शिशोदिया, श्री
मेवालाल जायसवाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपालसिंह वर्मा, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रदत्त, श्री
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीरराम, श्री
रघुवीरसहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रणबहादुर सिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रमाकान्त सिंह, श्री
राजदेव, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
रामआधार कनौजिया, श्री
रामआधीन सिंह, श्री
रामअनन्त पाण्डेय, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे वर्मा, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
रारती, श्रीमती
रामखन शुक्ल, श्री
रामधन सिंह, श्री
रामलाल, श्री
रामसमुझावन, श्री
रामसिंह, श्री (एटा)
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसुन्दर पाण्डेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरत प्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रुकुमसिंह राठौर कुंवर
रुद्रप्रताप सिंह, कुंवर
लखपतराम शर्मा, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुर सिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपाल सिंह, श्री
वसीनकवी, श्री
विक्रमशाह, राजा
विचित्रनारायण शर्मा, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकर सिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती

विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पान्डेय 'प्रणव', श्री
विष्णुप्रतापसिंह, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शान्तिचन्द्र शुक्ल, श्री
शान्तिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शारदाभक्तसिंह, श्री
शिवबनलाल सक्सेना, श्री
शिवचरण, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
शौकत हमीद खां, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सियादुलारे, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सीताराम डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामसिंह, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुदामप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजराम विशारद, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूरतसिंह, श्री
सूरजलाल गुप्त वकील, श्री
सोराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेमराज, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट--गृह मंत्री (श्री गोविन्दसिंह) तथा गृह उपमंत्री, श्री शिवप्रसाद गुप्त, भी उपस्थित थे ।

सदन का कार्य अवलम्ब से शरू होने के सम्बन्ध में व्यवस्था का प्रश्न

श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)--

श्रीमन्, एक व्यवस्था का प्रश्न है । मैं यह कहना चाहता हूं कि इस घड़ी में ११ बज कर ८ मिनट हो चुके हैं अतएव मैं जानना चाहता हूं कि यह घड़ी गलत है अथवा आपही देर से आये हैं ।

श्री उपाध्यक्ष--

यह घड़ी सही है, किन्तु कोरम नहीं हुआ था इसलिये घंटी बजती रही ।

हस्तिनापुर नगर विकास मण्डल (चालू रहने का) विधेयक, १९६६

सचिव, विधान सभा--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से घोषणा करता हूं कि हस्तिनापुर नगर विकास मंडल (चालू रहने का) विधेयक, १९६६, पर जिसे उत्तर प्रदेश विधान सभा ने

अपनी दिनांक ८ फरवरी, १९६६, की बैठक में पारित किया था तथा उत्तर प्रदेश विधान परिषद् ने अपनी दिनांक १५ फरवरी १९६६, की बैठक में पारित किया था, राष्ट्रपति महोदय की अनुमति दिनांक ६ मार्च, १९६६ को प्राप्त हो गयी है और वह सन् १९६६ का उत्तर प्रदेश का ९वां अधिनियम बन गया ।

विधान सभा से अनुपस्थित रहने की अनुज्ञा प्राप्त करने के सम्बन्ध में श्री अब्दुल बशीर खां का प्रार्थना-पत्र

श्री उपाध्यक्ष—

मेरे पास माननीय अब्दुल बशीर खां, सदस्य, विधान सभा, का एक प्रार्थना पत्र आया है जो इस प्रकार है "अध्यक्ष, विधान सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ । महोदय, कैन्सर आपरेशन तथा अन्य कष्टों के कारण मैं शैय्या पर पड़ा हूं और मैं विधान सभा के अधिवेशन में उपस्थित होने में बिलकुल असमर्थ हूं । आप से प्रार्थना है कि मुझे अवकाश प्रदान करने की कृपा करें और जब तक मैं उपस्थित न हो जाऊं तब तक के लिये मेरी उपस्थिति के संबंध में मुझे क्षमा करने की कृपा की जाय । आपका विश्वासपात्र, ह० अब्दुल बशीर खां, सदस्य विधान सभा, अलीगढ़ ।" इस संबंध में किसी को कुछ कहना है ?

कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)—

एक ही चीज है कि यह जो अनिश्चित काल के लिये इस में प्रार्थना की गयी है यह यदि निश्चित हो जाता तो ठीक रहता ।

श्री उपाध्यक्ष—

इसमें दिक्कत यह है कि वह भी बेचारे स्वयं नहीं कह सकते कि कब तक उनको आराम हो जायगा । कैंसर का आपरेशन है ।

प्रश्न यह है कि माननीय अब्दुल बशीर खां का प्रार्थना -पत्र स्वीकार किया जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।)

जिला आजमगढ़ के थाना मुबारकपुर की पुलिस द्वारा सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के प्रदर्शनकारियों पर आक्रमण कराने के सम्बन्ध में नियम ५२ के अन्तर्गत वक्तव्य

गृह उप मंत्री (श्री शिवप्रसाद गुप्त)—

प्राप्त सूचना के अनुसार दिनांक २८-२-६६ को लगभग एक डेढ़ बजे दिन में क्षेत्रीय संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, मुबारकपुर, का एक जुलूस कस्बे के निकटतम ग्राम अमिली के बाग से प्रारम्भ हुआ । यह जुलूस थानेदार तथा पुलिस के विरुद्ध प्रदर्शन कर रहा था । जब जुलूस नगर के मुख्य भाग से बाहर निकल रहा था तो रास्ते में प्रदर्शन के विषय में आपसी मतभेद के कारण ५०-६० व्यक्ति अलग होकर अपना दिया हुआ चन्दा वापस मांगने लगे । उनका कहना था कि इस प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य उन्हें यह बताया गया था कि इसके माध्यम से सस्ते गल्ले की दुकाने खुलवाने बढ़े हुए लगान में छूट दिलवाने व मंहगाई को रोकने की सरकार से मांग की जायगी। इसी में कुछ कहासुनी हुई, जिसके फलस्वरूप वापस में कुछ ईट-पत्थर भी चले । प्रदर्शन प्रबन्धकों की सूचना पर स्थानीय पुलिस ने घटना-स्थल पर पहुच कर शांति स्थापित की । जुलूस ने थाने के सामने पहुचकर थानाध्यक्ष के विरुद्ध नारे लगाये । इस प्रदर्शन के समय भी आपस में ईट-पथराव भी हुआ, परन्तु स्थिति काबू से बाहर न हुई । प्रदर्शन समाप्त हो कर नगर की ओर वापस गया और ठाकुरद्वारे के मैदान में सभा आयोजित की गई जिसमें पुलिस कर्मचारियों के विषय में विशेष प्रकार से आलोचना की गई । सभा लगभग साढे पांच बजे सायंकाल समाप्त हो गई ।

[श्री शिवप्रसाद गुप्त[

२—इस संबंध में श्री भगेलू राम, निवासी रानीपुर, थाना मुबरकपुर, ने जो अपने को इस पार्टी का सदस्य बताते हैं, एक रिपोर्ट थाना मुबारकपुर में लगभग साढ़े पांच बजे शाम लिखाई। इस रिपोर्ट में भी यह कहा गया है कि उनसे तथा कई और व्यक्तियों से चदा यह कह कर लिया गया कि २८ फरवरी को कस्बा मुबारकपुर में सस्ते गल्ले की दुकान और बढ़े हुये लगान के सिलसिले में सभा की जायगी तथा जुलूस निकाले जायेंगे। उन्होंने जब जुलूस के आयोजकों से इस बात पर चन्दा वापस मांगा कि उक्त विषयों के बारे में कुछ नहीं कहा जा रहा है तो उन पर ईट पत्थर फिकने लगे जिससे कुछ व्यक्तियों को चोटें आई। इस पर एक मुकदमा धारा १४७/३२३ भारतीय दंड विधान के अन्तर्गत कायम हुआ परन्तु विवेचना नहीं की गई क्योंकि चोटें साधारण थीं और एक ही पार्टी में आपसी मतभेद के फलस्वरूप घटना हुई थीं, इस संबंध में ४ व्यक्तियों का जिन्हें चोटें आई थीं डाक्टरी मुआइना भी कराया गया।

३—लगभग ४ बजे शाम को उप-पुलिस अधीक्षक को यह सूचना मिली कि जुलूस को कुछ व्यक्ति आगे बढ़ने से रोक रहे थे। वे लगभग साढ़े पांच बजे शाम अतिरिक्त परगना अधिकारी मोहम्मदबाद के साथ मुबारकपुर पहुंचे और जलूस के प्रबन्धकों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया परन्तु उनमें से किसी से सम्पर्क स्थापित न हो सका।

४—संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के कुछ सदस्य कुछ दिन पहले पुलिस अधीक्षक से मिले थे और उन्होंने थानाध्यक्ष मुबारकपुर के प्रति असंतोष प्रगट किया तथा २८-२-६६ को मुबारकपुर में शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन करने का आयोजन बताया था। पुलिस अधीक्षक ने उनसे अनुरोध किया था कि यदि वे कोई स्पष्ट आरोप लिखकर दें तो इस विषय में जांच करा ली जावेगी। उन्होंने पुलिस अधीक्षक से किसी प्रकार की भी शांति भंग करने की आशंका प्रकट नहीं की थी। शांति भंग की आशंका न होने के कारण कोई विशेष पुलिस का प्रबन्ध नहीं किया गया था।

५—इस समय भी किसी प्रकार की शांति भंग की आशंका प्रतीत नहीं हो रही है।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)—

मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता था। यह एक चार्ज है, जरा सुन लें। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। आपको मैंने दिखाया था कि १५ दिन पहले संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की ओर से नोटिस छपाई गयी थी कि यहां की स्थानीय पुलिस घूसखोर है, भ्रष्टाचारी है। १५ दिन बाद यह कहा जा रहा है कि एक भगेलू नाम का व्यक्ति है जो अपने को सोशलिस्ट कहता है, उसने इसका विरोध किया। जिले में काम करने का हमको मौका २० वर्षों से मिला है, वहां की पूरी जानकारी हमें है। भगेलू नाम का कोई कार्यकर्त्ता नहीं है। वह पुलिस का दलाल मालूम होता है और रिपोर्ट जाली लिखी गयी है। सत्य बात यह है कि थानेदार ने अपने साथ १०० सवा सौ गुंडों को लाठी बल्लम के साथ रख छोड़ा है। जब कहीं कोई वारदात करानी होती है यह गुंडे पुलिस की मदद करते हैं। श्रीमन्, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इसमें बहुत बड़ा जाल बट्टा है। पूरा केस यह बनाया गया है। मैं मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि वे इस पूरी घटना की सी०आई०डी० के द्वारा जांच करायें। हमारे पास घटना के फोटो मौजूद हैं। थाने के अन्दर से गुंडों ने यह सब किया। जुलूस को चारों ओर से उन्होंने घेर लिया था।

श्री उपाध्यक्ष—

आप यह सब लिख कर मंत्री जी के पास भेज दें।

श्री रामसुन्दर पांडेय—

श्रीमन्, अगर इसकी रोकथाम नहीं की गयी तो प्रदेश में खून खराबी होगी।

श्री झारखण्डेराय (जिला आजमगढ़)—

श्रीमन्, मैं यह नम्र निवेदन माननीय गृह मंत्री जी से करना चाहता हूं कि प्रदेश में इस तरह की तीसरी यह घटना है। मुबारकपुर की पुलिस एक विशेष पुलिस है। उसने

१००–१२५ गुंडों को मिला रखा है । मैं आन ओथ कहता हूं इससे पूर्व कम्युनिस्ट पार्टी के जुलूस पर भी इन्हीं गुंडों द्वारा इस प्रकार की गड़बड़ी की गयी थी । मैं यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि माननीय गृह मंत्री इस प्रकार की घटनाओं की गम्भीरता को समझें यह सारा । अभियान झूठा और गढ़ा हुआ है । पुलिस जो चाहती है इन गुंडों द्वारा करा लेती है । मेरा निवेदन है कि इसकी जांच वे सी०आई०डी० द्वारा करायें ।

१९६६–६७ के आय-व्ययक में अनुदानों के लिए मांगों पर मतदान—

अनुदान संख्या १३—कारागार (जेल)

गृह उप मंत्री (श्री शिवप्रसाद गुप्त)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैं श्री राज्यपाल की सिफारिश से यह प्रस्ताव करता हूं कि अनुदान संख्या १३—कारागार (जेल) के अन्तर्गत २,६९,१२,३०० रुपये की मांग वर्ष १९६६–६७ के लिये स्वीकार की जाय ।

श्री उपाध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि अनुदान संख्या १३—कारागार (जेल)—के अन्तर्गत २,६९,१२,३०० रुपये की मांग वर्ष १९६६–६७ के लिये स्वीकार की जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और हाथ उठाकर निम्नलिखित मतानुसार स्वीकृत हुआ—

पक्ष में—५४,

विपक्ष में—३० ।)

अनुदान संख्या ४६—राष्ट्रीय संकट से सम्बद्ध व्यय

गृह मंत्री (श्री हरगोविन्दसिंह)—

श्रीमन्, मैं श्री राज्यपाल की सिफारिश से प्रस्ताव करता हूं कि अनुदान संख्या ४६–राष्ट्रीय संकट से सम्बद्ध व्यय—के अन्तर्गत ३,८९,८४,९०० रुपये की मांग वर्ष १९६६–६७ के लिये स्वीकार की जाय ।

श्रीमन्, यह मांग जो मैंने प्रस्तुत की है यह वित्तीय वर्ष से करीब ४० लाख चार सौ रुपये अधिक है । किन-किन मदों में यह वृद्धि हुई, यह जो बजट का साहित्य माननीय सदस्य के पास है, उससे उनको स्पष्ट हो जायेगा । यों तो कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमारा देश सुलहकुन देश है । चीन के आक्रमण के पूर्व हम यह समझते थे और सारा देश यह समझता था चूंकि हम किसी देश पर अपना राज्य स्थापित करना नहीं चाहते, अपना विस्तार नहीं करना चाहते, हम अपने ही संकटों में, अपनी ही कठिनाईयों में व्यस्त हैं, इसलिये अकारण कोई दूसरा देश हमारे ऊपर आक्रमण नहीं करेगा । लेकिन चीन के आक्रमण से यह सिद्ध हुआ और हमको यह सबक मिला कि चाहे हम अपने देश में शान्ति से ही क्यों न रहना चाहते हों, किसी देश पर अपने विचार, अपना राज्य थोपना भी नहीं चाहते हों, लेकिन अपने देश में शान्ति से रहने के लिये अब शायद यह आवश्यकता हुई कि हम सदैव ही किसी ऐसी स्थिति के लिये तैयार रहें और उसके पश्चात् यह तय हुआ कि हम इस बात की तैयारी सदैव ही अपने देश में रखें कि यदि कोई बाहरी आक्रमण हो जाय तो हम अपनी रक्षा कर सकें ।

आज की लड़ाई पहली लड़ाइयों से दूसरे तरह की होती है । पहले तो युद्धकाल में या जब लड़ाई होती थी जहां फौज लड़ती थी वहीं हार जीत का फैसला हो जाता था । लेकिन आज की लड़ाई, विज्ञान के युग में, ऐसी हो गई है कि देश के हर नागरिक को, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो या जहां भी काम करता हो, उसे सैनिक रूप से लड़ने के लिये, अपने देश की सीमाओं की रक्षा करने के लिये, सदैव तैयार रहना पड़ता है । जो हमारे देश की भौगोलिक स्थिति है उसे देखते हुये अब सदैव ही शायद हमें इस बात के लिये तैयार रहना पड़ेगा कि हम अपनी आंतरिक सुरक्षा

[श्री हरगोविन्दसिंह]

के लिये और दूसरे देशों के आक्रमण के खिलाफ तैयार रहें । इसीलिये यह एक दूसरा डिपार्टमेन्ट, या विभाग, कहिये, स्थापित हुआ है । इसको आप दो बड़े बड़े भागों में विभाजित कर सकते हैं, एक तो आन्तरिक सुरक्षा और दूसरा देश में शान्ति कायम करने के लिये । इसमें एक सिविल डिफैन्स जिसे अंग्रेजी में कहते हैं, और दूसरा होम गार्ड्स का निर्माण इसमें किया गया है । यूं तो हमारे प्रान्त में होम गार्ड्स के निर्माण के पूर्व एक प्रान्तीय रक्षा दल था और जब गवर्नमेन्ट आफ इंडिया की ओर से यह कहा गया कि आप अपने प्रान्त में होम गार्ड का भी निर्माण करें, तो हमारे प्रान्त की ओर से ऐसा आग्रह किया गया कि हमारे प्रान्त में प्रान्तीय रक्षा दल है जो कार्य भी कर रहा है और जो सुचारू रूप से संगठित भी है और इसलिये यदि भारत सरकार हमको मजबूर न करे तो हम होम गार्ड जैसी संस्था अलग न बनावें और अपने प्रान्तीय रक्षा दल को सुसंगठित करें और उसी से वे सब काम लें जो होम गार्ड के लिये सरकार द्वारा निर्धारित हो । लेकिन गवर्नमेन्ट आफ इंडिया ने आग्रह किया और यह कहा कि चूंकि सारे देश में ही होम गार्ड नाम की संस्था बनाई जा रही है इसलिये यह आवश्यक है कि इस प्रान्त में भी होम गार्ड नाम की संस्था बनाई जाय । यहां प्रान्तीय रक्षा दल का एक कानून था और उसके अन्तर्गत प्रान्तीय रक्षक दल का संगठन था । लेकिपे जैसा मैंने निवेदन किया, इन कारणों से एक अलग होम गार्ड की संस्था बनानी पड़ी और उसके लिये निर्धारित संख्या भी भारत सरकार द्वारा निश्चित हुई । जो निर्धारित संख्या थी उसमें करीब करीब बहुत थोड़ी ही कम है और वह निर्धारित संख्या हमने पूरी भी कर ली है ।

मुझे इस बात की खुशी है कि आज हमारी होम गार्ड की संस्था एक सुसंगठित संस्था है और पिछले आपत्तिकाल में उसने बड़े सराहनीय काम किये हैं । हमारे होम गार्ड के ८ सिपाही इसमें काम भी आये हैं । आपत्तिकाल में जिस प्रकार उन्होंने सुरक्षा के काम किये हैं, जैसे रेलों की पटरियों की देखभाल और अन्य ऐसे ही कार्य, वे सचमुच सराहनीय रहे हैं और हम इस अवसर पर होम गार्ड संस्था को बधाई देना चाहते हैं कि उनसे जो आशा की जाती थी उसकी उन्होंने पूर्ति की । इन थोड़े से शब्दों के साथ, श्रीमन्, मैं यह अनुदान सदन के सामने रखता हूं ।

श्री होरीलाल यादव (जिला इटावा)—

पी० आर० डी० को समाप्त करेंगे या होम गार्ड में मर्ज करेंगे ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया ।)

*कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से कटौती का प्रस्ताव उपस्थित करता हूं कि सम्पूर्ण अनुदान संख्या ४६ के अधीन मांग की राशि घटाकर १ रुपया कर दी जाय ।

कमी करने का उद्देश्य—विभागीय नीति की आलोचना करना तथा सुझाव देना ।

श्रीमान् जी, इस कटौती के प्रस्ताव को उपस्थित करने का कारण यह है कि यह विभाग जो नया बनाया जा रहा है अभी तक अस्थायी था और अब इसे स्थायी किया जा रहा है । इसकी आवश्यकता क्या है ? जैसा अभी माननीय गृह मंत्री ने कहा, चीनी हमले के समय आन्तरिक सुरक्षा और गृह सुरक्षा के लिये आवश्यकता पड़ी और एक विभाग निर्माण किया गया । माना हमने ठीक है कि जिस समय आवश्यकता पड़ी, निर्माण हुआ । परन्तु २ साल सरकार सोती रही और जब पाकिस्तान का हमला हुआ तो यह चेती और फिर इसका निर्माण हुआ । यह कहना कि सरकार जागरूक है, बिलकुल गलत बात है और यह कहना कि नागरिक सुरक्षा और गृह सुरक्षा की आवश्यकता पड़ेगी, कम से कम जब तक कांग्रेस के हाथ में हुकूमत है, यह असम्भव है । कारण हैं, श्रीमान् जी ! हर मर्तबा जब कोई हमला होता है तो सरकार दुहाई देने लगती है

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

कि हमला हो गया, हमला हो गया, और देश को तैयार होना चाहिये । दुनिया भर की बातें कही जाती हैं । यहां तक कि घर की स्त्रियों के गहने तक उस वक्त लिये जाते हैं और लोग अपने प्राणपण से जुटकर उस युद्ध को संचालित करते हैं । परन्तु बाद में क्या होता है ? यह जानने-वाली चीज है । मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या हमारी सरकार लड़ने के लिये तैयार है, क्या हमारी सरकार अपनी उस भूमि को छुड़ाने के लिये तैयार है जिस पर चीन ने कब्जा कर रखा है, आज से नहीं, सन् ६२ से ? क्या माननीय गृह मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि सरकार अपनी जमीन छुड़ाने के लिये लड़ेगी ?

श्री उपाध्यक्ष—

यह तो सेन्टर की बात है ।

कुंवर श्रीपालसिंह—

खर्चा तो यहां का हो रहा है, मगर बात सेन्टर की है। उन्होंने कहा भी यह सुरक्षा का विषय है और आक्रमण के समय ही यह काम में आता है । जब आक्रमण होगा तब इसकी आवश्यकता होगी । आक्रमण जब भी होगा बाहर से होगा और जब बाहर होगा तो हमारी सीमा में होगा । यह सीमा सेन्टर का विषय है । उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे चेता दिया क्योंकि यह हमारा विषय नहीं है, इसलिये इस अनुदान को यहां पर उपस्थित ही नहीं होना चाहिये ।

श्री उपाध्यक्ष—

ऐसी बात नहीं है । आन्तरिक सुरक्षा के लिये यहां पर हो सकता है ।

कुंवर श्रीपालसिंह—

मैं आन्तरिक सुरक्षा पर ही बोल रहा हूं । गृह सुरक्षा की बात बाद में कहूंगा । यदि यहां आन्तरिक सुरक्षा के लिये अनुदान आ सकता है जो कि केन्द्र का विषय है तो हमें भी यह अधिकार है कि हम आलोचना करें और इस आधार पर कि वह हमारी सीमा है ।

सबसे पहले मंत्री जी से मैं यह जानना चाहूंगा कि यहां भी उसी दल की सरकार है जिस दल की सरकार दिल्ली में है, इसलिये क्या यह सरकार अपनी भूमि छुड़ाने के लिये किसी से लड़ने को तैयार है । यदि नहीं, तो आन्तरिक सुरक्षा की उसको कोई आवश्यकता नहीं है । उसकी तबियत तो लड़ने की है ही नहीं । उसकी तबियत की हालत यह है कि जो ले गया सो ले गया । इस पर एक छोटा सा दृष्टान्त मैं देना चाहता हूं । एक समय में एक राजा साहब लावलद मरने लगे । मंत्री ने कहा कि आप लावलद मर रहे हैं, गद्दी पर कौन बैठेगा ? राजा बोला, जो हमारी अर्थी के सामने सबसे पहले आ जाय । अर्थी निकली और एक झोला झंडा वाले साहब उसके सामने आ गये । उनको पकड़ कर राजा बना दिया गया । जब यह खबर आसपास के राजाओं को मालूम हुई तो उनमें से एक राजा ने सीमा पर हमला कर दिया । मंत्री ने राजा से कहा कि फलां राजा ने सीमा पर हमला कर दिया है । राजा ने नक्शा मंगवाया और केवल इतना ही कहा कि केवल एक कोना ही तो उसने लिया है। ले जाने दो, शान्त रहो, आनन्द से रहो, बच्चा झगड़ा न करो । इसके बाद दूसरे राजा ने कब्जा कर लिया । फिर राजा ने वही जवाब दिया शान्त रहो, आनन्द से रहो, बच्चा झगड़ा न करो । इसी प्रकार से हमारे देश की भूमि का बटवारा किया जा रहा है, इसी प्रकार से जब हमारे देश की भूमि पर कब्जा हो जाता है तो हमारे हृदय में भी रंचक मात्र भी पीड़ा नही होती । इसलिये मैं यह नहीं मान सकता कि यह सरकार किसी से लड़ने को तैयार है । चीन ने जब हमारी भूमि पर कब्जा किया था तो कांग्रेस के ही प्रधान मंत्री थे । एक मर्तबा नहीं, ५० मर्तबा उन्होंने अपने ब्याख्यानों में कहा कि हम अपने देश की इंच इंच भूमि छुड़ा कर ही दम लेंगे । दम आज भी ले रहे हैं या नहीं ले रहे ? दम ही नहीं ले रहे हैं, अब तो पता नहीं क्या क्या ले रहे हैं । मगर हमारी इंच इंच भमि जो भारत की थी आज भी चीन के कब्जे में है । चीन ने जबरदस्ती उस पर कब्जा जमा रखा है, किसी की रास से नहीं । भारत सरकार की बात तो छोड़िये, तकलाकोट तो अपने प्रदेश का ही

[कुंवर श्रीपालसिंह]

था, उस पर चीन का कब्जा है । यह कब्जा सन् ६२ से है । इसके अलावा लोपूलेक से बारा-होती आकर आज भी वे लोग जब चाहे तब पिकनिक कर जाते हैं । क्या कर रही है हमारी सरकार ? जब लड़ना नहीं है और पहले से ही तय कर लिया गया है कि हम लड़ेंगे नहीं और हम क्या बनेंगे शान्ति के पैगम्बर, हमारे यहां शान्ति के पैगम्बर नेता बनेंगे देश चाहे दिगम्बर बन जाय, कोई परवाह नहीं । हमने शान्ति के लिये कुछ थोड़ा बहुत न्योछावर नहीं किया है । अभी रिपोर्ट निकली थी इसी पाकिस्तान की लड़ाई के विषय में ३,५०० ललनाओं का सिंदूर धुला है और उस सिंदूर की लाली से रावी का जल लाल हो गया लेकिन इसका परिणाम क्या हुआ ? हम जहां के तहां पहुंच गय । हाजीपीर, कारगिल और तिथवल जिन पर कब्जे के लिये प्राणों की बाजी रणबांकुरों ने लगाई थी और इन पर कब्जा कर के माता के मस्तक को ऊंचा किया था उन इलाकों को इतनी आसानी के साथ छोड़ दिया गया जिस की कोई हद नहीं है । इतना ही नहीं बराबर यह कहा जाता रहा है कि कश्मीर के मामले में किसी प्रकार का वादविवाद करना हमें स्वीकार न होगा और कश्मीर हमारे देश का अविभाज्य अंग है इसलिये उसके विषय में किसी प्रकार की बातचीत करने की आवश्यकता नहीं है लेकिन अभी-अभी हमारे भारत के विदेश मंत्री रावलपिंडी से लौट कर आये हैं उन्होंने अपने वक्तव्य में यह भी कह दिया है कि कश्मीर के बारे में भी अगर अब बात करनी होगी तो उसके लिये भी हम तैयार हैं । यह है सुरक्षा का तरीका जिसके लिये आप चाहते हैं कि लोग हर एक प्रदेश में और हर एक घर में तैयार रहें । मैं भी मानता हूं कि तैयारी की आवश्यकता है लेकिन अपनी जनता को तैयार करने से पहले भारत सरकार को तैयार होना चाहिये । मंत्री जी भारत सरकार को तैयार करें और मरदाना अस्पताल खोलें, जनाना अस्पताल न खोलें .....

माल मंत्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)—

आप कहां जायेंगे फिर ?

कुंवर श्रीपालसिंह—

बिलकुल सही कहा, मैं ठाकुर साहब का कृतज्ञ हूं कि उन्होंने अपने को, जनाने अस्पताल में रखना मुनासिब समझा, मरदाने अस्पताल की तो मर्दों को ही जरूरत पड़ेगी । अगर सीरियसली आप सोचते हैं और यदि आपके मन में वास्तव में पीड़ा है और आप समझते हैं कि हमें देश की एक एक इंच जमीन के लिये लड़ना पड़ेगा, तो जैसा कि माननीय गृह मंत्री जी ने कहा, १७-१८ साल देश को स्वतंत्र हुये हो गये अभी तक आप ने यह बात क्यों नहीं सोची थी ? स्वयं गृह मंत्री जी ने स्पष्ट कहा है कि हम यह समझते थे कि हम पर कोई आक्रमण नहीं करेगा । क्यों ऐसा समझते थे ? कोई कारण इसका है या केवल इसलिये कि आप शान्ति के पैगम्बर हैं इसलिये आप पर कोई आक्रमण नहीं करेगा या केवल इसलिये कि आप जहां जाते हैं वहां सफेद कबूतर उड़ाते हैं और समझते हैं कि हमारे ऊपर कौन आक्रमण करेगा ? यदि आपने ऐसा सोचा है तो आपकी भारी गलती है । भारत जैसा साधनसम्पन्न देश और समस्त सामग्री में सम्पन्न देश है उसके ऊपर कोई भविष्य में आक्रमण नहीं करेगा, ऐसा सोच लेना कहां का सुरक्षात्मक विचार है ? जब आपको लड़ना भी नहीं है और आप पर कोई आक्रमण भी नहीं करेगा तो फिर इस विभाग को बनाने की क्या जरूरत है ।

नागरिक सुरक्षा की भी बात कही गई, गृह सुरक्षा और नागरिक सुरक्षा । गृह सुरक्षा के लिये यह आवश्यक है कि जिन तत्वों के द्वारा हमारे देश के हितों को हानि पहुंचाई जा सकती है उनके ऊपर दृष्टि रखें । अब देखना यह है कि सरकार की दृष्टि इस विषय कहां तक पहुंची है और किस हद तक उन्होंने उसको देखा है । श्रीमान् जी, सन् १९५२ में डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने लोक सभा में स्पष्ट शब्दोंमें कहा था कि तिब्बत के बाद चीन भारत की ओर कूच करने की योजना बना रहा है तभी यदि कांग्रेस 'असम्भव' 'असम्भव' का नारा न लगा कर वास्तविकता को परख लेती तो कदाचित यह चीन का

हमला न हुआ होता। जनरल करिअप्पा ने सन् १९५२ में कहा था, तिब्बत पर जब चीन का हमला हुआ उस समय कहा था, कि अगर इसको इस समय नहीं रोक लेते हैं तो फिर कभी आप नहीं रोक सकते। परन्तु उस समय क्यों नहीं उसे रोका गया, क्या कारण है ? केवल यही कि हमारे ऊपर कोई हमला नहीं करेगा। हमने अपना बफर स्टेट को छोड़ दिया, तिब्बत को जाने दिया, तो दलाई लामा को यहां क्यों रख लिया? एक तरफ तो चीन को खुश करने के लिये तिब्बत उस को भेंट कर दिया और दूसरी तरफ दलाई लामा को रख करके चीन से झगड़ा भी मोल लिया गया। चीन से झगड़ा मोल लेने के बाद क्या हुआ वह देखने वाली चीज है। मिलिटरी के जनरल्स की पदोन्नति रिश्तेदारी के आधार पर होने लगी। उस का परिणाम क्या हुआ ? गोली दगते ही भाग पड़े।

श्री उपाध्यक्ष—

मैं समझता हूं कि जिन बातों से प्रान्तीय सरकार का सम्बन्ध नहीं है उन बातों को कहने से क्या फायदा।

कुंवर श्रीपाल सिंह—

मैंने पहले ही कह दिया कि यह सरकार इस अनुदान को प्रस्तुत करने के लिये सक्षम नहीं है क्योंकि जब सेन्टर का विषय है सीमा.....

श्री उपाध्यक्ष—

आन्तरिक सुरक्षा का विषय तो प्रान्त का है।

कुंवर श्रीपालसिंह—

माननीय गृह मंत्री जी सीमा निर्धारित कर दें कि किस सीमा तक सेन्टर का है और किस सीमा तक अपने प्रदेश का है, तो मैं उसी सीमा के अन्दर बात करूं।

श्री उपाध्यक्ष—

जहां तक आन्तरिक सुरक्षा का ताल्लुक है, वह तो प्रान्त का विषय है और बाकी विदेश और डिफेन्स का जहां तक ताल्लुक है वह केन्द्र का विषय है।

कुंवर श्रीपालसिंह—

मैं विदेश नीति की बात नहीं कर रहा हूं। मैं केवल उस आधार पर बहस कर रहा हूं जिस आधार पर नागरिक सुरक्षा और गृह सुरक्षा की आवश्यकता पड़े। क्योंकि गृह मंत्री जी ने शुरू में ही यह कहा है और पुस्तक में भी लिखा है, प्रथम पैराग्राफ में, कि चीनी आक्रमण और पाकिस्तानी हमले.....

श्री उपाध्यक्ष—

उसी तरह से आप भी रेफर कर सकते हैं। लेकिन जिस बात के लिये वह जिम्मेदार नहीं हैं उसके लिये इस सरकार को तो जिम्मेदार नहीं बना सकते।

कुंवर श्रीपालसिंह—

जब यह हालत है हमारी उस सरकार की जिस सरकार के जिम्मे हमारी सीमायें हैं तो अब क्या एक मिनट भी हम यह नहीं समझ सकते हैं कि हम सुरक्षित हैं। आज तो चीन ने आक्रमण किया है, पाकिस्तान ने आक्रमण किया है, तीन सौ आदमी नागा लैंड के अपना नया प्रान्त बनवा सकते हैं, मीजो लैंड वाले हमला करके हमारी पुलिस और सेना के लोगों को उठा कर ले जा सकते हैं, दो, तीन सौ आदमियों से सुलह करने के लिये जो सरकार घुटने टेकने के लिये तैयार है उस की छत्रछाया में रह कर हम नागरिक सुरक्षा की क्या बात कर सकते हैं ? पंजाबी सूबा कल ही बनकर तैयार हो गया।

श्री उपाध्यक्ष—

एक प्वाइंट पर सब बातें नहीं कही जा सकतीं और केन्द्र की पूरी पालिसी को आप यहां पर डिसकस नहीं कर सकते ।

कुंवर श्री पालसिंह—

मैं उसे छोड़ देता हूं । पार्लियामेंट के अधीन ही यह विषय है और यह विधान सभा इसके लिये सक्षम नहीं है क्योंकि सीमाओं से ईसका सम्बन्ध है ।

दूसरी चीज जो बतलाई गयी है वह यह कि होमगार्डों द्वारा सीमाओं की सुरक्षा का काम भी लिया जाता है । सन् ६२ के बाद यह संस्था बनी है । मैं एक चीज निवेदन कर दूं कि यह भी आन्तरिक सुरक्षा की चीज नहीं है । इसी आदरणीय सदन के अन्दर पाकिस्तानी आक्रमण के समय एक प्रश्न किया गया था कि पाकिस्तान का हवाई जहाज दिल्ली के ऊपर से उड़कर आया और मार कर गिराया गया । वह हवाई जहाज गाजियाबाद के आसपास गिरा और उसके ऊपर जन संघ की तरफ से प्रश्न किये गये थे । उस हवाई जहाज में जो लोग सवार थे उनकी लाशें क्या हुईं, जिन्दा वे पकड़े गये या नहीं ? सरकार उसे टाल गयी और उत्तर दिया यह कि जनहित में इसको बतलाना उचित नहीं है । अब वह परिस्थितियां समाप्त हो गयीं । अब तो पाकिस्तान के साथ फिर हाथ मिल गया और पाकिस्तान के सामने तश्तरी में सेब के समान कश्मीर को देने को आप तैयार हो गये हैं, तो अब क्या आप बतलायेंगे कि उसमें लाशें मिली थीं या नहीं ? जिन्दा आदमी मिले थे या कोई नहीं मिला था ? यदि लाशें थीं तो वे कहां गयीं यदि जिन्दा आदमी छतरियों से उतरे थे तो कितनों को गृह मंत्री के इस विभाग अथवा पुलिस विभाग ने पकड़ा ? यदि नहीं पकड़ा तो यह आन्तरिक सुरक्षा और गृह सुरक्षा के नाम पर अपव्यय कृपया बन्द कीजिये । मैं अत्यन्त विश्वस्त सूचना के आधार पर यह बतलाना चाहता हूं कि उसी हवाई जहाज में नम्बर ३ बिल्लौच रेजीमेंट के कप्तान ३ दिन लखनऊ में दारुलशफा में रहे हैं ।

एक सदस्य—

आपने बतलाया नहीं ?

कुंवर श्री पालसिंह—

उस समय पता होता तो हम बतलाने नहीं आते, उसकी लाश बतलाती और जहां भी हमने देखा है वहीं बतलाया है, उस पाकिस्तानी की लाश ने बतलाया है कि हिन्दुस्तानी उसके सीने पर चढ़ गया है । जिस समय हमारी सेनायें जूझ रही थीं पंजाब की सीमा पर मैं गर्व के साथ निवेदन कर सकता हूं कि जन संघ के स्वयंसेवकों तथा सदस्यों ने मोर्चे पर जा कर जवानों को खन्दकों में चाय पिलाई है, खाना खिलाया है अपने प्राणों की बाजी लगा कर । हमारी सरकार यह काम हमारे जिम्मे दे दें तो हमको पुलिस की जरूरत नहीं है । हमारे पास हैं आदमी, आप अधिकार दीजिये, हम पकड़ कर देते हैं । उसके बाद आप इन्क्वायरी करा कर देख लीजिये कि सही है या गलत । अभी कल ही जब नायर साहब ने पुलिस विभाग पर बोलते समय कहा था—वह किस्सा दूसरा है, वह कराची कारपोरेशन के अधिकारी थे जो यहां आकर टिके थे और जिनके बारे में एक माननीय सदस्य ने शायद खड़े हो कर यह कहा—मैं तो यहां था नहीं—कि डी०एम० से दुश्मनी थी इसलिये उन्होंने कह दिया कि ये पाकिस्तान के हैं । कितनी गलत बात है ? यदि हमारे इसी सदन के एक सदस्य पाकिस्तान से इस तरीके से संबधित हों कि उनके यहां कोई पाकस्तानी आकर रुक सकता है और उसको ले जाकर डिफेन्स फैक्टरीज दिखायी जा सकती हैं तो बहुत बुरा है । और उससे भी बहुत बुरा यह है कि अगर कोई डी० एम० किसी एक माननीय सदस्य के लिये झूठी बात कह सकता हो । क्या गृह मंत्री जी सी० आई० डी० के द्वारा जांच करायेंगे कि यह सच है या गलत है ? सी० आई० डी० के द्वारा न सही, जो मौजूदा डी० एम० हैं उनसे पूछेंगे कि यह बात सही है या गलत है ? कहने का तात्पर्य यह है कि नागरिक सुरक्षा केवल बजट उपस्थित कर देने से और कुछ थोड़े से रुपये ले लेने से और उस रुपये के द्वारा अपंगु लोगों को काम में लगा देने से ही नहीं होने वाली है ।

श्रीमान् जी, मैं आपसे क्या निवेदन करूं, जितने कमांडेंट मुकर्रर किये गये हैं, ६० साल के ऊपर वाले रिटायर्ड लोग हैं, कुबड़ी लेकर चलने वाले। उनसे कौन सी नागरिक सुरक्षा होगी? यदि आक्रमण हुआ और उसमें बम गिरे और कुछ लोग घायल हुये तो ये कुबड़ी वाले क्या करेंगे? मगर वे कमांडेंट बनाये गये हैं। जवानों के लिये क्या है कि यदि हमारी सरकार का कोई भी मुलाजिम होम गार्ड में किसी पोस्ट पर है तो उसकी पदोन्नति नहीं हो सकती, आजीवन उसी पद पर रहेगा क्योंकि वह सरकारी मुलाजिम है। इन्वेलिड होकर अगर रिटायर हो जाय और तब होम गार्ड में जाय तो उसकी तरक्की हो जायगी और जितनी सुविधायें होमगार्ड की हैं वे भी सब मिलेंगी। इसलिये इसको नागरिक सुरक्षा नाम न देकर वृद्धावस्था की पेन्शन बना दिया जाय कि इन्वैलिड लोगों के कमाने का एक जरिया यह भी है, पकड़ा दो एक डाल, वह भी पकड़े लटके रहें चिमागादड़ की तरह। एक चिमगादड़ के यहां एक मेहमान आये हैं और लगे चें चें चिल्लाने। तो एक साहब कहते हैं कि चिल्लाते क्यों हो, एक डाल पकड़ कर तुम भी लटक जाओ। तो यह एक डाल निकाल दी गयी जिसको पकड़ कर वे लोग लटक जांय और काम उनका चलता रहे। वरना अगर वास्तव में इसमें कुछ दम रखना है तो इसमें जवानों को भरती करना चाहिये जिससे सुरक्षा का कुछ काम हो सके।

एक और चीज बड़े मजे की है। चीन का आक्रमण हुआ। गृह मंत्री जी ने कहा कि चीन ने आक्रमण कर दिया, हमें ऐसी आशा नहीं थी कि चीन हम पर आक्रमण करेगा। और इसी के लिये इस विभाग के बनाने की आवश्यकता हुई और इसका नाम रखा गया अंतरिम सुरक्षा और गृह सुरक्षा। लेकिन क्या हो रहा है? चीन के समर्थक आज खुलासा सरकार के सामने संस्था बनाकर बैठे हुये हैं। उन्होंने इतना कर दिया है कि जिस कम्यूनिस्ट पार्टी के लिये हमेशा यह कहा जाता था कि इनमें कोई विभेद नहीं है। रूस वाले कहते हैं कि चीन वाले हमारे भाई हैं और चीन वाले कहते हैं कि रूस वाले हमारे भाई हैं। लेकिन इसमें भी दरार पड़ गई और रूस वाले अलग हो गये और चीन वाले अलग हो गये। चीन के नाम से संस्था अलग बनी तो सरकार ने उसको क्यों नहीं बैन किया? २४ अक्तूबर, १९६२ को कम्यूनिस्ट नेता श्री ज्योति बसु ने घोषणा कर दी कि जो चीन को आक्रमणकारी कहता है वह मूर्ख है और स्पष्ट कर दिया कि चीन समाजवादी है इसलिये वह आक्रमण कर ही नहीं सकता। इससे ज्यादा स्पष्ट कहने वाला और कोई मिलेगा नहीं। आपने उनको क्यों नहीं पकड़ा? आपने प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाया? जो देश के प्रति इस तरह की भावना प्रगट कर सकता है खुले आम, उसका पृष्ठ पोषण करना क्या नागरिक सुरक्षा का विषय है? यदि इस तरह की विचारधारा वाले लोग देश में मौजूद रह सकते हैं उस समय भी जबकि देश के ऊपर विदेशी आक्रमण मौजूद हो तो फिर गृह सुरक्षा या नागरिक सुरक्षा केवल मखौल मात्र या मजाक मात्र है। मैं तो यही कहूंगा कि कुछ लोगों को लटकाने के लिये एक नई डाल बढ़ा दी गई है।

सरकारी कर्मचारियों के लिये कहा जायेगा तो सरकार कहेगी कि हमारे पास पैसा नहीं है। माननीय जयराम वर्मा ने कह दिया कि हमारे पास कुछ नहीं है, हम कहां से दे दें? मगर नई डाल लटकाने के लिये जैसा मंत्री जी ने कहा कि ४० लाख रुपये को और बढ़ा दिया गया। जब कि पाकिस्तान से लड़ाई होगी नहीं और चीन ने जो हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया है उसको हम छुड़ा नहीं सकते हैं फिर लड़ाई कौन सी होगी? क्या लंका हमला करेगा या बर्मा हमला करेगा? फिर किससे लड़ाई के लिये तैयारी कर रहे हैं? जिस भारतवर्ष को सोने की चिड़िया कहा जाता था, जिस भारतवर्ष में ऐसे ऐसे लोग पैदा हुये हैं जिन्होंने संसार को भी जन दिया, आज उनके नाम पर इटली आदि देशों में, स्कूलों में, चर्च में और चौराहों पर तख्ती लगा दी गई है कि भारत के भुखमरों के लिये अन्न दो। लेकिन यहां चमगादड़ों को लटकाने के लिये डाल बढ़ा दी गई है। श्रीमान् जी, एक चीज और मैं निवेदन करना चाहता हूं। मैं क्या करूं? दुर्भाग्य यह है कि यह विषय सीधे सीधे सेंटर से संबंधित हैं। इसीलिये मैंने निवेदन किया कि माननीय गृह मंत्री सीमा बतला दें कि यह हमारे अन्दर है और इसके बाहर दिल्ली सरकार के हाथ में है। तो मैं उसके अन्दर रहूं।

श्री उपाध्यक्ष—

यह तो नहीं माना जा सकता कि कुंवर साहब यह नहीं जानते ।

कुंवर श्रीपालसिंह—

श्रीमान जी, यदि आप देखें तो इन हमलों की जिम्मेदारी किस पर है ? पाकिस्तान जो रोजाना गरज रहा है, ताशकंद समझौते के बाद भी कहता है कि कश्मीर के मामले में बात नहीं मानी तो कोई बात हुई नहीं । यहां अपनी पीठ ठोंक कर कह देते हैं कि हमने पाकिस्तान को मना लिया । अब हमारे ऊपर हमला नहीं करेगा । चीन ने जो ले लिया उससे सरोकार नहीं । बड़े बड़े विचारक, राजनीतिज्ञ लोग, जयप्रकाशनारायण खुलासा कहते हैं कि चीन ने जो ले लिया उसे छोड़िए । मीजों वालों को मीजोलैंड, नागा वालों को नागालैंड दे दें, चुपचाप बैठे रहें । तो मैं यह निवेदन कर रहा था, गृह सुरक्षा के बारे में एक चीज और बताऊं । आपके यहीं के सुरक्षा विभाग के उच्चाधिकारी महोदय के घर में ट्रांस्मीटर लगा है । मैं नाम नहीं बताऊंगा । (व्यवधान) हमें पुलिस का अधिकार दे दीजिये कल पकड़ कर दिखला दें । इतना ही हम कह रहे हैं यह बड़ी हिम्मत की चीज हैं वरना मंत्रियों के पीछे कुर्सी छोड़ते ही तीन तीन पिस्तौल अर्दली लगा दिये जाते हैं कि उनकी कोई जान न ले ले । लेकिन भाबा जैसे रत्न जिस पर देश को गर्व हो सकता है उसको थर्ड क्लास में भर कर ११७ आदमियों के साथ भेज दिया जाता है । इसको कम हिम्मती मत समझिए । उन लोगों के लिये कहा जा रहा है जो किसी समय भी हमला कर सकते हैं किन्तु रंचक मात्र फिक्र नहीं है । अपने ऊपर हमला करने वाले के लिये भगवान ने दो हाथ दिये हैं, धमनियों में रक्त भी है । उससे निपट लेने की हिम्मत न होती तो कहते ही नहीं । तो उच्चाधिकारी के घर में ट्रांसमिटर लगा हुआ है जिसके द्वारा बराबर खबरें दी जाती हैं । (कई आवाजें—नाम बतलाइये) एक दो नहीं ११ केसेज मैंने स्वयं लिख कर दिये हैं गृह मंत्री को । मैं जानता हूं कि गृह मंत्री ने जांच करवायी है, और जांच में वह चीजें सही पायी गयी हैं । मगर किसी को पकड़ नहीं पाये । क्यों ? यह भी मैं जानता हूं । सारी चीज का मुझे पता है । यह मैं श्रीमन्, गप नहीं उड़ा रहा हूं न मेरी आदत है ऐसा करने की । जो मुझे सूचना है वह मैं आपके सामने दे रहा हूं । जिस प्रकार से गृह मंत्री जैसा जिम्मेदार आदमी सदन में कभी कभी, इनके जो विभाग वाले हैं इनसे गलत सूचना पढ़वा देते हैं और उसके बाद उनको माफी मांगनी पड़ती है, उस प्रकार से हमारा सूचना विभाग गलत नहीं हो सकता, यह मुझे पूरा यकीन है । क्यों नहीं पकड़ पाए ? एक जगह जहां ट्रांसमीटर लगा हुआ था । उसकी जांच के लिये पकड़ के लिये नियुक्ति हुई एक सिपाही की कि देखो किस वक्त वहां से निकलता है । कैसे बात होती है ? तो क्या हुआ ? २ बजे दिन में सिपाही साहब मय वरदी के उस मकान के सामने खटिया डाल कर लेट गये । तीन दिन तक वहीं खटिया डाले पड़े रहे । अब आप ही सोचिये कि जो ट्रांसमीटर से बात करता है चाहे पाकिस्तान से हो या चीन से, वह इतना मूर्ख नहीं हो सकता कि वह यह न सोच सके कि हमारे मकान के सामने जो लेटा हुआ है वह क्यों लेटा हुआ है वह पुलिस वाला और अपनी वरदी में । होता क्या है....

श्री उपाध्यक्ष—

आप अपने समय का ध्यान रखें, ४२ मिनट हो चुके हैं ।

कुंवर श्रीपालसिंह—

अभी कितना समय मेरा और है ? मैं १० मिनट और बोल लूं ।

श्री उपाध्यक्ष—

हां, ठीक है, १० मिनट बोल लीजिये ।

कुंवर श्रीपालसिंह—

४ बजे सबेरे जब वह पुलिस वाला जागता है और शौच इत्यादि से निवृत्त होने के लिये जाता है तो उस समय, श्रीमन् जी, ट्रांसमीटर लाद कर दूसरी जगह पहुंचा दिया जाता है । उसकी भी मैंने सूचना दे दी कि फलां जगह अब वह पहुंच गया है । लेकिन वहां भी ऐसा ही हुआ होगा ।

एक सदस्य—

और आपने उसे पकड़ा क्यों नहीं जब वह लिये जा रहा था।

कुंवर श्रीपालसिंह—

मुझे शक्ति दीजिये, मैं करके दिखा दूंगा। श्रीमन्, अभी-अभी कुम्भ मेला हुआ। वहां इस सरकार और भारत सरकार के सूचना विभाग के खेमे लगे हुये थे। लाल रोड या ऐसा कुछ नाम है उस जगह का। वहां पर हर प्रकार का खुला हुआभ्रष्टाचार हुआ। श्री बृजलाल कुमार भटनागर उसके इंचार्ज थे, उनका जब खेमा वहां से निकला तो उसमें से ३०० खाली शराब की बोतलें निकलीं और वह निकाल कर बेची गयीं। उनका काम क्या था? एक तरफ तो रामायण का पाठ हो रहा था और दूसरी तरफ लड़कियों को पकड़ पकड़ कर बेइज्जत किया जा रहा था। वहां पर एक ६-७ साल की लकड़ी जो अपने बाप से बिछुड़ गई, उसके साथ सूचना विभाग के एक साहब नजीर अली ने बलात्कार किया। बहां बाप पहुंचता है और खेमे के सामने पहुंचता है। उसने और वहां पर के कई अधिकारी थे जिन्होंने खून से लथपथ उस बेचारी लड़की को पड़े हुए देखा। गृह मंत्री जी स्वयं अपनी पुलिस से पूछें कि उन्होंने उसे क्यों नहीं पकड़ा। पुलिस पकड़ना चाहती थी, लेकिन पुलिस करे क्या? असली जगह जो मैं निवेदन कर रहा था वह यही है कि गृहमंत्री को पता नहीं होगा लेकिन किसी मंत्री साहब ने कहा कि मत पकड़ो और वह छूट गये और उन नादिर हुसेन को हज करने केलिये टिकट मिल गया। यही नहीं, उत्तर प्रदेश सरकार के कर्मचारी हैं जिन्होंने उसे देखा उनके नाम मैं देता हूं, यदि सरकार में हिम्मत है तो पूछिये इन लोगों से कि इन्होंने क्या देखा था? इनके नाम हैं श्री विजय बहादुर सिंह, श्री चन्द्रमौलि अवस्थी, श्री प्रेमकुमार अष्ठाना और श्री सुरेशचन्द्र जोशी, सहायक निदेशक सूचना विभाग ये तो उत्तर प्रदेश सरकार के कर्मचारी थे जिन्होंने देखा था और भारत सरकार के श्री महाजन ने भी उसको देखा था। इन लोगों से बुलाकर पूछिये। इन्होंने स्वयं देखा कि लड़की खून से लथपथ पड़ी हुई थी। नादिर हुसेन साहब को परमिट तो मिल गया है हज का लेकिन अभी गये नहीं हैं, अभी यहीं है। सिर्फ इसलिये कि एक मुसलमान का नाम जनसंघ के एक आदमी के मुंह से निकल गया और आपने इसको साम्प्रदायिकता का जामा पहनाया। अब्दुल हमीद मुसलमान था उसके प्रति हमारा मस्तक नत है, छागला साहब मुसलमान हैं उनके लिये हमारे हृदय में सहानुभूति है लेकिन इस प्रकार के लुच्चे, लफंगे और बदमाशों के लिये कतई सहानुभूति नहीं है। वह सहानुभूति आपके पास, अपने वोट्स प्राप्त करने के लिये हो सकती हैं, हमें ऐसे बदमास लोगों के वोटस नहीं चाहिये हम ऐसे वोट्स के लिये गलत काम नहीं कर सकते। मैंने तो जिन आदिमयों के, सरकारी आदमियों के, नाम दिये हैं, उन्हें बुलाइये, पूछिये और यह भी मैंने बतलाया कि वे अभी हज गये नहीं हैं, भारतवर्ष में हैं, यहीं एक मंत्री की जेब में छिपे हैं और वही मंत्री उसका पृष्ठ पोषण कर रहे हैं और वह इस नाते कि वह कहने के लिये तो धर्मनिरपेक्ष हैं लेकिन अन्दर-अन्दर धम के नाम पर पृष्ठपोषण गुंडों, बदमाशों, लुच्चों और लफंगों का करते हैं।

मैं कह रहा था कि सीमा से तो आक्रमण होने वाला नहीं है, वह होना भी नहीं है क्योंकि हम शान्ति के पैगम्बर बने हुये हैं चाहे देश दिगम्बर बन जाय, इसकी चिन्ता नहीं है। आन्तरिक सुरक्षा की आपको चिन्ता नहीं है। क्योंकि चाहते हुये भी आपके अधिकारी सुरक्षा का काम नहीं कर पा रहे हैं। थानेदार चाहते हुये भी दांत पीसकर रह जाता है, करे क्या? इस भौतिकवादी समाज में, भौतिकवादी अर्थव्यवस्था और भौतिकवादी समाज रचना में मनुष्य के लिये पैसा ही परमेश्वर हो गया है। सरकार का मुलाजिम है, अगर उसको नौकरी जाने का भय न होता तो वह थानेदार इनका खून पी जाता। वह जानता था कि अगर वह कुछ करता है तो उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। केवल कहने से काम चलने वाला नहीं है, केवल लोगों को डाल पकड़ाकर लटका देने से काम चलने वाला नहीं है। समाज की रचना ऊपर से नीचे तक करनी पड़ेगी, देश के अन्दर देशभक्ति के भाव को भरना पड़ेगा, देश के प्रत्येक नागरिक में देश के प्रति श्रद्धा की भावना लानी पड़ेगी और वह तब होगा जब यह हमारे सामने बैठने वाले नेता लोग उसका प्रमाण उपस्थित करेंगे और उसे उपस्थित करने के लिये उनको कुछ

[कुंवर श्रीपालसिंह]

चीजों का त्याग भी करना पड़ेगा। जब नेता के मुंह से ये शब्द निकलेंगे कि लद्दाख की भूमि तो ऐसी है जहां घास भी नहीं उगती तब तक जनता में जागृति नहीं आ सकती। इस स्थान पर मैं डिंगल भाषा की दो पंक्तियां आपके सम्मुख अवश्य उपस्थित करना चाहता हूं :—

"धररी रज नहं जांण दे, धरतो देणीं दूर।
उड़ती रज नहं रोकवा, शोणित छिड़के शूर।"

श्रीमन्, जमीन की बात तो दूर रही। उस जमीन का एक कण भी यदि उठकर दूसरे की जमीन में जायगा तो बहादुर उसको अपने रक्त से सींचकर दबा देंगे। इस भावना से देश की रक्षा हो सकती है। घास भी उस जमीन में पैदा नहीं होता है तो हम उसको छोड़ दें इस प्रकार से उसको देखने से काम नहीं चलेगा। राजस्थान की जमीन में बालू ही बालू और भरभंडे तथा पेड़ भी उसमें पैदा नहीं होते हैं, पानी भी वहां पर नहीं मिलता है लेकिन उसके एक-एक कण की रक्षा के लिये एक-एक जवान ने अपने प्राणों की आहुति दी है। इस तरह से रक्षा करके ही देश का इतिहास बनता है। आज भी हमारे पास कुछ नहीं रह गया है लेकिन फिर भी पाकिस्तान जैसे बर्बर आक्रमण कारी को हमारे बहादुर जवानों ने वह सीख सिखलाई है कि उसके दांत खट्टे हो गये हैं। यह किस आधार पर हुआ केवल अपनी परम्परा के आधार पर और केवल अपने पूर्वजों के महान् कृत्यों के आधार पर। उस भावना को जाग्रत करना पड़ेगा। उस जागृति के लिये होमगार्ड से काम नहीं हो सकता है। उस जागृति को लाने लिये रिटायर्ड लोगों से काम नहीं चलेगा। उस जागरण के लिये माननीय मन्त्रियों को प्रमाण पेश करना होगा और हिम्मत के साथ प्रमाण पेश करना होगा और हमारी कैबिनेट के मंत्री के फलां साहब रिश्तेदार हैं इसलिये बदमाशी कर सकते हैं उसको नहीं रोक सकते हैं, इससे काम नहीं चलेगा। देश की सुरक्षा यदि प्रिय है और देश की रक्षा करनी है तो सब से पहले समाज के अन्दर उस भावना को जाग्रत करना होगा कि समाज देश को अपनी प्रिय मातृभूमि समझे। अपनी भारतीय संस्कृति को अपनी संस्कृति समझे। राष्ट्रीयता के प्रेम से वह ओतप्रोत हो। पेड़, नदी, मिट्टी, पत्थर सब चीजों को लेकर राष्ट्रीयता बनती है। राष्ट्रीयता कोई तमाशा नहीं है। देश की मिट्टी, पत्थर, पहाड़, पेड़, इन सबको वह पूजे। जब यहां का मिट्टी, पत्थर पहाड़, पेड़ में राष्ट्रीयता उसको दिखाई देगी तब ये सब पजनीय होंगे। जब पूजनीय समझने की भावना पैदा होती है तब हम इस भावना से प्राण देने के लिये तैयार होते हैं, तब देश की सुरक्षा होती है। इस होम गार्ड से देश की सुरक्षा नहीं होगी। इसलिये मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि यदि कुछ करना है तो दूसरी तरह के प्रचार को रोकिये। अगर कुछ करना है तो ऐसे कीजिये कि वह भावना जाग्रत हो जिससे प्रेरित होकर वह अपने को भारत माता का सपूत समझे और देश के लिये अपने प्रणों की बलि देने के लिये तैयार रहे, तभी देश की सुरक्षा हो सकती है।

*श्री एस० जी० दत्त (जिला कानपुर)—

उपाध्यक्ष महोदय, मैंने ठाकुर साहब की बातें, जो उन्होंने कटौती का प्रस्ताव पेश करते हुये कहीं, सुनीं। ऐसी-ऐसी बातों के कहने से तो यह मालूम होता है कि जनसंघ ही इस देश में ऐसी पार्टी है जो देश का भला चाहती है और दूसरी कोई ऐसी पार्टी नहीं है। मैं आपको सच्चाई का ख्वाहां हूं। सिर झुका दूंगा लेकिन जहां पर मुगालते के साथ बातें होती हैं वहां पर सिर नहीं झुकेगा और हम जरूर कहेंगे। होम डिफेन्स बना इसलिये कि जब बाहर से हमला हमारे ऊपर हो यह होम डिफेन्स अन्दरूनी इन्ताजम देश का अच्छी तरह से कर सकें। पापुलेशन बहुत ज्यादा है इस वास्ते होम गार्ड की पापुलेशन ज्यादा होनी चाहिये। हूकूमत ने इस अनुदान में जो रुपया मांगा है वह बहुत थोड़ा है। बहरहाल, वह जितना भी है, उसके

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

साथ सरकार को सिविल डिफेंस की तरफ और ज्यादा ध्यान देना चाहिये। अभी, उपाध्यक्ष महोदय, 'आपने ठाकुर साहब को कहा था कि जो मामले सेंटर से संबंधित हैं उनका आप जिक्र न करें। यह ठीक है कि हमको अपने प्रदेश के अन्दर के मामलों तक ही सीमित रहना चाहिये। मैं ठाकुर साहब और जनसंघ वालों से पूछता हूं कि जब चीन के हम पर हमला किया था उस समय जहां हम सब में एक एत्तिहाद और इत्तफाक होना चाहिये था उसके बजाय ये लोग हुकूमत की मुखालिफत कर रहे थे और चाहते थे कि कांग्रेस की सरकार को पलट दें और खुद पावर में आ जायं।

श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)--

यह सूचना उनको कहां से मिली है? मुझे तो ऐसा लगता है कि वे ही ऐसा प्लान बना रहे थे। जन संघ तो पूरे समय चीन के हमले में सरकार के साथ रहा। अपना लगान आन्दोलन हमने वापस लिया, अपना सत्याग्रह वापस लिया।

श्री एस० जी० दत्त--

आपके सत्याग्रह और आन्दोलन को हम समझते हैं। मैं आपको इसका सबूत देता हूं। कानपुर में पब्लिक प्लैटफार्म से जन संघ और दूसरी पार्टियों के नेताओं ने कांग्रेस के कार्यों की निन्दा की और आंसू पोछने के लिये यह कहा कि चूंकि चीन ने हमला कर दिया है इसलिये हम कांग्रेस हुकूमत के साथ हैं। लेकिन दरअस्ल आपका मंशा यही रहा कि कांग्रेस को पलट दें।

श्री हरीशकुमार गंगवार--

हमारा तो चुनाव घोषणापत्र ही यह कहता है। हम कांग्रेस को समाप्त करेंगे और अपना राज्य स्थापित करेंगे।

श्री राजेन्द्रसिंह (जिला एटा)--

हम तो देश की रक्षा की बात कर रहे हैं और इसके लिये कांग्रेस को निकालेंगे। कांग्रेस के मुकाबले देश बहुत बड़ा है।

श्री उपाध्यक्ष--

वह क्या समझते हैं, आपको बतलायेंगे। आप सुनिये। आप लोग ज्यादा इंटरेप्ट मत करिये।

श्री एस० जी० दत्त--

मैं उनकी बहादुरी की मिसाल पेश करना चाहता हूं। हर आदमी अपनी खैरखाही जताने के लिये अपनी बात पेश करता है, लेकिन उसमें बेवकूफी ज्यादा होती, है अक्लमंदी नहीं। आप देखें कि जिस वक्त चीन के साथ हमारी फौजें लड़ रही थीं उसी जमाने में आप लोग यहां सरकार को पटकनी देना चाहते थे, उसे गिराने की कोशिश कर रहे थे। मेरी समझ में बाहरी हमले के मुकाबले अंदरूनी हमला ज्यादा खतरनाक होता है। यह हमारी आस्तीन के सांप हैं और हमको ज्यादा नुकसान पहुंचा सकते हैं। यह तजुर्बे की बात है। आप कहते हैं कि जनसंघ वालों ने पाकिस्तान की जंग में मदद की। शुक्रिया। लेकिन यह तो कोई अहसान नहीं किया। आपने केवल जन संघ का ही नाम लिया। कई एसोसियेशन्स ने कई पार्टियों ने इसमें सरकार की मदद की। और ऐसा इत्तफाक कंट्री के अन्दर था कि क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब एक होकर लड़े।

श्री राजेन्द्रसिंह--

इस लड़ाई में जन संघ के कार्यकर्त्ताओं ने कितना खून दिया और कांग्रेस वालों ने कितना दिवा?

श्री हरीशकुमार गंगवार--

खून ही कितना है, जो देंगे? खून तो है ही नहीं।

श्री एस० जी० दत्त—

जरा सब्र से सुन लें, मैं बतलाता हूं कि कितनों ने दिया है। मैं उनकी बहादुरी और सेवा की बात बताता हूं जिसकी वह चीख व पुकार करते हैं कि सन् ४७ में पार्टीशन हुआ उस वक्त वे स्वयं सेवक संघ के रंग में थे, तब यह जनसंघ नहीं था। इसमें शक नहीं कि कुछ बम भी बनाये थे और कुछ इक्के दुक्के फेंक दिये, लेकिन जब ज्यादा खराबी हुई तो जितने स्वयं सेवक संघ वाले थे वह सब भाग खड़े हुए। ये तो हम थे जिन्होंने बिना हथियार के, केवल क्रास लेकर डेढ़ लाख आदमी दिये।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—

दत्ता साहब ईसामसीह की कुर्बानी की बात कर रहे हों तो सचमुच बेजोड़ है।

श्री एस० जी० दत्त—

सब पार्टियां अच्छा काम कर रही हैं, लेकिन जो गलत कदम उठाया जाता है, किसी पार्टी का भी हो, हम उसका विरोध करेंगे। जितनी साम्प्रदायिकता यहां पर फैली, आज उसका सबब कौन है? कांग्रेस ने फैलाई? पी० एस० पी० ने? कम्युनिस्ट ने? किसने फैलाई? यह जिस दिन से जन संघ पैदा हुई है उस दिन से साम्प्रदायिकता हुई है।

श्री हरीशकुमार गंगवार—

ईसाई सांप्रदायिकता और नागालैण्ड किसने फैलाया?

श्री उपाध्यक्ष—

उन्हें अपनी बात कहने दीजिये।

श्री एस० जी० दत्त—

यह मिर्चें क्यों लग रही हैं? अगर कसूरवार नहीं हैं तो चुप रहें। अगर हैं तो बुरा क्यों मानते हैं?

श्री खेमचन्द (जिला आगरा)—

उपाध्यक्ष महोदय, यह 'मिर्चें लगना' वाली बात कही जाती है और आप चुप हैं? आप कुछ नहीं कहते हैं। क्या यह संसदीय है?

श्री एस० जी० दत्त—

आप जब खाना खाते हैं और मिर्चें ज्यादा होती हैं तो लगती नहीं हैं?

श्री उपाध्यक्ष—

यह कहावत है, संसदीय होने, न होने का कोई सवाल नहीं है।

(व्यवधान)

श्री एस० जी० दत्त—

सब हमारे भाई हैं। हम एक ही कंट्री में हैं, लेकिन इल्जामी सूरत से बात करेंगे तो इल्जामी जवाब दिये जायेंगे। ठाकुर साहब ने कहा कि ट्रांजिस्टर पकड़ा गया, तो जब आपको पता लगा था तो पुलिस को फौरन क्यों नहीं इत्तला की। अगर पुलिस न पहुंचती तब तो शिकायत ठीक थी।

श्रीमन्, यह सब जो इस तरह की बातें यहां करते हैं वे इसलिये करते हैं ताकि आगे आने वाले इलेक्शन में जनता का रुख इनकी तरफ हो जाये, जनता कांग्रेस के खिलाफ हो जाय। मगर जनता भी अब इनको अच्छी तरह से पहचानने लगी है। यह बन्दा जब भी इलेक्शन में खड़ा हुआ, मेरे मुकाबले में जनसंघ का उम्मीदवार खड़ा हुआ, मगर उसकी हमेशा जमानत तक जब्त हो गयी। जनता आपके साथ नहीं है। जाति पांति का मसला जो पैदा किया गया है

उसके लिये यह जन संघ ही जिम्मेदार है। मैं कहता हूं कि पहले यह पार्टी वफादार होकर दिखाये, फिर दूसरे फिर्कों के लिये कहे। पहले यह पार्टी तो दिखाये कि यह कितनी वफादार है। जब तुम (जन संघ) जनता से मुहब्बत करोगे, उनकी सेवा करोगे, तभी जनता तुम्हारे साथ होगी। हमने जनता की सेवा की है, खानदान के खानदान उसी में तबाह हो गये, तब जनता ने यहां भेजा है। मैं नाम नहीं लूंगा, मैंने जन संघ के ही एक भाई से पूछा कि जब तुम्हारी हुकमत होगी तो मुसलमान कहां जायंगे। उसने कहा उनको निकाल दिया जायेगा। मैंने पूछा क्रिश्चियन कहां जायंगे, जवाब मिला, वे एज ऐ गेस्ट रह सकेंगे। तो, श्रीमन्, यह नक्शा है इन जन संघ वालों के दिमाग का। यह लोग क्या माइनारिटी के फायदे की सोच सकते हैं। मैं कहता हूं पहले मुल्क के प्रति कुछ वफादारी दिखाओ। इन शब्दों के साथ में फिर अपने जनसंघ के भाइयों से निवेदन करता हूं कि अगर मेरी बातें सही हों तो उनको अमल में लायें, गलत हों तो न मानें, बुरा मानने की बात नहीं है।

श्री झारखण्डेराय (जिला आजमगढ़)––

उपाध्यक्ष महोदय, अपने विषय पर आने से पूर्व मैं भाई कुंवर श्रीपाल सिंह जी से साग्रह २–३ निवेदन करना चाहूंगा। उन्हें इस बात को भूलना नहीं चाहिये कि आज स्वतंत्रता का युग है आज का युग धर्म स्वतंत्रता ही है। छोटे-छोटे नाचीज देश भी आज स्वतंत्र हो रहे हैं। जो देश बच गये हैं वे भी शीघ्र ही स्वतंत्र हो जायेंगे। अंधेरे महाद्वीप में आज आजादी की सुनहरी किरणें फूट चुकी है। दूसरे महायुद्ध के बाद ६० देश आजाद हो चुके है और ऐसे देश आजाद हुये हैं जिनकी आबादी हमारे प्रदेश और जिले की आबादी के बराबर देश हैं। आज कोई भी किसी देश को गुलाम नहीं बना सकता है। हमारे देश में भी कोई यह दुस्साहस नहीं कर सकता कि वह कभी लाहसा वा पेकिंग या अन्य किसी देश पर चढ़ सकता है। और न संसार में किसी वाद का विकास करना चाहिये। चाहे वह पेकिंग हो, चाहे ल्हासा हो, चाहे पिंडी हो, कभी दिल्ली बलपूर्वक आकर कब्जा कर सकता है। इस प्रयास के शुरू करने के पहिले ही विश्व महायुद्ध होगा और फिर विश्व महासंहार होगा। इसलिये इस रिएलिटी को हमें या और किसी को नहीं भूलना चाहिये। मान्यवर, उन्हें इस बात को भी गौर करना होगा कि देशभक्ति दो प्रकार की होती है। एक प्रतिक्रियावादी देशभक्ति और इसरी प्रगतिशील देशभक्ति है। एक देशभक्ति व भी थी कि अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान को गुलाम बनाया था और गुलाम रक्खा हुआ था, वह प्रतिक्रियावादी देशभक्ति थी। हमारा तकाजा था कि हम इन गुलामी की श्रृङ्खलाओं को तोड़कर देश को आजाद करायें। वे हामी हैं। मैं समझता हूं कि यह हमारा तकाजा नहीं है कि हम नैपाल, भूटान, लंका और एशिया पर कब्जा कर लें तो यह हिन्दुस्तान के प्रति देशभक्ति का प्रमाण हो सकता है। यह न हमारे लिये उचित है और न जनता के लिये लाभदायक हो सकता है और न एशिया के लिये हितकर है। इसलिये दो बातें कहने के बाद मैं आगे बढ़ना चाहता हूं। उन्होंने कुछ जो मार्क्सवादी कम्युनिस्ट वाद है उनके कुछ नेताओं का उद्धरण दिया। उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की कि वे चीन के समर्थक हैं। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी पार्टी के रूप में चीन के समर्थक नहीं हैं। मैं उनका एक पैम्फलेट जो उनका अधिकृत पैम्फलेट है जो कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ गृह मंत्री के थोथे प्रचार को न करके निकलता है नन्दा जी के जवाब में, उनकी दो लाइनें मैं पढ़ता हूं और कुंवर श्रीपाल सिंह जी से अपील करूंगा कि वे उन्हें देख लें। उसमें चौथे पैराग्राफ में लिखा है कि :––

हमारे देश पर चीन के आक्रमण से हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने में देर होगी। यह जनता की आवश्यकताओं को कभी भी मदद नहीं पहुंचा सकती है, उलटा इससे कांग्रेस से बराबर दूर हटते हुए जनता को संगठित करने के लिये कांग्रेसी सरकार को ही मौका मिलेगा।

मान्यवर, वे इसको देख सकते हैं। इसलिये किन्हीं एक या दो व्यक्तियों के विचार के ऊपर किसी पार्टी को लेबुल लगाना यह गम्भीर प्रावीक्रय का परिचय नहीं है। मान्यवर, राष्ट्रीय संकट हमारे देश में चीन के हमले के बाद शुरू हुआ। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकतीं। लेकिन यह राष्ट्रीय संकट कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस सरकार के लिये वरदान सिद्ध हुआ है, ब्लैसिंग हुआ। सुरक्षा कोष धीरे-धीरे कांग्रेस कोष का रूप धारण करता जा रहा है और राष्ट्रीय रक्षा

[श्री झारखण्डे राय]

ने कांग्रेस रक्षा का रूप धारण कर लिया है। मान्यवर, राष्ट्रीय सुरक्षा और इस एमरजेन्सी ने हमारे देश और प्रदेश के कोने-कोने में जो नौकरशाह थे उनको अधिक बलवान बनाया है। हमारे देश में जो पूंजीपति लखपति थे वे करोड़पति और करोड़पति अरबपति और अरबपति खरबपति बनकर तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। इसका बेजा मुनाफा चोरबाजारों और संचयखोरों ने किया है और वे काफी मालामाल हो रहे हैं। बंगाल इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस जो कांग्रेस से नियंत्रित संस्था है उसने प्रस्ताव पास किया था कि संकट का पूरा इस्तेमाल हमारे देश प्रदेश के पूंजीपतियों ने अधिक मालामाल होने में किया है और उनके सामने एक लक्ष्य था कि उसका इस्तेमाल अपने को और धनवान बनाने में किया जाय। मान्यवर, राष्ट्रीय संकट और राष्ट्रीय रक्षा और राष्ट्रीय कोष का इस्तेमाल कांग्रेस को मजबूत करने में और मैं कहूंगा हमारे सूबे में गुप्ता जी गुट को मजबूत करने में किया जा रहा है। अभी मेरे एक सवाल के जवाब में बताया गया कि डेढ़ करोड़ रुपया जो सुरक्षा कोष के लिये इकट्ठा हुआ था वह अप्रत्यक्ष रूप से गुप्ता जी के हाथ चला गया। गवर्नर उसके अध्यक्ष हैं जो कि केवल एक अलंकारिता की जगह है, उसका कोई ज्यादा असर नहीं है। अपने-अपने सहयोगियों को उसमें रखा गया है और वह धन अप्रत्यक्ष-रूप से गुप्ता जी के हाथ में चला गया है। वह कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने के काम में भी नहीं आयेगा वरन् गुप्ता जी की पार्टी को मजबूत करने के काम आयेगा।

विरोधियों का दमन करने के लिये इस इमर्जेंसी का इस्तेमाल किया जा रहा है। आज इसी इमरजेंसी के नाम पर ११८५ मार्क्सवादी लोगों को बिना मुकदमा चलाये जेलों में नजरबन्द कर रखा है। नैतिकता का तकाजा था कि उनमें से कम से कम २–४ पर केस चला कर केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार यह साबित करती कि वे चीन के दलाल हैं और हिन्दुस्तान में आग लगाना चाहते थे। अगर वे ऐसा करते तो सब लोगों का मुंह बन्द हो जाता और इस सरकार का समर्थन हिन्दुस्तान के कोने-कोने से होता। ऐसा नहीं किया, इससे साबित होता है कि डी० आई० आर० का बेजा इस्तेमाल किया जा रहा है। इसमें से केवल ६१९ आदमियों को पारिवारिक भत्ता दिया जा रहा है। मैं केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार से यह पूछना चाहता हूं कि जिन लोगों को पारिवारिक भत्ता नहीं दिया जा रहा है क्या उनके परिवार वालों के पास पेट नहीं है? हमारे उत्तर प्रदेश के जेलों में बहुत से लोग ऐसे हैं जो सख्त बीमार हैं। ८२ साल के एक वृद्ध, श्री नारायण तिवारी लखनऊ की जेल में ही हैं। एक ६० वर्ष के बूढ़े श्री शिव वर्मा हैं जो भगतसिंह के साथी हैं, फांसी के तख्ते को चूम चुके हैं और काले पानी की सजा पा चुके हैं, वे कैंसर रोग से पीड़ित हैं। शेर सिंह, देवरिया के ही रहने वाले हैं, जिन्होंने अपनी हवलदारी की नौकरी को छोड़ा और देश सेवा में आये। मोहन लाल शुक्ल को बुखार आता है, सब्बर हुसेन को टी० बी० हो गयी है। राजनारायण को साइटिका का मर्ज है, रामशरण को साइटिका है और पेट में दर्द होता है। रामजकुमार सिंह और त्रिपाठी बीमार हैं। हैदर अब्बास को दिल की बीमारी है और टी० बी० है। रामलखन सिंह को दिल की बीमारी है। जगदीश पाठक को पेचिश है और दिल की बीमारी है। इस प्रकार से बूढ़े बूढ़े लोगों को यह सरकार बन्द करके मार डालना चाहती है और उनके परिवार वालों को भत्ता भी नहीं दिया जाता है। यह डी० आई० आर० का बेजा इस्तेमाल है। आप या तो उन पर केस चलाइये या उनको रिहा कीजिये। अशोक सेन और उनके बहुत से सहयोगियों ने वक्तव्य दिये तथा राष्ट्र में चारों ओर से यह मांग हो रही है कि इस इमरजेंसी को समाप्त किया जाय और शांति के वातावरण में जनता को सांस लेने दिया जाय।

मैं कहना चाहता हूं कि चीन ने मूर्खता की जो हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। उसकी मूर्खता ने कांग्रेस सरकार के लड़खड़ाते पैरों को जमा दिया, एक नयी जीवनी शक्ति उसको दे दी और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के हौसलों को हमारे देश के अन्दर बढ़ाया। पाकिस्तानी आक्रमण ने एक दूसरा हथियार कांग्रेस सरकार को दिया। कौन सा काम है जो देश के कानूनों के द्वारा नहीं हो सकता था और कौन सी अशांति को इन मौजूदा कानूनों से नहीं दबाया जा सकता था? क्या आप के कानून में लालेसनेस को दबाने के लिये धारायें नहीं थीं? मैं समझता हूं कि

चीनी आक्रमण के बाद शान्ति नहीं हुई और समझौता नहीं हुआ, यह ठीक है, लेकिन अब चीनी आक्रमण की समाप्ति और ताशकन्द के समझौते के बाद इस डी० आई० आर० और सुरक्षा के नारे की क्या जरूरत है? इसलिये मैं चाहता हूं कि अब संकट काल के नाम पर जनता से भूमि भवन कर न लिया जाय, ४ आने की लगान में जो बढ़ोत्तरी की गई है उसको वसूल न किया जाय और जो यह प्रोफेशन कर लगाया गया है वह भी वापस लिया जाय।

आन्तरिक सुरक्षा के सम्बन्ध में मैं निवेदन करूंगा कि सरकार की बिल्कुल दुविधापूर्ण नीति है। हमारे पास पुलिस है यह ठीक है लेकिन पुलिस के बाद एक दूसरी शक्ति एक आगजिलरी फोर्स होना चाहिये। होमगार्ड और पी० आर० डी० को मिला कर एक संगठन बनाना चाहिये अलग-अलग दोनों की जरूरत नहीं है। अभी तक जो कुछ किया जा रहा है वह केवल अफसरों के सुखसुविधा के लिये और उनके कोठी बंगलों के आराम के लिये किया जा रहा है। हम चाहते हैं कि हमारी यह आगजिलरी डिफेंस लाइन एक ही रहे, नाम उसका चाहे जो कुछ हो। देश के पैमाने पर फौज है, प्रदेश के पैमाने पर पुलिस है और यह केवल एक तीसरी डिफेंस लाइन होनी चाहिये।

जहां तक सुरक्षा कोष की बात है, केवल सुरक्षा कोष की बुनियाद पर आज के जमाने में कोई भी लड़ाई नहीं लड़ाई जा सकती। थोड़ा बहुत पैसा गरीब जनता से इकट्ठा हो सकता है। पिछली बार चीन की लड़ाई के जमाने में ७० करोड़ रुपया इकट्ठा नहीं हुआ देश में और इस प्रदेश में भी दस करोड़ नहीं जमा हो सका। देश की प्रगति के नाम पर, देश के विकास के नाम पर देश की सुरक्षा के नाम पर भूखी जनता से जबरदस्ती सुरक्षा का पैसा लेना बहुत बड़ी गलती है। इससे जनता का मनोबल टूटता है और टूटे हुये मनोबल कभी कभी हमारे किसान के बेटे मोर्चे पर अपनी जान नहीं देंगे चाहे वह चीन का मुकाबला हो। मेरी सदन से अपील है, इस सरकार से अपील है और देश की जनता और केन्द्रीय सरकार से अपील है कि आज हवा बदल चुकी है, अब रुख बदल गया है और ताशकन्द के समझौते के बाद हमारे देश में और आस पास के दूसरे देशों में भी हवा का रुख बदला है और मैं चाहता हूं कि भारत सरकार चीन के साथ भी एक ससम्मान समझौते के लिये पहलकदमी करे। इसमें कोई नुकसान नहीं है। अगर वह मानता है तो हम एक अच्छे पड़ोसियों की तरह शांति से रह सकेंगे लेकिन अगर नहीं मानता है तो जिस तरह से कि वह दो बार विश्व के जनमत में आइसोलेट हो चुका है और पिट चुका है वह एक बार और दुनिया की नजरों में गिर जायगा। हमें बराबर कोलम्बो प्रस्ताव में और उसके बाद नैतिक बल मिला है। इस पहलकदमी से हमें विश्व जनमत प्राप्त होगा और पाकिस्तान आइसोलेट होगा, हमारी इसमें कोई राजनैतिक हानि नहीं है। अच्छा है कि एक पड़ोसी से बहुत हद तक हमारा समझौता हुआ है तो दूसरे से भी मामला सुलझ जाय और हम सब पड़ोसी शांतिपूर्वक रह सकें और हमारी विकास की गाड़ी तेजी से और मजबूती से आगे बढ़ सके। इस तरह से हम अपनी गरीब जनता को विकास के पथ पर लेकर आगे बढ़ सकते हैं जैसा कि श्री लालबहादुर जी ने मार्शल अयूब से कहा था कि हम आपस में न लड़ें, हमारी जनता लड़ना नहीं चाहती, वह चाहती है कि गरीबी के खिलाफ, भुखमरी के खिलाफ और निरक्षरता के खिलाफ लड़ाई लड़ी जाय, वह रोटी कपड़ा मकान चाहती है और वह चाहती है सबको रोजगार और उन्नति का अवसर मिले। इन शब्दों के साथ मैं कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री मेवालाल जायसवाल (जिला इलाहाबाद)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिये मैं आपका बहुत आभारी हूं। मैं पहली बार अभी इस ओर से बोल रहा हूं। मैं पी० एस० पी० से चुन कर आया था। मैंने वहां के रवैये को देखा यहां असेम्बली में कि रोज शोरगुल और वाकआउट होता था, इसलिए मैंने तय किया कि गांधी जी के बताये हुये शांति के रास्ते को अपना कर इधर बैठ कर कुछ काम करूं और विचार करूं। मुझे अच्छा नहीं लगा, हालांकि बहुत से हमारे साथी ऐसे हैं जो ईमानदार हैं, लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगा कि रोज-रोज झगड़ा मचायें, रोज-रोज वाक-आउट हो और कोई अच्छी नीति न निकाली जाय। मैं किसानों के बीच का रहने वाला हूं और स्वर्गीय जवाहरलाल के क्षेत्र से चुन कर आया हूं जिससे अब श्रीमती विजय लक्ष्मी

[श्री मेवालाल जायसवाल]

पंडित चुनी गई हैं। हमारे राजा साहब ने बहुत बातें बतायी हैं जो ९९ फीसदी सही हैं लेकिन मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि जिस कुम्भ मेले की घटना का उन्होंने जिक्र किया और जिसका नाम वह नहीं बताना चाहते, उसका नाम क्यों नहीं बताते। यदि वह नाम बता देंगे तो हमारे गृह मंत्री उसके विरुद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही करेंगे।

कुंवर श्रीपालसिंह--

नाम बता दिया है वह कार्यवाही में नोटेड हैं, आप देख सकते हैं।

श्री मेवालाल जायसवाल---

कम्युनिस्ट पार्टी के माननीय सदस्य ने कहा कि हमें रोटी की जरूरत है। लेकिन आप भी जानते हैं कि जिसको सरकार चलानी होती है उसके सामने बहुत सी कठिनाइयां होती हैं। मैं भी विरोध में था लेकिन मैंने बहुत सी बातों को सोचा और गांधी जी की किताबों को फिर से पढ़ा और फिर इस नतीजे पर पहुंचा कि शान्ति से ही हम आगे बढ़ सकते हैं। और जो रोजाना का झगड़ा, घाक आउट हुआ करता है उससे देश आगे बढ़ने वाला नहीं है इसीलिये मैं कांग्रेस में आया। अगर आप शान्ति से और ईमानदारी से अपने क्षेत्र की बात बतायें तो कोई भी मंत्री ऐसा नहीं जो आपकी बात न सुने।

मैंने देखा कि पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार है, यह बात सही है, और हमारे उप गृहमंत्री जी ने हमारे क्षेत्र के एक थाने में सादा पोशाक पहन कर भ्रष्ट लोगों को पकड़ा है, लेकिन इस दरमियान में उन्होंने ऐसा करना छोड़ दिया है। यदि उनका कार्य करने का वही ढंग रहता तो जो आज उनको ये बातें न सुननी पड़तीं। हमारी पार्टी गद्दारों की नहीं है, ईमानदारों की है, शान्ति पूर्ण ढंग से देश का विकास करने वाली है। इस पार्टी में जवाहरलाल जी, तथा लालबहादुर शास्त्री ऐसे आदमी हुए हैं जिन्होंने इलाहाबाद, देश और सारी दुनिया का नक्शा बदल दिया है। यदि सरकार में कुछ खराब बातें हैं तो उनको भी शान्ति पूर्ण ढंग से सरकार की नोटिस में लाकर दूर किया जा सकता है। साथ ही जो अच्छी बातें हैं उनकी सराहना भी होनी चाहिये।

श्री हरीशकुमार गंगवार---

श्रीमन्, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। माननीय सदस्य किस मद पर बोल रहे हैं? प्रस्तुत मद पर बोल रहे हैं या कांग्रेस पार्टी का रोना रो रहे हैं।

श्री उपाध्यक्ष---

सभी माननीय सदस्य ऐसे बोलते हैं। उनको भी बोलने दीजिये।

श्री मेवालाल जायसवाल---

आप यह न समझें कि मुझे कोई डर है। मैं शान्ति पूर्ण ढंग से गांधी जी के रास्ते पर चलना चाहता हूं, इसीलिये इधर आया हूं। अभी राजा साहब ने बहुत सी शिकायतें कीं कि यहां पर किसी के यहां ट्रांसमीटर लगा हुआ है। तो मैं चाहता हूं कि अगर यह बात सही है तो हमारी सी० आई० डी० को इस पर तुरन्त कार्यवाही करनी चाहिये। यह कोई तरीका नहीं है कि उत्तर प्रदेश का इतना अच्छा शासन जिसका हमें गर्व है और जिस उत्तर प्रदेश की एक महिला, श्रीमती इन्दिरा गांधी आज देश का शासन चला रही है, उसकी आप इस तरह से खिल्ली उड़ायें, इस बात का मुझे बड़ा दुःख है।

श्री उपाध्यक्ष---

माननीय मेवालाल जी, आज के विषय पर ही बोलिये।

श्री मेवालाल जायसवाल---

आखिर हमें एक लाख आदमियों ने चुनकर जनता की सेवा करने के लिये भेजा है। हमारे गांव के लोग बड़े चतुर और चालाक हैं। वे जानते हैं कि जनता की सेवा कौन कर सकता है। और भी आपको मालूम है कि ४३१ में कितने आदमी इधर हैं। मैं तो कल से इधर आया हूं,

मैं यह नहीं कहता कि आप सही बात नहीं कहते हैं, लेकिन आप गलत सलत बात भी कह डालते हैं जिससे कि सही काम नहीं होने पाता। मिनिस्टर लोग भी समझ लेते हैं कि ये तो ऐसे ही कहा करते हैं। मैं कोई मिनिस्टर नहीं हूं लेकिन मैं अपने साथियों से निवेदन करूंगा कि अगर उधर से कोई सही बात कही जाती है, जैसा कि राजा साहब ने कही, तो उस पर जरूर अमल किया जाय। अगर आप लोग यह सोचें कि इलेक्शन जीतना है इसलिये गवर्नमेंट की खिल्ली उड़ायें तो यह उचित बात नहीं है। अगर देश में हम समाजवाद लाना चाहते हैं, ईमानदारी लाना चाहते हैं तो पहले हमें ईमानदार बनना पड़ेगा। अगर हममें ईमानदारी नहीं है तो हम देश में शान्ति पैदा नहीं कर सकते।

श्रीमन्, इसके अलावा जहां तक पुलिस का सम्बन्ध है, इसी ५ तारीख की रात को मैं बड़ी परेशानी में था। मेरे पास अभी तक कोई मकान नहीं था। मेरे साथ जो घटना हुई उसके बारे में मैं दुखी नहीं हूं। मैं एक नौजवान आदमी हूं। लेकिन आज जो गरीब किसान है, जिसके ऊपर पुलिस शासन चला रही है। अगर इस शासन का यही रवैया रहा तो यह शासन हर्गिज नहीं चल सकता।

श्री उग्रसेन—

श्रीमन्, इनके ऊपर बड़ा अत्याचार हुआ। जरा इनको समय दे दें और लाल बत्ती बुझा दें।

श्री मेवालाल जायसवाल—

५ तारीख को १२ बजे रात मैं एक बड़ी उलझन में था। हमारे मिनिस्टर हुकुमसिंह जी चले गये। उन्होंने मुझे एक कबाड़खाने सा मकान दे रखा है। वहां मच्छर खूब काटते हैं। १२ बजे रात को मेरी नींद खुल गई। मैं हुसैनगंज चौराहे पर चला आया। वहां एक पान की दुकान खुली हुई थी। मैंने सोचा कि दो बीड़ा पान खाऊं तो शायद फिर नींद आ जाय क्योंकि कुछ क्षेत्र की उलझन थी और कुछ यहां की भी उलझन चल रही थी। जब मैं पानी की दुकान पर गया तो वहां दो आदमी सूट बूट पहने शराब के नशे में मस्त खड़े थे। जब मैं वहां पहुंचा तो उन्होंने मुझे धक्का दिया। मैंने कहा कि आप तो पढ़े लिखे आदमी हैं, जरा कायदे से रहिये। तो उन्होंने मुझे ऐसा धक्का दिया कि मैं पीछे की तरफ गिर गया। पुलिस को मैंने फोन किया और एक घंटे तक मैं बैठा रहा लेकिन हुसैनगंज पुलिस का एक भी सिपाही मुझे दिखाई नहीं दिया। मैं यह बात सरकार से नहीं बल्कि पुलिस विभाग से कह रहा हूं। इसके बाद मैंने कैसरबाग कोतवाली को फोन किया और वहां पर एक सब इंस्पेक्टर मौजूद था। लेकिन उसने कोई परवाह नहीं की। तब मैंने हजरतगंज कोतवाली को फोन किया तो वहां से कहा गया कि कैसरबाग कोतवाली को फोन कीजिये। फिर मैंने दोबारा कैसरबाग कोतवाली को फोन किया। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। फिर मैंने आई० जी० को फोन किया। लेकिन वहां फोन मिल नहीं सका। इसके बाद मैंने माननीय शिवप्रसाद जी को फोन किया और वहां भी नहीं मिल सका। अन्त में मैं मजबूर हो गया और इस समय करीब डेढ़ बज गया। फिर मैंने माननीय सुचेता जी को फोन किया। उनके आदमियों ने कहा कि अभी उनको सोये हुये एक घंटा हुआ है, अगर कहें तो जगा दें। मैंने कहा कि जगाने की कोई जरूरत नहीं है। एक मुख्य मंत्री जिसके पास प्रदेश का इतना सारा काम है उसको जगाने की जरूरत नहीं है। मैं कल सवेरे उनसे मिल लूंगा।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि पुलिस दो घंटे बाद आती है और मुझसे पुलिस ने माफी मांगी कि गलती हो गई। आप किसी से कुछ कहिये नहीं। लेकिन मैंने कह दिया कि सवेरे ६ बजे मैं माननीया सुचेता जी के बंगले पर जाऊंगा और उनसे सारी बातें कहूंगा। वह भले ही छोड़ दें लेकिन मैं छोड़ने वाला नहीं हूं। इस तरह से लखनऊ में पुलिस की गुंडागर्दी हो रही है। जिस तरह से आज यहां गुंडागर्दी बढ़ रही है उसको मैं बरदाश्त नहीं कर सकता हूं। अगर यह जानते हों कि मेरे मुंह में ताला लग गया है तो यह बात नहीं है। इस भारतवर्ष में आज प्राइम मिनिस्टर एक महिला है और उत्तर प्रदेश की चीफ मिनिस्टर भी एक महिला हैं इसके लिये हम लोगों को गौरव होना चाहिये। हम लोग आपस में लड़ते हैं, सही है, भले ही, लेकिन सही मसले पर ध्यान देना है। जो देश का कार्य ठीक से नहीं करते हैं उनको कुर्सियों से हटाया जायगा।....

श्री उपाध्यक्ष—

आपका समय समाप्त ।

*श्री लखीसिंह (जिला मथुरा)—

उपाध्यक्ष महोदय, जो कटौती का प्रस्ताव माननीय श्रीपालसिंह जी ने रखा है उसके समर्थन के लिये मैं खड़ा हुआ हूं । श्रीपालसिंह जी, झारखंडे राय जी और दत्ता जी के भाषणों के बाद ऐसा वातावरण बन गया है कि मुझे ५ मिनट का ज्यादा समय दिया जाय ।

(इस समय १ बजकर ९ मिनट पर अधिष्ठाता, श्री जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट पीठासीन हुये ।)

श्री अधिष्ठाता—

आप वातावरण बनाइये ।

श्री लखीसिंह—

जी हां बनाऊंगा । मैं न इधर का हूं और न उधर का हूं लेकिन उस पार्टी का आदमी हूं जो सरकार को समय-समय पर राष्ट्रीय संकट हटाने के लिये चेतावनी ही नहीं देती बल्कि लगाम झटक रही है । मैं समाजवादी पार्टी का आदमी हूं । प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं है । यह एक पार्टी है जो १९५०-१९६० तक सरकार से कहती रही कि चीनी हमलावरों को हटाओ । कहती ही नहीं रही बल्कि सत्याग्रह किया और इस पार्टी के एक-एक कार्यकर्त्ता को इस सरकार ने जेल में ठूंस दिया । श्रीमन, मैं मेवाराम जी हूं जो तबलची का काम करूं । यह काम मेरा नहीं है । मेरा काम है कि जो सरकार खराब बने, चाहें अंग्रेजों की सरकार खराब बने । चाहे कांग्रेस की सरकार खराब बने उसकी कब्र खोदकर उसे दफना देंगे । क्या चापलूसी का भाषण देते हो ? शराबियों से पिटते हो और समाजवादी पार्टी को छोड़कर पिटते हो और फिर पुलिस मंत्री जैसे अकर्मण्य के पास जा कर रोते हो । आज राष्ट्रीय संकट का विषय है, राष्ट्रीय संकट को हटाया नहीं जाता । लेकिन यह सरकार, चीन हमला करे और यह बहादुर सरकार क्या करे ? यह चिट्ठी भेजे । सन् ५० से लेकर सन् ६० तक चीन ने ३० हमले किये और इस बहादुर सरकार ने ३० चिट्ठियां भेजीं । यह राष्ट्रीय संकट हटायेगी ? और यदि राष्ट्रीय संकट को दूर करती होती तो सन् ४७ में जिस प्रान्तीय रक्षक दल की स्थापना हुई थी और जिसकी स्वर्गीय गोविन्द बल्लभ पंत ने की थी उसको हटा कर क्या जरूरत थी होमगार्ड की स्थापना करने की ? अगर उस प्रान्तीय रक्षक दल को प्रोत्साहन दिया जाता, उसे सबल बनाया जाता और अगर उसको गांव-गांव में कायम कर दिया जाता तो चीन जैसे अफीमची, चीन जैसा हिजड़ा मुल्क या पाकिस्तान जैसा खराब और बेईमान मुल्क हमारी भारत माता को आकर न रौंदता ।

श्रीमन्, यही नहीं एक बात और है । यह संकट हटाना चाहते हैं । जिस पुलिस की मिट्टी उठ रही है, जिसे बदनाम किया है इधर के लोगों ने और उधर के लोगों ने, उसकी मिट्टी कूटी है डेढ़ दिन पहले और यही नहीं जनता ने भी उसकी मिट्टी कूटी है उस निकम्मे पुलिस विभाग की तो यह तरक्की करें और प्रान्तीय रक्षक दल को कुचल कर रख दें । यह राष्ट्रीय संकट को हटाने की स्कीम नहीं है ।

अगर आपको राष्ट्रीय संकट हटाना है तो देखिये हम आपको सुझाव देते हैं । फिर चेतो फिर समझो और अगर नहीं समझोगे, नहीं मानोगे तो इस देश पर जो पूंजीपतियों और सरकार का संकट है, आपका राष्ट्रीय संकट खत्म हो जायेगा । यह होमगार्ड की जो चर्चा चल रही है, इसका जहां तक मुझे पता है, एक कम्पनी कमान्डेन्ट होता है उसको यह तनख्वाह ५० रुपये देते हैं और प्लाटून कमाडेन्ट को २५ रु० देते हैं जो कि गांवों में ब्लाक में रहते हैं । जरा होश में

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

आकर मंत्री जी यह सुनिये। आप प्लाटून कमांडेन्ट को २५ रु० देते हो और ग्राम सेवक को क्या देते हो ? १२० रुपया। ग्राम सेवक को १२० रु० और राष्ट्रीय संकट का मुकाबिला करने वाले लोगों को २५ रुपया ! धिक्कार है इस सरकार को। (व्यवधान) अधिष्ठाता महोदय, जरा इस को रोकिये। यह कड़वी कुनैन पिला रहा हूं। अगर सरकार दांती खोलकर पीले तो बीमारी कट जायगी, नहीं पीयेगी तो नहीं कटेगी। मैंने देखा है महीने में एक बार परेड को बुलाया जाता है, जो गांव में प्रान्तीय रक्षक दल में भर्ती किये गये हैं। क्या दिया जाता है ? एक दो रुपये। एक दिन के लिये परेड करायी जाती है, वर्दी दी जाती है। फिर वर्दी भी उतरवा ली जाती है और कान पकड़ कर कह दिया जाता है, जाओ। उन्होंने माननीय सदस्यों से शिकायत की। इसका परिणाम सभी माननीय सदस्यों को भुगतना होगा। मैं प्रान्तीय रक्षा दल के लोगों से अनुरोध करूंगा कि अगर गांधी जी के सच्चे सिपाही देशभक्त हो तो सरकार को १९६७ में पलट दो। मेरे बन्धुओ....

श्री अधिष्ठाता—

माननीय सदस्य मुझे सम्बोधित करें।

श्री लखीसिंह—

अधिष्ठाता महोदय, मेरे खून को पहले अंग्रेज पी गया और अब यह सरकार पीती है। इसमें खून रहा नहीं, इस में हड्डी बाकी रह गयी है। श्रीमन्, मुझे समय देते रहेंगे। होमगार्ड के सबसे बड़े अफसर हैं मिराजुद्दीन कमाडेन्ट जनरल। यह पहले मेरी कमिश्नरी में डी० आई० जी० रहे। तब तक आगरा कमिश्नरी में पुलिस बिना नकेल और बिना लगाम नहीं बनी थी। लेकिन यह कमान्डेन्ट जनरल बेचारा क्या करे ? प्रान्तीय रक्षक दल का बजट घटता ही गया और सरकार का बजट १९४७ में ४२ करोड़ था और १९६६-६७ में २९३ करोड़ हो गया। क्या यह राष्ट्रीय संकट हटाना है ?

एक सुझाव देकर हम बन्द हो जायंगे। जरा नोट करते जाओ। हर न्याय पंचायत में एक टोली होमगार्ड, प्रान्तीय रक्षक दल की कायम कर दो। उसको चौकी करार दे दो। और वही ग्रामीणों की रिपोर्ट भी लिखे और ये भले आदमी थाने के बेईमान हो चुके हैं, रिपोर्ट लिखने में पैसा लेते हैं। (एक आवाज—उनमें भी देशभक्त होंगे।) वे देशभक्त हैं, उनमें से बहुत से हैं लेकिन होमगार्ड और प्रान्तीय रक्षक दल के लोगों की बाबत तो मैं कह सकता हूं कि उनको यह काम दीजिये, प्रदेश का कल्याण होगा। उनकी एक-एक टोली हर न्याय पंचायत पर रखिये और उनके पास कम से कम ५ राइफल्स होना चाहिये।

अब जो यह नागरिक सुरक्षा की पुस्तक बटी है, मैंने उसको पढ़ा। मुझे बड़ी हंसी आयी। एटा जहां सोलह सोलह कत्ल रोज हों वहां २० की २० चौकियां बना दीं। लक्ष्य २० का, २० बनी, इटावा में १८ लक्ष्य, १८ बना दीं। जहां कत्ल ज्यादा वहां उतनी ही चौकियां बनाई गई जो लक्ष्य था, मुरादाबाद में ३६ का लक्ष्य था १८ कम्पनी बन चुकी है उस मुरादाबाद के बारे में जिसमें रियासत हुसैन रोज हल्ला मचाते हैं कि कत्लेआम हो रहा है। तो जहां कत्ल ज्यादा, डाका ज्यादा, बगावत ज्यादा वहां इनके हिसाब से श्रीमन्, प्रान्तीय रक्षक दल और होमगार्ड होना ही नहीं चाहिये।

श्री अधिष्ठाता—

लखीसिंह जी आप १ या २ मिनट में समाप्त कीजिये।

श्री लखीसिंह—

तो उन चौकियों पर आप अच्छे जवान, जोशीले देशभक्त जवानों की एक एक टोली पंचायत के आधार पर रखिये और उनको भी गांव से ही भरती कीजिये यह न हो कि १०, १० और १५, १५ मील से भरती करके लाये। वे नहीं आते मुसीबत पड़ने पर। डाका पड़े, गुंडे हमला करें तो पुलिस तो आती नहीं क्योंकि ग्यारह ग्यारह मील पर थाने, टेलीफोन है नहीं, सड़क बनी नहीं तो पुलिस तो पहुंचती नहीं। इसलिये यह इन्तजाम करो। पुलिस मंत्री जी

[श्री लखी सिंह]

आप सिंह हो, या तो सिंह की तरह गरजो, सिंह की तरह गरजते हो नहीं, यहां रोजाना हल्ला मचवाते हो। या तो पुलिस को सिंह की तरह संभालो और नहीं तो हट जाओ। क्यों हमारे नाम को बदनाम करते फिरते हो ? हम भी सिंह, कुंवर साहब भी सिंह, हम सब सिंह, तो या तो डिपार्टमेंट में सिंह की तरह गरजो, उसको खींचो और नहीं खींचते तो हट जाओ। एक न एक दिन तो हटना ही पड़ेगा, आज नहीं तो साल भर बाद तो हटना ही पड़ेगा।

श्री अधिष्ठाता—

आपका समय समाप्त।

श्रीमती वृजरानी (जिला कानपुर)—

अधिष्ठाता महोदय, माननीय मंत्री जी ने जो अनुदान पेश किया है उसके समर्थन के लिये खड़ी हुई हूं। हमारे यहां होमगार्ड ने काफी तरक्की की और बड़ी मुस्तैदी के साथ अपना कार्य किया है। यह कार्य बहुत सराहनीय है। जो काम अच्छा करे तो उसको हमें अच्छा कहना ही चाहिये।

आज मुझे भी कुछ थोड़ी सी बात मंत्री जी से कहना है। कटौती का प्रस्ताव पेश करते हुये कुंवर श्रीपालसिंह जी ने यह कहा था कि हमारे दल ने यह बहादुरी का काम किया है। तो मुझे भी याद आजाता है कि प्रान्तीय रक्षक दल और सेवा दल ने जो कार्य किया है और आज भी मुस्तैदी से काम कर रहा है मैं समझती हूं वह बहुत सराहनीय है। सेवा दल के आदमियों को और रक्षा दल के सैनिकों को कोई भी पद नहीं चाहिये और कोई पैसा नहीं चाहिये। उसको किसी बात की चाह नहीं है। सिर्फ वह मान चाहता है। मैं माननीय मंत्री जी से प्रार्थना करती हूं कि आप भले ही जानते और उसको महसूस करते हों कि हमारे इस रक्षा के दल में, होमगार्ड में, नागरिक सुरक्षा में, ग्रामों के होमगार्ड में हमारे छोटे छोटे लोग शामिल हुये हैं तो ऐसी स्थिति में इसकी उपेक्षा न की जाय और इनको तरक्की दी जाय। जैसे हमारे शरीर में हाथ पैर हैं ऐसे ही देश के लिये यह रक्षा दल हाथ पैर है। यह हमने देखा कि ब्लाकों के अन्तर्गत जहां पर भी आप रक्षा दल को लगा दीजिये वह पूरा कार्य करके छोड़ेगा। मंत्री जी इस बात को जानते हैं कि रक्षा दल कभी भी अपने कर्तव्य में पीछे नहीं रहा है। किसी काम में पीछे नहीं रहा है।

ब्लाकों के अन्तर्गत जहां ये आर्गनाइजर हैं तो उन बेचारों की क्या दशा है यह किसी से छिपी हुयी नहीं है। मैं आप से यह प्रार्थना करना चाहती हूं कि वे एक पैसा नहीं चाहते हालांकि आज के जमाने में बिना आर्थिक सहायता के काम नहीं चलता है फिर भी स्वाभिमानी आदमी पैसे के पीछे नहीं मरता है। मैं यह चाहती हूं कि प्रान्तीय रक्षादल जो ब्लाकों में काम करता है उनका नामकरण जरूर किया जाय। उनका स्थान हो। ब्लाकों में जो ए० डी० ओ० होता है उसके बराबर उसका नामकरण किया जाय ताकि उनको संतोष हो और उनको कुछ मौका तरक्की करने का मिले। वह आगे चलकर अच्छा काम कर सकें और ए० डी० ओ० हो कर कहीं जा सकें तो हमारे लिये बहुत अच्छा होगा। ज्यादातर मैं देखती हूं कि हमारे संगठन के लोग उसमें कार्य कर रहे हैं। इधर उनको कुछ ट्रेनिंग दी जाती है तो उनको इसका पैसा भी देना चाहिये। इधर होमगार्ड के कमान्डेन्ट प्रान्तीय रक्ष दल और सेवा दल दोनों के हैं। वह बेचारे जो कुछ कर सकते हैं करने की कोशिश करते हैं। उन पर जो खर्चा होता है वह पंचायत डाइरेक्टर के मातहत होता है। एक परेशानी वह होती है जहां पर प्रा० र० द० का आदमी आर्गनाइजर ८० रुपये पाता है वहां ग्राम सेवक की बड़ी जिम्मेदारी रहते हुये भी कम पाता है। तरक्की का, विकास का सारा भार और अधिक अन्न उपजाओ स्कीम का भी सारा काम ग्राम सेवक के ऊपर रहता है। वहां पर हमारे जो ब्लाक आर्गनाइजर होते हैं उन पर भी भार कम नहीं है। इसलिये मैं आप से प्रार्थना करना चाहती हूं कि इस संगठन को हम न भूलें क्योंकि हमारे समाज का संगठन इस रक्षादल के द्वारा ही होता है और होगा। मैं आपको बताऊं कि मैंने भी सेवा दल में काम किया है और इसमें सेवा करने से बड़ा आत्मसंतोष प्राप्त होता

है । मैंने देखा कि यह रक्षा दल जहां भी पहुंचता है सफलता प्राप्त करता है । इसलिये जो आर्गनाइजर्स हैं उनको कम से कम नामकरण तो ए० डी० ओ० किया जाय भले ही आप उनको पैसा न दें । दूसरे इस बात की भी व्यवस्था होनी चाहिये कि जो पैसा खर्च करता है उसी की देख रेख में काम हो । यदि पैसा कोई और खर्च करता है और देख रेख कोई और करता है तो उससे काम बड़ी गड़बड़ी में पड़ जाता है । इससे परेशानी भी होती है । अन्त में मुझे केवल इतना ही निवेदन करना है कि आप इस रक्षादल को न भूलें । शहरों में जो आपने होमगार्ड का संगठन किया है वह ठीक है, लेकिन गांवों का सारा काम यह रक्षा दल द्वारा ही संभव है, उसके लिये आप उसे शक्ति प्रदान करें और आगे बढ़ायें ।

*श्री हरीशकुमार गंगवार—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं राष्ट्रीय संकट से सम्बद्ध व्यय के अनुदान पर जो मद है, उस पर कटौती के प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हुआ हूं । श्रीमन्, यह मद मुझे तो इतनी उपेक्षित दिखाई देती है कि मैंने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को भली प्रकार पढ़ा और वित्त मंत्री जी के भाषण को भी आद्योपांत पढ़ा, परन्तु कहीं भी इस नागरिक सुरक्षा के लिये एक शब्द भी खोज कर नहीं मिला । इसी से यह बात जाहिर है कि सरकार इस अनुदान के लिये कितनी जागरूक है और इस विभाग के कार्यों का कितना विस्तार करना चाहती है । श्रीमन्, इस तमाम साहित्य में जो दिया गया राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर, सिवाय होमगार्ड के और कोई चीज दिखाई नहीं दी जिस से मैं यह समझ सकूं कि आप सुरक्षा की दृष्टि से क्या करने जा रहे हैं और होमगार्ड एक ऐसी मद है कि जिसमें मनगढ़ंत, कपोल कल्पित आंकड़े बड़ी आसानी से दिये जा सकते हैं और किसी बात से इस प्रदेश की जनता को आसानी से भुलावा नहीं दिया जा सकता, लेकिन होम गार्ड का नम्बर कितना ही बढ़ाकर बताया जा सकता है । यद्यपि इस वर्ष और पिछले वर्ष की जो रिपोर्ट है उससे इस सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती क्योंकि यह आपने बहुत ही संक्षेप में छापी है, केवल ८ पृष्ठ और पिछले वर्ष की केवल १० पृष्ठ की है, उसमें भी यह नहीं दिया गया है कि आपने कितने होम गार्डस् पिछले वर्ष में भर्ती किये । मुझे पिछले वर्ष की बात याद है । आपने कहा कि हमने १,२४० कम्पनियां बनाने का जो लक्ष्य रखा था उसमें हम १,१९९ कम्पनियां बना पाये और उसमें १,३१,८९० होमगार्डस् भर्ती हुये किये । लक्ष्य से तो आप कम रहे ही, परन्तु मैं यह भी दावे के साथ कह सकता हूं कि यदि इस १,३१,८९० की संख्या को सही प्रकार से जांचा जाय तो १,३१,८९० तो गलत निकलेंगे, ३१,८९० सही शायद मिल जायं । मैं जांच करवाने की बात नहीं कहता । किसी दिन मंत्री जी एक छोटे यूनिट का निरीक्षण करने चलें तो उनको पता लग जायगा । मैं विवाद में पड़ना नहीं चाहता, मेरा दृढ़ विश्वास है को ये गलत आंकड़े है और अधिक से अधिक गलत है । हां, एक तरफ प्रगति हुई है जनाना होमगार्ड में । १९६४-६५ में कुल संख्या थी १,२८७ उत्तर प्रदेश भर में, वह बढ़कर १९६५-६६ में २,६३० हो गयी । इस तरह वास्तव में सरकार का कुछ ध्यान गया है और जाना भी चाहिये । जब उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री सुचेता कृपालानी हों और देश की प्रधान मंत्री इन्दरा जी हों तो महिलाओं को अवश्य इस में कुछ अधिक भाग और रुचि लेनी चाहिये । लेकिन इस से मैं स्वयं संतुष्ट नहीं हूं कि यह महिला कोर जो कपोलकल्पित और फरजी है, इस से कोई सहायता मिल सकेगी या मिल रही है ।

जहां तक सिविल डिफेन्स, नागरिक सुरक्षा का प्रश्न है, मैं कहना चाहता हूं कि यह भी एक धोखा है । इस में ट्रेनिंग किस प्रकार से दी जाती है । कहा गया कि बरेली में कोतवाली में राइफल ट्रेनिंग मिलेगी । वहां पर लोग ५-६ दिन लगातार जाते रहे, लेकिन ट्रेनिंग का कोई इन्तजाम नहीं किया गया । हो सकता है कि कागज पर लिख दिया गया हो कि हमने ट्रेनिंग दे दी । तो ट्रेनिंग ठीक प्रकार से होनी चाहिये । इस पुस्तिका में यह भी नहीं बताया गया कि ट्रेनिंग कितने आदमियों को दी गयी । इस से जाहिर होता है कि आप कुछ गोलमाल करना चाहते हैं । आपके पास आंकड़े हैं नहीं, इस ट्रेनिंग का अल्लाह बेली है ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री हरीशकुमार गंगवार]

आज भी गांवों में बन्दक, रिवाल्वर के लाइसेंस नहीं हैं और जब हम पूछते हैं तो कहा जाता है कि लोग लाइसेंस लेना नहीं चाहते। जब कि वास्तविकता यह है कि लाइसेंस देने में बहुत सख्ती बरती जाती है और हजारों गांव ऐसे हैं जहां एक भी लाइसेंस नहीं है। एक बात मेरी समझ में आती है कि जब बन्दूक का दाम दो हजार पर अदद के हिसाब से हो गया हो, जब देशी बन्दूकें १२००–१४०० रुपये मार्केट में मिल रही हों और कारतूस ५ रुपये का हो तो निश्चित रूप से देहात का आदमी इस खर्चे को कैसे वहन कर सकता है? साथ ही लाइसेंस भी आसानी से मिले नहीं, पुलिस के दरोगा पर निर्भर रहना पड़े, तहसीलदार की जमानत करने पर रहना पड़े तो इस देश में सुरक्षा नहीं हो सकती। नागरिक सुरक्षा नहीं हो सकती। जब हमारे यहां बन्दूकों के लाइसेंस दिये जाते हैं १००–१००, २००–२०० रुपये हर लाइसेंस पर सुरक्षा कोष के नाम पर पहले वसूल किये जाते हैं और फिर लाइसेंस दिया जाता है। श्रीमन्, आज देहातों की हालत बहुत खराब है। अगर ५–५ रुपये का कारतूस बिकेगा तो देहात वाले उसे नहीं ले पायेंगे और फिर सुरक्षा नहीं रह पायेगी। आपको चाहिये कि आप अपने यहां कारतूसों का कारखाना लगायें और देहात के लोगों को २–४ आने में कारतूस मोहय्या करायें। वरना इस बन्दूक से तो उनकी लाठी ही भली है।

एक सुझाव मैं और देना चाहता हूं। श्रीमन्, हमारे यहां समाज सेवा की जो भिन्न भिन्न संस्थायें हैं जैसे होमगार्डस्, भारत सेवा समाज है, प्रान्तीय रक्षक दल है, जिन्होंने सेवा के अपने अलग-अलग तरीके अपना रखें हैं, इन सब को मिला कर आप एक कर दीजिये। आपने कुछ लोगों को पेंशन देने के लिये जो अलग-अलग मुहकमें कायम कर रखे हैं वह ठीक नहीं है। आप उन सब को एक कर दीजिये, सेन्ट्रल गवर्नमेंट की अगर कोई पाबन्दी है, तो आप होम गार्डस् ही सब का नाम कर दीजिये। इस से आपको अधिक लाभ होगा और आवश्यकता पड़ने पर वह संस्था कुछ कार्य कर सकेगी।

माननीय मेवालाल जी ने कुछ बातें कही, माननीय दत्ता साहब ने भी कुछ कहीं। मैं माननीय दत्ता साहब की बातों का कुछ जवाब देना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि जनसंघ ने कुछ नहीं किया जब चीन और पाकिस्तान ने हमला किया। मुझे तो दत्ता साहब के भाषण को सुन कर ऐसा लगा कि वह अपने टिकट को पक्का करने के लिये, चीफ मिनिस्टर को खुश करने के लिये, जन संघ के खिलाफ इस तरह की बातें कर रहे थे, ताकि उनको अगले इलेक्शन में टिकट मिलने में दिक्कत न हो। हम लोगो ने जो किया, श्रीमन्, वह बताता हूं। श्रीमन्, कांग्रेस में त्रिपाठी ग्रुप में तथा गुप्ता ग्रुप में जो झगड़ा चल रहा था है वह आपको मालूम है। वेस्ट बंगाल और पंजाब में जो आज हो रहा है वह भी आपको मालूम है। दत्ता साहब को, अगर वास्तव में वह कांग्रेस के सिद्धान्तो में विश्वास रखते है तो उन्हें सीधे नागालैड जाना चाहिये, वहां को और मिजो हिल्स की समस्या बहुत भीषण है, वहां जाना चाहिये। श्रीमन्, जब पाकिस्तान ने हमला किया, देहली में चौराहों पर खड़े हो कर जनसंघ के वालन्टीयर्स ने ड्यूटी दी और उनको ड्यूटी के समय में एक भी एक्सीडेन्ट नहीं होने पाया। दत्ता जी को कांग्रेस का कोई भी आदमी उस कार्य को करने के लिये तैयार नहीं हुआ। नन्दा जी ने वहां के कमिश्नर को टेलीफोन किया कि जन संघ के लोगों की ड्यूटी क्यों लगायी, उससे कांग्रेस की प्रतिष्ठा कम होगी। कमिश्नर महोदय ने कहा कि और पार्टी का कोई आदमी युद्ध काम के लिये तैयार नहीं होता। श्रीमन्, पाकिस्तान और चीन के आक्रमण के समय जनसंघ ने इस सरकार के हाथ मजबूत किये। वरना यह कम्युनिस्ट चीन और पाकिस्तान इस देश पर छा जाते।

श्रीमन्, मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस प्रदेश में जब यह हमला हुआ सुरक्षा कोष वसूल किया गया। हमारे यहां बरेली में भी रबर फैक्टरी, माचिस फैक्टरी और कपूर फैक्टरी वालों ने रुपया दिया तथा मुख्य मंत्री ने वह रुपया लिया। परन्तु मैं एक बात कहना चाहता हूं कि कृपया जांच करा लें कि वह रुपया उन फैक्टरियों ने दिया या वहां के मजदूरों या कर्मचारियों ने अपने वेतन से एक-एक या दो दो रुपया काटकर दिया। वही रुपया फैक्टरी वालों ने अपने नाम से दे दिया।

मैं आपको सही बताता हूं कि वह रुपया उन फैक्टरीवालों ने नहीं दिया और यदि दिया भी तो बहुत कम दिया। श्रीमन्, आज पूंजीपतिकी यह हालत है। जब मैं बरेली परिषद में था तो मुख्य मंत्री को रुपया भेंट किया गया कि जैट विमान खरीदा जायगा। नैट रक्षण खरीदने के लिये जिले के हर आदमी पर रुपया डाल दिया गया। वह नैट खरीदा जायेगा या उनसे गल्ले की दुकानें दी गई। और वे भी जब तक पचास पचास रुपया सुरक्षा कोष में नहीं दिया गया तब तक उनको लाइसेन्स नहीं दिया गया। सीमेन्ट पर पैसा बढ़ा लिया गया, दस पैसा अब भी अस्पताल के लिये लिया जा रहा है। तो श्रीमन्, इस तरीके से यह रुपया इकट्ठा किया जा रहा है।

मैं श्रीमन्, एक बात और कहूंगा। जनसंघ और कम्युनिस्ट में एक अन्तर समझा दें माननीय झारखन्डे राय जी को। पता चला कि आज वह भी रूस पन्थी के बजाय चीन पन्थी हो गये हैं। जनसंघ तो है भारतीय जनसंघ और कम्युनिस्ट पार्टी का नाम सी० पी० आई०, कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया यानी वह इन्टरनेशनल है और हम नेशनल हैं। इतनी बात कहकर मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

*श्री नरसिंहनारायण पाण्डेय (जिला गोरखपुर)—

आदरणीय अधिष्ठाता महोदय, वैसे जो माननीय मंत्री जी ने अनुदान पेश किया है राष्ट्रीय संकट का, मैं उसके समर्थन के लिये खड़ा हुआ हूं। मान्यवर, जहां तक राष्ट्रीय संकट का प्रश्न है, १९६२ में चीन ने हमारे मुल्क पर हमला किया और ठीक तीन साल बाद १९६५ में पाकिस्तान का हमारे मुल्क पर हमला शुरू हुआ और उस हमले के बाद देश के अन्दर ऐसा महसूस किया गया कि बाह्य हमला तो हो ही रहा है आन्तरिक सुरक्षा और आन्तरिक संगठन ऐसा तैयार किया जाय जिस संगठन के अन्तर्गत हम अपने कल कारखानों की रक्षा कर सकें। हम अपनी आन्तरिक स्थिति को सुदृढ कर सकें, खेत खलिहानों में ऐसे उत्पादन को कर सकें जिससे जो लड़ाई लड़ने वाले लोग हैं उनको खाना पहुंच सके, उनकी रक्षा कर सकें जिससे हमारी सुरक्षा मजबूत हो सके। बाहरी सुरक्षा मजबूत हो सके, आन्तरिक सुरक्षा मजबूत हो सके। और इसके तहत में सरकार ने ऐसा महसूस किया कि नागरिक सुरक्षा नाम की संस्था कायम की जाय। किसी को भी दो राय नहीं हो सकती कि अगर हमारे मुल्क के ऊपर हमारी सरहद के ऊपर अगर कोई मुल्क हमला करता है और उस समय आन्तरिक सुरक्षा की जरूरत होती है, आवश्यकता होती है तो हम उसे मजबूत न करें? जिस तरह से आज दुनिया की स्थिति चल रही है जिस तरह से दक्षिण पूर्वी एशिया में स्थिति चल रही है इसको देखते हुए, श्रीमन् मुझे ऐसा भय लगता है कि आज हमारी क्या हालत होने वाली है, हमारे देश की क्या हालत होने वाली है। जब हम आन्तरिक सुरक्षा की बात करते हैं तो हमें यह भी समझना पड़ेगा कि हमने जिस जनतांत्रिक पहलू को अपनाया है, जिसे अंग्रेजों को यहां से बाहर करके अपनाया है, क्या उसकी भी रक्षा हो पावेगी इस माहौल में या नहीं। मुझे तो साफ तरीके से सरकार से और जनता से यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि देश की हालात को देखते हुए, चाहे वह मीजों हो, बंगाल हो, बम्बई हो या बाहरी देश हों जो हमारे दुश्मन हैं, उनकी गतिविधियां हों, मुझे तो साफ नजर आता है कि हमारे देश में भी जनतांत्रिक पद्धतियां मजबूत हो पावेंगी या नहीं। मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूं कि इसके जिम्मेदार हम भी ठहराये जावेंगे और आप भी ठहराये जावेंगे अगर जनतांत्रिक पद्धतियों के कमजोर होने के कारणों को हम समय रहते हुए भी ठीक नहीं कर पाये तो हमारी आन्तरिक सुरक्षा तो खत्म होगी ही लेकिन हमारी जनतांत्रिक पद्धतियां भी जिनके लिये बहुत से लोगों ने फांसी के तख्ते को चूमा है बहुत बड़े खतरे में पड़ जावेंगी। मैं उधर के बैठने वाले दोस्तों को चेतावनी देना चाहता हूं कि आज की परिस्थितियों को वे अच्छी तरह से समझें। मैंने कल भी कहा था और आज दोहराता हूं कि स्थिति यह है कि आप इतना तो कह सकते हैं कि इधर के बैठने वाले भ्रष्टाचारी हैं इनको शासन चलाने का शऊर नहीं है, लेकिन कल आप भी इसी गद्दी पर बैठोगे। तब आप क्या महसूस करेंगे, क्या आपको तब ऐसा अवसर मिलेगा?

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री नरसिंहनारायण पाण्डेय]

पिछले साल माननीय कुंवर श्रीपाल सिंह जी ने एक भाषण दिया था और अगर मुझे ठीक याद है तो उन्होंने कहा था कि हजरत गंज के एरिया में ७ ट्रांसमिटर सेट्स मौजूद हैं। आज उनका क्या हुआ? न तो सरकार की ओर से कोई स्पष्टीकरण आया और न माननीय सदस्य ने उनके बारे में जो उनकी जांच थी उससे सदन को अवगत ही कराया। आज एक ट्रांसमिटर सैट के लिये फिर उन्होंने कहा कि जब पुलिस जांच कर रही थी तो एक साहब रिक्शे पर लिये भागे जा रहे थे। यह अलिफ-लैला का किस्सा मत बनाइये। आप वास्तविकता को समझिये। जो कोई भी राष्ट्रद्रोही है उसे बर्दाश्त कोई भी जनतांत्रिक सरकार नहीं कर सकती। हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जिसमें हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी सब हैं हर मजहब के लोग हैं, और हमारे भारतीय संविधान के बनाने वालों नें एक मौलिक आधार अपनाया है जिससे हम देश की रक्षा एक बद्ध होकर कर सकते हैं। लेकिन जब राजनीति में धर्म घुस जाता है तो देश की सीक्योरिटी, आन्तरिक सुरक्षा, एकता और अखन्डता खतरे में पड़ जाती हैं। आज ऐसी स्थिति इस देश में विद्यमान हो रही है। हमारा आज मखौल उड़ाया जा रहा है।

कुंवर श्रीपाल सिंह जी को आश्चर्य हुआ कि यूरोप में चर्चों में घन्टे बज रहे हैं कि हिन्दुस्तान में भुखमरी है। हमारे एक रिश्तेदार जो आज कल अमरिका में हैं, उनका खत मुझे मिला था। उन्होंने लिखा था कि वहां आज हिन्दुस्तान की भुखमरी फिल्मों द्वारा दिखाई जा रही है सड़कों के ऊपर लोगों को कि अनाज का बड़ा संकट हो गया है। जो भी स्थिति हो, हमारे देश की परम्परा रही है कि अगर हमारे पड़ोस में कोई भूखा मरता है तो दूसरा आदमी उसे देख नहीं सकता है और उसकी अवश्य मदद करता है। दुनिया में हमारा मखौल उड़ाया जाय, हमारी बदनामी की जाय कि हम भुखमरें हैं, हम चावल और गेहू मांगे, और चर्चों में घंटे बजें, इससे अधिक शर्म की बात और क्या हो सकती है? इसका कारण बहुत साफ है। जब माननीय मरहूम रफी अहमद किदवई साहेब फुड मिनिस्टर थे भारत के, उस समय मुझे याद है, इत्तिफाक से मैं भी उनका एक कार्यकर्त्ता था, उन्होंने डाइरैक्टर आफ एग्रीकल्चर को बुलवाया और उनसे कहा कि हम अनाज का कट्रोल हटाना चाहते हैं। सारे भारत का दौरा करके वह आये थे। डाइरैक्टर ने कहा कि यह आप क्या करने जा रहे हैं, यह मुमकिन नहीं है, बहुत खराबा हो जायगा। आप मौत का सामना करने जा रहे हैं वह जवाहरलाल जी के पास गये, उनसे भी कहा कि किदवाई साहेब कट्रोल हटाना चाहते हैं। आर्थिक शास्त्र क्या है? सप्लाई डिमान्ड का मतलब क्या है? यही कि अगर किसी चीज की सप्लाई जरूरत से कम है तो उसका कट्रोल करना चाहिये। लकिन रफी अहमद किदवई ने इस आर्थिक शास्त्र की जरा भी परवाह नहीं की और फ्री कर दिया। कंट्रोल तोड़ा। स्थिति क्या हुई? सारे देश में जो चीजें लोगों को मयस्सर नहीं हो सकती थीं, २।। सेर पर गेहूं चला आया। हर चीज की स्थिति ठीक होती चली गई। आज इस सरकार न सीमेन्ट का कट्रोल तोड़ा। सीमेन्ट के लिये सप्लाई आफिस के दरवाजे पर लोग खड़े रहते थे, सप्लाई अफिसर का सिर कूटते थे। कंन्ट्रोल टूटने पर क्या हालत हुई?

आज उस इकाई को लीजिये जो हमारी आन्तरिक सुरक्षा की सब से बड़ी कड़ी बन गई है। आज उस स्थिति को हमारी सरकार को समझना पड़ेगा। आन्तरिक सुरक्षा के लिये अगर आप बजट को देखें तो आप पावेंगे कि पे रेशनैलाइजेशन कमेटी की रिपोर्ट को लागू करने के लिये ७ हजार रुपया चाहिये, सिविल डिफैन्स के परसोनैल की ट्रेनिन्ग के लिये ६२ हजार रुपया है, डिवीजनल डिस्ट्रिक्ट हेड-क्वार्टर्स पर २५ लाख रुपया चाहिये और प्रान्तीय रक्षा दल जो पुरानी संस्था थी वह तो अब नेस्तोनाबूद हो गई है। अगर उसे होम गार्ड में मर्ज कर दिया जाय तो भी हमारी समझ में आ सकता था। यह हमारे गांवों के नेताओं को प्रशिक्षित करने में एक बड़ी इकाई थी लेकिन आज माननीय मत्री जी के भाषणसे भी ऐसा लगा कि हमारी तमाम कोशिशों के बावजूद भारत सरकार उधर ध्यान नहीं दे रही है। प्रान्तीय रक्षा दल हमारी बहुत सुपृढ़ और मजबूत इकाई थी जो हमारे गांवों की आन्तरिक सुरक्षा को देखती थी। आन्तरिक स्थित के लिये अगर दोनों तरफ के बैठनेवाले लोग राष्ट्रीय संकट की बेला को समय रहते हुए भी ठीक नहीं करेंगे और इसे दलगत राजनीति का साधन बनावेंगे तो मैं आपसे बहुत विनम्र शब्दों में कहना

चाहता हूं कि जिस जगह पर हम बैठे हैं उस जगह बैठे न रह सकेंगे और देश के अन्दर मिलिटरी डिक्टेटरशिप हो जायगी। इस आन्तरिक सुरक्षा को डर बाहर से भी है और भीतर से भी है। इन शब्दों के साथ मैं इस अनुदान का समर्थन करता हूं।

श्री उग्रसेन--

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं माननीय श्रीपाल सिंह जी द्वारा प्रस्तुत कटौती के प्रस्ताव के समर्थन में २–३ बातें सामने रखना चाहता हूं। अभी माननीय पान्डेय जी बोल रहे थे। अपने भाषण के अंतिम चरण में उन्होंने देश की वर्तमान स्थिति का थोड़ा चित्रण किया कि हवा किधर से आ रही है और किधर को जा रही है। मैं समझता हूं कि माननीय पान्डेय जी और दूसरे सदस्य भी इससे इत्तफाक करेंगे कि जब देश में ७५० महंगाई का आंकड़ा हो गया हो अन्न न मिल रहा हो, दवा के लिये कुनेन न मिल रही हो, रहने के लिये आसमान का साया हो, मां बहनों को श्रीमती सुचेता जी के ही जमाने में घर से बाहर निकलना इसलिये मुश्किल हो रहा हो कि उनके पास तन ढकने को कपड़ा न हो। एक द्रोपदी के चीर हरण पर तो महाभारत हो गया था लेकिन यहां की सड़कों पर अनेकों द्रोपदियों के चीर हरण होते हों, ऐसी स्थिति में श्री हरगोविन्द सिंह होम गार्ड्स व्यवस्था नहीं कर सकते। सरकार अगर हरगोविन्द सिंह से चाहे कि उनको ३.८९ करोड़ रुपया देकर २२ कंपनियां बनवा कर १३६० महिलाओं की जनाना फौज बनवा कर सुरक्षा करना चाहे तो यह असंभव है। यह जिम्मेदारी अकेले हरगोविन्द सिंह जी की नहीं है यह श्रीमती सुचेता कृपालानी की है, सारे मंत्रिमंडल की है सभी सदस्यों की है। नीरज की एक लाइन है--

"सूखी अंतड़ियों को संदेश सुनाने वाले, भूख इंसान को गद्दार बना देती है।" चीन ने जब भारत पर चढ़ाई की तो भारत की फौजें भागीं। उनके पास कारतूस ही न थे, बन्दूकें नहीं थीं। एक दिन में ३० मील भाग गये। जब चीन गांवों में आया तो उसने कहा कि हम तुमको खाने को देंगे और आपने जो चुरा कर मिठाइयां रखीं थीं उनको उसने गांवों को दावत दी। माना गांव में आये तो वहां के बीमारों की दवा की। पहाड़ों में जहां भुखमरी है, पिछड़ा हुआ है वहीं उसका हमला सफल हुआ। सारे प्रदेश में भुखमरी है और यह सरकार १८ सालों में उसको दूर न कर सकी, दिन पर दिन वह बढ़ती ही गयी, लोग नंगे हो गये और मेजा तहसील में बहुत से लोग भुखमरी से मर गये। और इधर हमारे सुब्रमण्यिम साहब भीख मांग रहे हैं। ऐसा भिखमंगा काशी का पन्डा भी न होगा। वह कहते हैं कि भूख से कोई नहीं मरा। बंगाल की हालत तो सब को मालूम ही है, केरल में हो ही चुका है। महाराष्ट्र बन्द होने जा रहा कि नायक ने मजदूरों की मांगों को मान लिया है। राजस्थान में २९ मार्च, ६६ को होने वाला है बिहार में भी हालत खराब है। चारो तरफ आग है लेकिन प्रदेश की सरकार को अहसास नहीं हो रहा है। यह सुरक्षा कैसे चलेगी। साढ़े ६ करोड़ रुपया सुरक्षा कोष में जमा हुआ। चन्द्रभानु गुप्ता मुख्य मंत्री थे जिनके राज्य में चन्द्र और भानु दोनों गुप्त थे। उन्होंने क्या किया डेढ़ करोड़ रुपए का गड़बड़ कर के एक ट्रस्ट बना दिया और अपने आदमी उसमें रख दिये। माननीया मुख्य मंत्री ने जब अपने भाषण विधान परिषद् में दिया तो उनके भाषण से हमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ जब उन्होंने कहा कि जो किया गया वह अच्छा ही हुआ। मैं जानना चाहता हूं कि वह कौन सी संसदीय परम्परा थी कि उसमें उन्होंने अपने गुट के सदस्यों को नामिनेट दिया और फिर इस बात का क्या जबाब है कि उस सुरक्षा कोष के पैसे की दूसरी मदों में डाल दिया गया।

हमारे बुजुर्ग बैरिस्टर मुकन्दी लाल जी कहां हैं वह जानते है कि किस तरह से जब गुप्ता जी मुख्य मंत्री थे और उनके यहां स्मगलिंग ऊन का होता था और उस पर मुख्य मंत्री जी ने कहा कि ३० मन ऊन दे दीजिये और ३ करोड़ के ऊन का स्मगलिंग कीजिये। यह होता है सुरक्षा के पैसे से और एक मिसाल मैं दे दं। श्यामबिहारी, अध्यक्ष, जिला परिषद्, बनारस अपनी रसीद पर १ लाख रुपया खा गये और उनके खिलाफ जब केस चला तो उन्होंने जज के यहां दरख्वास्त दी कि हम पबलिक सर्वेन्ट हैं हमारे खिलाफ बगैर सरकार से मंजूरी लिये मुकदमा नहीं चलाया जाना चाहिये। जज ने कहा ऐसा नहीं है और हाईकोर्ट ने फैसला किया कि उनके खिलाफ

[श्री उग्रसेन]

वह वापस होना चाहिये । मैं जानना चाहता हूं कि सरकार ने उनके खिलाफ क्यों मुकदमा नहीं चलाया जब कि वह इस तरह से जनता का एक लाख रुपया खा गये । मैं माननीय गृह मंत्री जी से कहूंगा और आपसे भी श्रीमन् मैं कहूंगा कि विरोधी पक्ष के कितने लोग हैं कि जो खुफिया तरीके से सुरक्षा कोष का पैसा खा गये। सुरक्षा कोष गरीबों ने भी दिया है, गोरखपुर जिलाधीश ने हुक्म दिया कि सुरक्षा कोष में सहायता दी जाय । अनाज घरों से लोगों ने दिया जहां कि बाढ़ से लोग त्रस्त थे । उन्होंने अपना भोजन छोड़कर अन्न दिया लेकिन आज इस सुरक्षा कोष का क्या हो रहा है ? जो सुरक्षा के जिम्मेदार थे वह भक्षक हो रहे हैं वह रक्षक नहीं हैं तो नर सिंह पान्डेय जी हमारी सुरक्षा इनके हाथों होगी यह असम्भव है । सुरक्षा तभी सम्भव है जब यह सरकार वहां से हटेगी । आज जो देश की हालत है जो मंहगाई है जनता की परेशानी है जो अराजकता है, जो चोरी, डकैती के आंकड़े बढ़े है उनको आप देखें तो पता चलेगा कि क्या हालत हो गई है । हमें दुख है कि इस वर्ष गृह विभाग से वह पुस्तकें नहीं छपीं । अगर वह कहते है तो छपी होंगी लेकिन आप देखेंगे कि उसमें चोरी, डकैती, राहजनी बढ़ी ही होगी । लेकिन देखना यह है कि इसका कराण क्या है कि १८ साल की इनकी हुकूमत के बाद भी समाज का स्तर इतना गिरा है और एक ऐसा मनोवैज्ञानिक माहौल बना है जिसकी वजह से चोरी डकैती बढ़ी है और अरक्षा की स्थिति पैदा हुई है ।

अवार गांव का मामला है एटा जिले का वहां महावीर डाकुओं के गिरोह ने १६ कत्ल किये। वहां हमारे श्री राज नारायण जी गये और उन्हों ने अपनी रिपोर्ट उस कान्ड के संबंध में की है और उन्होंने कहा कि पुलिस की एक टुकड़ी एक मास पहले से अवार गांव में तैनात थी । जब डाकू लोग आ गये तो उनके घर की एक लड़की किसी तरह से निकल कर भागी और उसने ठीक वक्त से जाकर इत्तिला दी कि इस तरह से डाकू आ गये हैं और लूट रहे हैं लेकिन फिर भी वहां पुलिस नहीं पहुंची । जब राज नारायण जी ने अपने बयान में कहा कि वह लड़की रोने लगी और फिर भी कोई मौके पर नहीं पहुंचा तब मैंने सोचा कि किस तरह से १८ साल से यह राज चल रहा है । वह केवल अयार गांव का ही हाल नहीं है सब जगह सूबे भर में वही अराजकता है और शांति सुरक्षा को हर तरह का खतरा है ।

अब होम गार्ड की बात लीजिये । मैं तो "होमगार्ड" शब्द का ही विरोधी हूं । सन् १९४२ में ये होमगार्ड क्या करते थे ? ये लोगों को गिरफ्तार करते थे, माननीय गृह मंत्री के खिलाफ सी० आई० डी० का काम करते थे । होम गार्ड माने देश के कौमी गद्दार कुछ और ही इनका नाम होता, रक्षम दल रखा जाता, आजाद हिन्द फौज की तरह कुछ और नाम दिया जाता ? लेकिन वर्तमान नाम जो है इससे तो गुलामी और अंग्रेजियत की बू आती है । इस होमगार्ड को कायम करने का नतीजा यह हुआ कि कुछ बड़े-बड़े अफसर बन गए । हमारे बरहज में होम गार्ड का कुछ प्रशिक्षण हुआ । आज कल हिसाब किताब की जांच हो रही है कि १३६५ रु० कौन खा गया । मेरे पास लोग आये मैंने कहा कि मेरी इसमें दिलचस्पी नहीं है । राशन की दूकान पर होम गार्ड के चपरासी जाकर बिचारे पहरा देते हैं । सब जिलों के "कलेक्टरों ने दो, दो रुपया दे दिया लेकिन देवरिया जिले के कलेक्टर ने कहा कि हम इस बारे में नहीं लिखेंगे । मैं कहता हूं कि प्रान्त की सुरक्षा इस तरह नहीं होगी, अगर आप प्रान्त की सुरक्षा चाहते है तों जनता को हथियार दो सस्ते । सस्ते से मतलब यह नहीं है कि ५ रु० में कारतूस दो, १००, १०० रु० में बन्दूकें दो । जब जनता के पास हथियार होंगे तो वह स्वतः अपनी रक्षा करेगी । डाकुओं के इलाके में चले जाइये बड़ी बन्दूकें हैं लेकिन जहां बन्दूकों की जरूरत है वहां नहीं है । अब आप ही बतलाइये कि फिर सुरक्षा कैसे होगी । "हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम, वह कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती" ।

माननीय चन्द्रभानु गुप्त जी से पूछिये कि १० जिलों में गये, २९ लाख की थैली आप को ही मिली, माननीय हरगोविन्द सिंह को क्यों नहीं मिली । माननीय कल्पनाथ सिंह जी आप माननीय चन्द्रभानु जी की मूर्ति बना कर रोज मन्दिर में पूजा करें हमें कोई एतराज नहीं । मैं

कहता हूं कि माननीय गुप्त जी को डी० आई० आर० में बन्द करने से पहले श्रीमती सुचेता कृपालानी जो पाप कर रही हैं इनको पहले डी० आई० आर० में बन्द करना चाहिए। आज मनमानेपन, अरक्षा की कीचड़ वहां से बह रही है और जब हम लोग जाते हैं तो कहते हैं, जरा मुलाहिजा फरमाइये, जरा आप लोग चुप हो जाइये मंत्रियों को हम निकाल देंगे। हम कहते हैं माननीया मुख्य मंत्री जी आप चपरासी को निकाल नहीं सकती, मंत्रियों को क्या निकालेंगी। हम जब किसी मंत्री के बारे में कहते हैं तो कहती हैं कि अच्छा वह मंत्री बदमाश मालूम होता है जैसे उनको कुछ पता ही नहीं है। मैं सच कहता हूं कि माननीय चन्द्रभानु गुप्त जब मुख्य मंत्री थे उनके राज्य में इतना जुल्म नहीं हुआ और नियम, कानून की अवहेलना नहीं हुई जितनी कि माननीया सुचेता कृपालानी के समय में हो रही है। माननीय चन्द्रभानु गुप्त सारे इंजीनियरिंग कालेजों और सुरक्षा कोष के मालिक हो गये।

चीन की लड़ाई के जमाने में ३६ हजार रुपया तारिकाओं पर खर्च हो गया जब हमारे फौजी वहां से भाग आये। और यह रुपया किसलिए खर्च हुआ? जवानों का मनोरंजन करने के लिए। मैं भी श्रीमन, बम्बई में रहा करता था और कालेज में जब पढ़ाने जाता था तो रास्ते में सिनेमा स्टूडियो देखा था मैंने कहा कि जरा देखूं उसमें सूची में कौन-सी तारिकायें हैं। जब देखा तो सब ४ रु० ६ आना वाली एक्स्ट्रा निकलीं और उनको नवल किशोर जी नचाने ले गये ३६ हजार रु० खर्च करके ले गये क्या करें, माननीय हरगोविन्द सिंह जी ने चिट्ठी लिखी माननीय नवलकिशोर जी को।

आन्तरिक सुरक्षा कोई अकेले की चीज नहीं है बल्कि सब के सहयोग से यह काम होता है। अगर हम भूखे रहेंगे, नंगे रहेंगे, अगर हमारी बात को सरकार नहीं सुनेगी तो यहां भी वही हाल होगा जो बंगाल में हो रहा है, महाराष्ट्र में हो रहा है, और यह सरकार बच नहीं सकती। ये विधायक जो यहां बैठे हुए हैं यह भी समझ रहे हैं चलो हमको डी० आई०आर० में थोड़े ही बन्द होना है जरा वे भी कान खोल कर सुन लें। हम भाषण करते-करते अगला ६७ का चुनाव मार ले जायंगे यह स्थिति नहीं है। उनके क्षेत्र की जनता हमला करेगी और कहेगी हमको रोटी दो। इन शब्दों के साथ में समझता हूं सरकार चेतेगी।

श्री जे० पी० मिश्र (जिला हरदोई)—

अधिष्ठाता महोदय, राष्ट्रीय संकट का जो यह अनुदान प्रस्तुत है जिस पर बाबू उग्रसेन साहब बड़ा नाटकीय भाषण दे रहे थे, उसको मैंने सुना। लेकिन मुझे जो आसार दिखाई पड़े हैं वह मैं बाबू उग्रसेन साहब को बतलाना चाहता हूं। वह यह है कि जिस तरह से राष्ट्रीय संकट का प्रश्न चीन और पाकिस्तान इन दोनों आततायियों के मुकाबले में, हमारे सामने था, और उस पर इस देश और प्रदेश में विचार हुआ। मैं देखता यह हूं कि गम्भीरतापूर्वक उस संकट का मुकाबला केन्द्रीय सरकार और प्रदेश की सरकार बहुत अच्छी तरह से कर सकी है और कर लेगी, लेकिन जो संकट माननीय उग्रसेन साहब पदा कर रह ह इसका क्या इलाज है, इसका कैसे मुकाबला होगा—इस पहलू पर भी इस उत्तर प्रदेश की सरकार को बहुत गम्भीरतापूर्वक विचार करना है।

पश्चिमी बंगाल में जिस तरह से कदम उठाये गये, जिस तरह से केरल में कदम उठाये गये, जिस तरह से बम्बई में कदम उठाये गये, जिस तरह से राजस्थान में कदम उठने वाले हैं और जिसका आभास माननीय उग्रसेन साहब ने उत्तर प्रदेश में दियाहै तो क्या सारे प्रदेशों और उत्तर प्रदेश के विरोधी दलों का मकसद प्रजातांत्रिक प्रणाली की हत्या करना है? अगर हत्या करना है तो बहुत सफाई के साथ देश और प्रदेश की जनता से उनको कह देना सब से अच्छा होगा। गुमराह करना, बरगलाना, गलत तरीके से देश और प्रदेश की जनता को दूसरे रास्ते पर घुमाना, हिंसात्मक मनोवृत्ति पैदा करना, इस सदन की गरिमा और महिमा को खत्म करना यही सब विरोधी दलों का कार्यक्रम है तो देश और प्रदेश की जनता इसका स्वागत करती है। न रहे बांस न बजे बांसुरी। प्रजातंत्र खत्म हो और तानाशाही आकर ही रहे भी। न अधिष्ठाता महोदय रहें न हम रहें न उग्रसेन रहें और न विरोधी पक्ष रहे। सारा मकसद यही है और इस बारे सारे मकसद को

[श्री जे० पी० मिश्र]

लेकर विरोधी दलों को यह कार्यक्रम चलाना है तो स्वागत है। उसके लिये आपको पूरी आजादी है। कुंवर श्रीपाल सिंह समझदार आदमी हैं, यादवेन्द्र दत्त जी भी एक पार्टी की रहनुमाई करते हैं, झारखंडे राय साहब एक दल को लेकर चलते हैं और बाबू उग्रसेन तथा हम तो पेशेवर पुराने हैं और पेशे में किसी तरह की कमी नहीं है। वह बाज नहीं आयेंगे। हम सब गम्भीरता से इस पर विचार करें क्या हम प्रदेश की जनता को ठीक रास्ते पर ले जा रहे हैं? हमारी जिम्मेदारी इस प्रदेश के अन्दर महदूद है? हमारा एक-एक कदम, एक-एक शब्द आज प्रदेश की जनता को रास्ता दिखाता है या बिगाड़ता है? प्रजातन्त्र और प्रजांत्रिक सिद्धांतों की सुरक्षा है अथवा नहीं है? इस पर गम्भीरता-पूर्वक इस सदन में विचार किया जा सकता है।

पांचवें वर्ष का यह आखिरी वर्ष है। इसके बाद कौन चुन कर आएगा, कौन नहीं आएगा इसका अभी प्रश्न नहीं उठता। जिन प्रजातांत्रिक सिद्धातों को लेकर हम इन विधान सभाओं में आए हैं क्या उनके अनुसार हमने काम किया है? और कर रहे हैं। मांगें हो सकती हैं, राजनीतिक मैनीफेस्टो हो सकते हैं, लेकिन उनकी सीमा प्रजातन्त्र के अन्दर होनी चाहिए प्रजातांत्रिक सिद्धांतों के बाहर अगर कोई कदम हमारा या आपका हो तो उसके ऊपर हमें और आपको गम्भीरतापूर्वक विचार करना है। श्रीमन्, यह सरकार प्रजातांत्रिक सिद्धांतों के अन्दर बनी हुई है। आज हमारा बहुमत है। मान लीजिए सन् १९६७ में आप आ गए, तो सबक तो वही हम सीखेंगे जो आज आप पढ़ा रहे हैं। जो ट्रेनिंग आज आप दे रहे हैं कुर्सी पर खड़े हो कर और जिस भाषा का प्रयोग आप कर रहे हैं, आप बहुमत में अगर आ भी जायं तो १०-२० और २५ तो कांग्रेस पार्टी से भी चुन कर आयेंगे, तो जो कदम आपका है अगर वही कदम हम भी दोहराने लगें उस दिन इस प्रदेश और देश में प्रजातांत्रिक सिद्धांतों का खून हो जायगा। मैं अपने माननीय साथियों से यह निवेदन करूंगा कि देश और प्रदेश की राजनीति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें। ऐसा न हो कि हिन्दुस्तान के चारों तरफ जो हाल है, अफ्रीका का जो हाल है वही हालात हिन्दुस्तान में पैदा हो जायं। इतना बड़ा खतरा, हमें इस विधान सभा के अन्दर बैठने वालों को बचाना है। जो ४३० रहनुमा इस प्रदेश के हैं इनका एक-एक शब्द अगर तौल अगर प्रदेश की जनता के पास पहुंचता है। चुनाव ही अकेला मकसद आपका नहीं है।

श्रीमन्, बहुत भाषण दिए गए, भुखमरी का जिक्र किया गया। जिस गांव से आप आते हैं उसी गांव से मैं आता हूं। कुछ शहर वाले नुमाइन्दों की बात आप छोड़ दीजिए। राजा यादवेन्द्रदत्त की बात आप छोड़ दें। वे बड़े लोग हैं। लेकिन जो छोटे-छोटे लोग हैं, जिस इलाके से आप चुन कर आते हैं, मैं पूछना चाहता हूं उनसे कि अब तक उत्तर प्रदेश में क्या एक भी बच्चा भुखमरी का शिकार हुआ है।

दवाइयों की बात कही गयी। अरे, ये बातें आप गवर्नर विश्वनाथ दास के सामने सुनाइए जो गवर्नमेंट हाउस में बन्द रहते हैं। सुचेता कृपालानी, हरगोविन्द सिंह और जे० पी० मिश्र को न सुनाइए क्योंकि ये सब इलाकों से चुन कर आए हैं, गली-गली घूमते हैं। मौत का जहां तक ताल्लुक है, आप तो पढ़े लिखे लोग हैं, डेथ और बर्थ रेट में कितना अन्तर है जरा बता दीजिए। मौत के दिन कितने घटे और तन्दुरुस्ती के दिन कितने बढ़े। एक, दो घंटे का फर्क नहीं है, फर्क हुआ है १५ वर्ष का। अब भी दवाओं का अकाल है। यह कहिए कि दवाओं की वजह से ही तन्दुरुस्ती बढ़ी है लोगों की और बच्चे पैदा करने की मशीनरी केवल मिली है। ऐसे चलिए कि अगर पूर्व की हवा चले तो मुंह पश्चिम को न घुमाइए।

श्रीमन्, राष्ट्रीय संकट के ऊपर सरकार पूरी तवज्जह देती है कि नहीं है, लेकिन आंतरिक संकट को तो माननीय गृह मन्त्री जी भूल ही गए हैं। जहां तक यह डेवलप हो रहा है और जितने इसके डेवलप होने की सम्भावना है उसका आने वाले कुछ दिनों में आपको पता लग जायगा। आप जान जायेंगे राष्ट्रीय संकट से आंतरिक संकट बहुत बड़ा है और इसके लिए इन तीन साढ़े तीन करोड़ रुपए में क्या प्रबन्ध होने वाला है? अगर इस पर विचार कर सकते हैं तो मैं

समझता हूं कि वह नहीं आएगा बशर्ते कि उग्रसेन जी व झारखंडेराय जी और उनके मित्रों का अगर सहयोग मिलने लगेगा तो वह नहीं आएगा। लेकिन इसकी सम्भावना बहुत कम दिखाई देती है। इसलिए सरकार को आंतरिक खतरे से बचने के लिए गलत तरीके की स्पीचेज पर पूरा काबू पाना होगा तभी यह प्रदेश चल सकेगा अन्यथा राष्ट्रीय संकट से आंतरिक संकट बड़ा पैदा होगा।

मुझे आपके द्वारा सरकार का ध्यान दिलाना है और विशेष तरीके से ठाकुर हरगोविन्द सिंह जी का। एक बात मैं बताना चाहता हूं कि ठाकुर साहब १९६७ में भी गृह मन्त्री रहने वाले हैं क्योंकि उनको चुनाव लड़ना नहीं है। उनकी सीट रिजर्व है। १९६७ के बाद भी यही गृह मन्त्री रहने वाले हैं क्योंकि कांग्रेस पार्टी ने अच्छी तरह से समझ लिया है कि यह आदमी बड़ा ठोस है, दमदार है और हिम्मत वाला है। इसकी जो मुखालफत होती है वह सिद्धांतों पर होती है। अगर हम किसी नरम आदमी को खड़ा कर दें तो वह टिकेगा कैसे? इसीलिए राजपूत, हैकड़, मजबूत, दमदार और हिम्मत वाले आदमी को बिठाया गया है। अगर आपको शिकायत है तो वह समाअत के अन्दर हो सकती है, अगर आपको नियमित तरीके से शिकायत लानी है तो नियमित तरीके से उसकी सुनवाई हो सकती है। अगर उछाड़-पछाड़ करना है तो ३० अप्रैल के बाद जो बचेगा वह निबटेगा।

*श्री खेमचन्द--

अधिष्ठाता महोदय, यह करीब पौने चार करोड़ रुपए का अनुदान है जो मन्त्री जी ने सदन के सामने रखा है, इस पर सदन गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा है। मैं जहां तक समझता हूं कि मन्त्री जी ने इसका महत्व इतना अच्छा समझा कि जब इस पर विचार विमर्श हो रहा था तो उस समय आप नींद लेते थे। इसके साथ-साथ इसमें नागरिक सुरक्षा के जिन कार्यों का वर्णन किया गया है वे बड़े महत्वपूर्ण हैं और यह निश्चित है कि देश को संकट कालीन स्थिति या आंतरिक सुरक्षा के लिए सेकेन्ड फ्रंट लाइन लाने की जरूरत होती है जिसको जनता के बीच में से प्राप्त करते हैं ताकि जन सहयोग प्राप्त होता रहे। इसीलिए यह बड़ा महत्वपूर्ण है और इसको उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

(इस समय २ बज कर ५९ मिनट पर श्री अधिष्ठाता, श्रीमती प्रकाशवती सूद पीठासीन हुयीं।)

मुझे एक बात याद आ गई कि १९५४ में जब चीन और हिन्दुस्तान के मैत्री पूर्ण सम्बन्धों पर उस समय एक कार्टून निकला था फ्रांस की पत्रिकाओं में जिसको अम्बेदकर जी ने कोट किया था और उसमें उन्होंने बतलाया कि कुछ पालिटीशियन्स एक रेस्टरां में डांस कर रहे थे और कह रहे थे--Give us peace without the principle. अगर आज हम इस बात को देखते हैं कि हमारा ट्युनिंग डांस हो रहा है, यहां पर भी यही चिल्लाहट आती है कि हम को शांति चाहिए, सिद्धांतों का पालन हम नहीं करना चाहते, इन विचारों को देखते हुए यहां पर राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर जनतन्त्र की बड़ी दुहाई दी गयी। हमारे राइट विंग में से जितने महनुभावों ने विचार प्रकट किए सब ने तानाशाही के खतरे को सर्वोपरि रखा है। अगर हम विचारों में संतुलन नहीं रखते हैं, अगर हम अपनी बात को ठीक प्रकार से नहीं कह सकते तो मिलिटरी और ऐडमिनिस्ट्रेशन का गठबन्धन हो सकता है जिसके आधार पर तानाशाही आएगी। तानाशाही आने के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी जनतन्त्र के उन आदमियों पर है जो कि हुकूमत की बागडोर सम्भाले हैं। शासन में उन्हें कुछ आदर्श स्थापित करने पड़ते हैं, कुछ जनतांत्रिक पद्धतियां स्थापित करनी पड़ती हैं ताकि जो भावी सरकारें आएं वे उन सिद्धांतों पर चल सकें। हमें देखना है कि क्या हमने प्रजातन्त्र में फिरकापरस्ती को दूर कर दिया है। शासन सब सम्बन्धों से ऊपर होता है। शासन की आड़ ले कर अगर मनमाना फायदा उठाने की कोशिश की जाय तब तो जनतांत्रिक प्रणाली समाप्त हो जायगी। आज हमने पूंजीपतियों के

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री खेमचन्द]

साथ अपना सम्बन्ध बनाया है। दो-दो लाख रुपए एक-एक पूंजीपति कांग्रेस के चुनाव के लिए चन्दा देता है। उसके बाद पूंजीपतियों का पक्ष किया जाता है। क्या इस प्रकार की पद्धतियों से जनतन्त्र की रक्षा हो सकेगी? जिस पार्टी में टिकट देते समय सेठों की राय पहले रखी जाती हो उस पार्टी के नुमाइन्दे क्या जनतन्त्र की रक्षा करेंगे। बार-बार कहा जाता है कि तानाशाही आएगी। तानाशाही आएगी तो लोकशाही खतरे में है। हवाबाजी करने से कोई बात बन नहीं सकती। गम्भीरतापूर्वक सोचने से हल निकल सकता है।

जहां तक इस अनुदान का प्रश्न है इसमें जिन कार्यों पर विचार करने की बात कही गयी है, उनमें केवल होमगार्ड का पुस्तिका में जिक्र है। जिस संस्था को १९४८ में स्थापित किया गया, जिसका आज भी अस्तित्व है इस विवरण पुस्तिका में उसका जिक्र तक नहीं। या तो उस संस्था को रखने में कोई लाभ नहीं है और अगर लाभ है तो उस पर प्रकाश पड़ना चाहिए। प्रान्तीय रक्षक दल के पीछे पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त जैसे नेताओं की भावना थी जिन्हें देश में इतना सम्मान मिला, जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन से ले कर गृह मन्त्री का पद सम्भालने तक देश के प्रति अटूट निष्ठा और शासन में दृढ़ता का परिचय दिया जिससे बात करते समय हर आदमी यह अनुभव करता था कि वह किसी शक्ति से बात कर रहा है। प्रान्तीय रक्षक दल जिसमें प्रारम्भ में आई० एन० ए० के आफिसर्स और दूसरे आदमियों को रख कर संचालित किया गया आज वह दम तोड़ रहा है। उसके वर्कर्स नागरिक सुरक्षा में रखे हुए हैं। वह घूमते हैं। उनको समान काम के लिए समान वेतन नहीं दिया जाता है। और इस प्रकार संविधान की अवहेलना की जाती है। या तो संगठन को बिल्कुल रखिए नहीं और यदि आप रखना चाहते हैं तो उस पर ठीक तरह से अमल करिए और उसकी बुराइयों को दूर करके उसको अच्छे रूप में परिवर्तित कीजिए। जिससे कि वह निर्भय और निश्चित होकर अपने कर्तव्य का पालन कर सकें। एक तरफ आप प्रदेश की पी० आर० डी० की बिल्कुल उपेक्षा कर रहे हैं और दूसरी तरफ होमगार्डस् को लीजिए जिसकी १,११९ कम्पनियां बन गई हैं। प्रत्येक जिले जिले में बन गयी हैं। उसका हाल सुनिए २० तारीख को मैं यहां जा रहा था, मैंने देखा कि होमगार्डस् की परेड जा रही थी। उस परेड में चलने वाले नौजवान क्या शान के साथ चल रहे थे? किस तरह से अपनी मिलिटरी स्प्रिट का प्रदर्शन कर रहे थे, उसके बारे में मैं क्या कह सकता हूं। किसी के पैर कहीं जा रहे थे, किसी के पैर कहीं जा रहे थे और किसी का हाथ कहीं जा रहा था। परेड का प्रदर्शन और उसमें नौजवानों की यह हालत, जिसको हम सुरक्षा की भावना से तैयार कर रहे हैं, जिसको हम सेकेन्ड लाइन आफ दि डिफेंस बना रहे हैं और जिनको हम निरन्तर ट्रेनिंग दे रहे हैं। इन ट्रेनिंग प्राप्त आदमियों की यह हालत कि उनको सही ढंग से मार्च करना नहीं आता? यह हमारे लिए सोचने की बात है। जहां इनका प्रदर्शन होता है वहां पर बहुत अच्छी मुस्तैदी का रूप दिया जाता है। मने सारी रैलीज देखीं, सम्मेलन देखे। मैं आगरा की रैली का वर्णन करना चाहता हूं, जब उनसे फालेन करने को कहा गया तो वह मजे मजे आरामतल्बी के साथ आ रहे थे, देखा कि वह लाइन भी ठीक तरह से नहीं बना पा रहे हैं। उनकी दयनीय हालत देखकर बड़ा अफसोस होता है। यह भी देखता हूं कि कभी-कभी होमगार्ड के सिपाही को ऐसे कार्यों के लिए गिरफ्तार किया जाता है, जिसको क्राइम की संज्ञा दी जाती है। जैसा कि माननीय उग्रसेन जी ने कहा कि पांच-पांच रुपया, दो-दो रुपया देकर इधर-उधर के आदमी होमगार्ड में भर्ती कर लिए जाते हैं डेली वेजेज पर और बस एक दिन की ट्रेनिंग देकर उन्हें ड्यूटी पर भेज दिया जाता है, वह ठीक बात मालूम होती है। डेली वेजेज पर यह रख लिए जाते हैं। इस तरह से जो इनके एक्स्ट्रा आदमी होते हैं, जिस समय यह एक्स्ट्रा रहते हैं उनको डेली वेजेज पर रखकर काम दे दिया जाता है। इस तरह से यदि सरकार ने इसे एक्स्ट्रा मोहकमा बनाने की कोशिश की है, तो बिल्कुल ठीक है, जो डेली वेजेज पर आते हैं और अपनी वर्दियों का प्रदर्शन करने के बाद चले जाते हैं और इसके अतिरिक्त जिनका अन्य कोई परपज नहीं।

आपने ब्लाक आर्गनाइजर रखे हैं और उस पर पूरा भार दे रखा है।

(लाल बत्ती होने पर)

अभी पांच मिनट और समय दे दीजिए।

श्री अधिष्ठाता—

अच्छा पांच मिनट में खत्म कर दीजिए।

श्री खेमचन्द—

तो ब्लाकों में ग्राम सेवक और ए० डी० ओज ब्लाक आर्गनाइजर को कुछ समझते नहीं हैं। उसके दो स्टार आपने लगा रखे हैं। उससे कहा जाता है कि जब तुम ब्लाक पर आओ तो अपनी वर्दी में आओ, तो वह वर्दी पहन कर वहां आते हैं और उनसे एक चपरासी का सा कार्य वहां पर लिया जाता है। तो उस मिलिटरी के आदमी का जो देश की रक्षा करता है हम क्या सम्मान करते हैं। उनके कार्य के महत्व को देखते हुए आप उनके सम्मान की रक्षा का इन्तजाम कीजिए।

मैं इस सम्बन्ध में तीन-चार बातें सुझाव के तौर पर कहना चाहता हूं जिससे वह अपना कार्य ठीक से कर सकें। एक तो पी० आर० डी० और होमगार्ड का एकीकरण होना चाहिए, जिससे पृथकता मिट जाय। दोनों का कार्य और महत्व समान है। फर्क केवल यह है कि एक गांवों में काम करता है और दूसरा शहरों में। इसलिए यदि ऐसा कर दिया जाय तो भी ठीक है कि इसके दो विंग कर दिए जायं एक रूरल और दूसरा सिविल। रूरल होमगार्ड गांवों में काम करें और सिविल शहरों में। दोनों एक में मिलकर जिम्मेदार हो जायेंगे और इससे उनकी कार्यक्षमता बढ़ने की सम्भावना है।

श्री गंगाप्रसाद (जिला गोंडा)—

अधिष्ठाता जी, सदन में कोरम नहीं है।

(घंटी बजाई गई और गणपूर्ति होने पर सदन की कार्यवाही पुनः आरम्भ हुई।)

श्री खेमचन्द—

दूसरी बात यह है कि जिस प्रकार से अन्य सेवा के लोगों के लिए सेवा मैनुअल्स, रूल्स और कन्डक्ट्स हैं उसी प्रकार इनके लिए भी सेवा मैनुअल्स, रूल्स और नियम होने चाहिए। इसके साथ ही, उनका वेतन-क्रम भी निश्चित होना चाहिए जो आदमी चौबीसों घंटे के लिए रखे जाते हैं उनका वेतन-क्रम अवश्य ही निश्चित होना चाहिए। आज उनको ८० रुपए और १५ रुपए महंगाई, कुल ९५ रुपया हम देते हैं। ब्लाक में समकक्ष दूसरे कर्मचारी हैं लेकिन इनके और उनके वेतनों में बहुत भिन्नता है। बहुत असमानता है। उससे निराशा पैदा होती है। इसको ध्यान में रखते हुए मैं समझता हूं कि समान वेतन-क्रम लाने के लिए उपाय होना चाहिए।

तीसरी बात यह है कि यह दोनों अंग इतने उपेक्षित हैं कि हम यहां पर उच्चाधिकारी रिटायर्ड आदमी को लेते हैं। हमारे बड़े कम्पनी कमान्डर हैं वह या तो आन दि वर्ज आफ रिटायरमेंट हैं या रिटायर हो चुके हैं। इससे सम्भवतः यह विचार हो कि धन की बचत हो जाय लेकिन इससे धन की बचत भी नहीं हो पाती। आज जो कमान्डर हैं उनके टी० ए० और डी० ए० में भत्ता बन जाता है, घूमते फिरते हैं, सब कुछ करते हैं, उनको ८० हजार रुपया दिया जाता है, एक व्यक्ति पर इतना खर्च होता है। उसके साथ-साथ निम्नश्रेणी के कर्मचारियों का भी ध्यान रखना चाहिये।

चौथी बात यह है कि इनका आत्मबल बढ़ाया जाय। इसके लिए यह आवश्यक है कि इनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव हो। जब वह होगा तभी नागरिक सुरक्षा का वास्तविक मतलब निकल सकता है। इस बात में तो दो राय नहीं हैं कि जब तक देश का प्रत्येक नागरिक जन

[श्री खेमचन्द]

भावना और देश की रक्षा की भावना से सन्नद्ध हो कर कटिबद्ध नहीं होता तब तक देश की सुरक्षा का वास्तविक स्वरूप नहीं बन सकता है। कोई भी आदमी इससे इन्कार नहीं कर सकता है कि जो देश का सच्चा नागरिक है वह देश के लिए बलिदान और कुरबानी करेगा और इन भावनाओं को देखते हुए हर आदमी के लिए सुरक्षा के जितने नियम हैं उनको पूरा करना आवश्यक है।

हथियारों के लाइसेन्स देने में कभी-कभी भेदभाव बरता जाता है। जहां तक शिड्यूल कास्ट का सम्बन्ध है उन लोगों की उपेक्षा की जाती है। यह नहीं होना चाहिए। पी० आर० डी० या होमगार्ड में अगर कोई ऐसा शिड्यूल कास्ट का आदमी आता है या कोई उसका आदमी कमान्डेन्ट बन ना चाहता है या दूसरा ओहदा लेना चाहता है तो उसकी शिकायत होती है। कहा जाता है कि ये फलां जाति के आदमी हैं और हम इनके कमान्ड में काम नहीं करेंगे। इस प्रकार की भावना को समाप्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। इसकी कोशिश होनी चाहिए कि गलत धारणा देश में न बने और न फैले। देश में प्रत्येक नागरिक को और प्रत्येक आदमी को समान अधिकार हैं। अगर कोई नागरिक देश की रक्षा के लिए आगे आता है तो देश की रक्षा करना उसका कर्तव्य है। मैं उदाहरण के लिए आपको बताऊं कि चीन के आक्रमण के समय और पाकिस्तान के आक्रमण के समय तांगा चलाने वाले ने अगर १२ रुपए एक दिन में कमाए हैं तो १२ रुपए दिए हैं और १८ रुपए पैदा किए हैं तो उसने १८ रुपए सुरक्षा कोष के लिए दिए हैं। भीख मांगने वाले लोग जो सड़कों पर बैठकर भीख मांगते हैं, रोटी मांगते हैं उन्होंने भी दिनभर की भीख मांग कर रक्षा कोष में दी है। इससे अधिक राष्ट्रीय भावना का और क्या प्रतीक मिल सकता है। राजाओं ने भी लड़ाई लड़ी और कुछ वर्गों ने भी लड़ाई लड़ी लेकिन देश की सुरक्षा में जो सभी नागरिकों ने सहयोग दिया वह महत्वपूर्ण सहयोग है और उसे बरकरार रखने का बराबर प्रयत्न होना चाहिए। इन शब्दों साथ में इस कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री मुकन्दीलाल बैरिस्टर (जिला गढ़वाल)—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, आज सवेरे से जितने भाषण यहां पर हुए हैं उनमें मैं यह सोचता हूं कि किसी ने टु दि प्वाइन्ट बात अभी तक नहीं कही। हमारे सामने कोई ऐसी तस्वीर किसी ने नहीं रखी कि किस तरह से होमगार्ड में परिवर्तन करने की आवश्यकता है या यह कैसे सुधर सकता है। मैं यह निवेदन करूंगा कि इसको इस पहलू से लेना चाहिए कि होमगार्ड की जो भावना है और होमगार्ड की जो नियुक्ति की गई है उसका मन्शा क्या है। हमारा उससे मन्शा यह है कि हमारे देश में एक भावना उत्पन्न हो। जिस तरह हमारा सिपाही सीमा पर लड़ता है उसी तरह से हम घर पर बैठकर देश में शान्ति कायम रखें। इस भावना को लेकर इस होमगार्ड की स्थापना की गई है। इसी भावना से मैं इस मांग नम्बर ४६ का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ जो मन्त्री जी ने सदन के सामने पेश की है। इसके साथ ही मैं यह भी सोचता हूं कि जो मांग इस अनुदान के अन्तर्गत की गई है उसमें बहुत कम रुपया मांगा गया है। इसके लिए अधिक रुपए रखने की आवश्यकता थी। अधिक रुपया मांगा होता तो सभी सदस्य इसका समर्थन करते और सराहना करते और पास भी करते। मैं इस बात की आशा करता हूं कि इस सदन में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो इस तरह की मांग से इन्कार करे।

इसके साथ-साथ मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि जैसा उपसेन जी ने कहा कि इससे हमारे सारे देश की सुरक्षा का सम्बन्ध है तो हमारे किसी मन्त्री को इस प्रकार के वादे नहीं करने चाहिए जिसको वह पूरा न कर सके। इससे यह होता है कि जनता में यह विश्वास फैलता है कि मन्त्री जो वायदा करते हैं उसको पूरा नहीं करते हैं। मेरा जिला गढ़वाल ऐसा जिला है जहां पर एक नहीं बल्कि १० बटालियन गढ़वालियों की हैं। वहां पर ५० हजार आदमी सदैव सशस्त्र रहते हैं। उसमें रिटायर्ड लोग भी हैं और दूसरे देशभक्ति के काम करने वाले लोग हैं। गढ़वाल के लिए सरकार ने बड़े-बड़े वादे किए थे जिनको अभी तक पूरा नहीं किया गया

है। जब गुप्ता जी वहां पर गए थे तो उन्होंने ३, ४ मीटिंगों में कहा था कि हम गढ़वाल जिले को सैनिक स्कूल देंगे, क्योंकि ये बहादुर लोग हैं और सेना में काम करने वाले लोग हैं। इसलिए वहां पर एक सैनिक स्कूल खोला जायगा ताकि जो लोग अपनी जान दे रहे हैं और बहादुरी से लड़ रहे हैं वे अपने बच्चों को देश की सुरक्षा के लिए अफसर तैयार करना चाहते हैं। इसलिए वह चाहते थे कि गढ़वाली सिपाहियों के लड़कों के लिए सैनिक स्कूल हों। जब सुचेता जी गढ़वाल में आयीं तो उन्होंने कहा कि सैनिक स्कूल तो हम ने दूसरी जगह खोल दिया है, लेकिन हम एक दूसरी तरह का स्कूल बनायेंगे जिस में आप के बच्चे देहरादून और खडगवासला के लिए तैयारी कर सकें। किन्तु बजट में उसके लिए मांग की है।

१९४७ से ६३ तक आप के पी० डब्ल्यू० डी० के आंकड़ों के लेखे के मुताबिक गढ़वाल जिले में केवल २८ मील नई मोटर सड़क बनी है और हमारे पड़ोसी जिले में ४९६ मील नई मोटर सड़क उसी समय में बन गई। यह कमी हमारे यहां क्यों है? मुझे आश्वासन दिया गया था कि हम यह कमी जरूर पूरी करेंगे, लेकिन इस आश्वासन के बाद भी हमारे यहां इस बजट में केवल ५ मील सड़क बनने की मांग रखी है। तो वह जिला जिस पर सीमा की रक्षा का भार है और जिस की सीमा सब से ज्यादा दूसरे देश से मिली हुई है उस की हालत अगर यही रही तो देश की रक्षा कैसे होगी। आपने देखा है कि मीजो का मामला सामने आ गया। वहां के लिए सरकार ने बड़े-बड़े वायदे किए लेकिन उनको पूरा नहीं किया। तो यह दृष्टांत देने का मेरा मतलब यह है कि मन्त्रियों के लिए इस तरह की कार्यवाही करना ठीक नहीं है। मैं पी० डब्ल्यू० डी० मन्त्री के साथ दौरे में था। मेरे सामने उन्होंने अपने एग्जीक्यूटिव इंजीनियर से कहा कि यह दो मील का टुकड़ा सांसी से बजेरा तक है, उस को पूरा कर दिया जाय। आज चार साल हो गए लेकिन वह पूरा नहीं हुआ। एक सड़क मैंने दिखाई जो ५ मील श्रमदान द्वारा बनायी गयी थी केवल २ मील बाकी रह गयी थी, लेकिन उस के लिए भी आज तक कुछ नहीं हुआ। इस प्रकार की जो कार्य प्रणाली है सरकार की इस से निराशा उत्पन्न होती है। सेन्टर ने उत्तराखण्ड के तीन जिलों के लिए २८ करोड़ रुपया इन जिलों की तरक्की के लिए खर्च करने को इस राज्य को दिया गया लेकिन जब मैंने पूछा कि इस में से गढ़वाल पर कितना और दूसरे जिलों पर २८ करोड़ में से कितना खर्च हुआ तो उस का जवाब नहीं दिया गया। इस २८ करोड़ में से ३/४ भाग एक ही जिले पर खर्च हुआ है। इसके अलावा मैंने पूछा कि इस में से कितनी इमारतें बनायी गयीं और किन-किन जिलों में वे बनीं। तो उस का उत्तर अभी परसों ही मुझे मिला है जिस के अनुसार चमोली में १२१ इमारतें बनीं, उत्तर काशी में १९२ इमारतें बनीं और पिथौरागढ़ में २८३ इमारतें बनीं। इस किस्म की पार्शियलिटी जो मन्त्री जी करती हैं, उनको अपने विभाग की इस प्रकार की कार्यवाहियों का पता नहीं है, वह मन्त्रिपद पर रहने काबिल नहीं हैं। हमारी सेन्ट्रल गवर्नमेंट ने २८ करोड़ रुपया दिया था जो सीमा के तीन जिलों पर खर्च होना था, तो फिर वह रुपया बराबर-बराबर क्यों नहीं चमोली, गढ़वाल, उत्तरकाशी पिथौरागढ़ में खर्च किया गया। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि हम देश की रक्षा चाहते हैं और हम देश को स्वतन्त्र रखना चाहते हैं। और सीमा प्रान्त की आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहते हैं। तो तीनों जिलों के साथ समान व्यवहार करें।

एक बात मैं और अर्ज करना चाहता हूं। लैंसडाउन के पास जहां हमारे दस हजार सिपाहियों का हेड क्वार्टर है, वहां से आठ मील नीचे एक पाइन फारेस्ट है। वहां पर एकप्राइवेट डाक्टर ने एक टी० बी० सेनेटोरियम बनाया था। वह उसे चला नहीं सका। मैं ४ वर्ष से कह रहा हूं मंत्रियों से। मुख्य मंत्री से कहा कि यह सेनिटोरियम क्यों नहीं ले लेते? इससे सिपाही की भी सेवा होगी। सारे गढ़वाल जिले में ५० परसेंट अडल्ट आर्मी में हैं। डिफेंस में उसके लिए आपने कोई सेनिटोरियम अब तक नहीं खोला। ५०,००० रुपये में वह डाक्टर देने को तैयार है---सारी जमीन और इमारतें।

दूसरी बात यह है कि क्या इस बजट में नेशनल इमर्जेंसी में आपने उन सिपाहियों के लिए क्या रखा है जिन्होंने देश के लिए कुर्बानी की है और खून बहाया है। उनके लिए जमीन का क्या

]श्री मुकुन्दीलाल बैरिस्टर]

साधन किया है? उनकी बेवाओं का क्या प्रबन्ध किया है ? जो नाबालिग और आरफन्स हैं उनके लिए भी कुछ किया है ? तो मतलब यह है कि खाली बातों से या यह मांग करने से कुछ नहीं होगा। हमको अपने देश में इस किस्म की भावना पैदा करनी है कि हम पर मर मिट जायेंगे लेकिन चीन को इधर नहीं आने देंगे। एक सदस्य ने कहा कि सुलह करनी चाहिए। जिस चीन ने जवाहरलाल जी को धोखा दिया, जिस वक्त पाकिस्तान ने हमला किया तो उसने पीछे से छुरा मारा, उस चीन से कैसे सुलह हो सकती है ? हमारी सरकार को इसके लिए तैयार रहना चाहिए कि जन्म-जन्मान्तरों से इस चीन से हमने धोखा खाया है वह कभी हमारा दोस्त नहीं हो सकता।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि गढ़वाल की इस तरह अवहेलना बेइन्साफी के कारण वहां अब एक संस्था हो गयी है जो कहती है कि यू० पी० छोड़ कर हमको हिमांचल में मिल जाना चाहिए। पंजाबी सूबा बन रहा है, हम भी यू० पी० में नहीं रहना चाहते हैं और जिस तरह से कांगड़ा, लाहौल इत्यादि मिल रहा है हमको भी हिमांचल में मिल जाना चाहिए। सरकार को इस मूवमेंट से खबरदार हो जाना चाहिए। अगर नहीं होते हैं तो पछताएंगे।

*श्री प्रेमसिंह (जिला बहराइच)—

माननीय अधिष्ठात्री महोदया, यह जो अनुदान प्रस्तुत है और माननीय ठाकुर हरगोविन्द सिंह की जो इज्जत हम लोग करते हैं इस सदन में, और इस सदन के अन्दर ही जो मर्यादा कायम करते हैं, यहां 'मुर्दाबाद' जैसे नारे बुलन्द करते हैं—इससे हमारी सुरक्षा कायम नहीं रह सकती। हम आशा करते हैं कि अगर हम स्वतंत्र हुए हैं तो गम्भीरता से इस पर विचार करें और इसकी में एक अंग्रेजी की एक कहावत में कहना चाहता हूं—

Little by little," said a thoughtful boy, "I will employ learning a little every day and not spending all my time in play.

"And this rule will in my mind dwell. Everything I do it well"

यह सुरक्षा का जो सवाल आया है—यह राष्ट्रीय संगठन और नागरिक सुरक्षा का, इसको मैं इस तरह रखता हूं—"राष्ट्र, सुरक्षा और नागरिक संगठन"।

"दिल से लगा कर न दिल से उतारो, अदावत बुरी है मुहब्बत के बाद।"

श्रीमन्, पाकिस्तान जो हमारे देश को हड़प लेना चाहता था आज उससे हमें मोहब्बत हो गयी है। मैं चाहता हूं वह कायम रहे। मगर यदि हम शान्ति चाहते हैं तो उसके लिये यह जरूरी है कि हम वार के लिये भी तैयार रहें। शान्ति हम तभी स्थापित कर पायेंगे जब हम वार के लिये भी तैयार रहें। वरना वही समझा जायेगा कि हम कमजोर हैं। पिछली बार पाकिस्तान तथा चीन से जो लड़ाई हुई उसमें भारतवर्ष ने दिखा दिया कि हम क्या हैं। हमें लड़ाई के लिये भी अपने को तैयार करना है।

मैं चाहता हूं कि आप होम गार्ड्स तथा पी०आर०डी० को एक कर दीजिये। मैं यह भी चाहता हूं कि आप उनकी ड्रेस का खयाल कीजिये। जब हम उनकी रक्षा करेंगे तभी वह देश की रक्षा कर पायेंगे। पुलिस के कान्सटेबिल्स जो पेटी आज लगाते हैं उस पर वही गुलामी के समय का पुराना चिन्ह है। उनकी वही पोशाक है। हमें उनकी गरीबी को मिटाने की तरफ ध्यान देना चाहिये, उनकी तन्दुरुस्ती की तरफ ध्यान देना चाहिये, तभी वे अपना कार्य ठीक प्रकार से कर सकेंगे।

मेवालाल जी इधर से कांग्रेस में चले गये। उनकी बात को सुन कर बड़ा दुःख हुआ। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि वे कांग्रेस में चले ही क्यों गये ? उनमें वे शामिल भी होते हैं और कांग्रेस की बुराई भी करते हैं। मैं चाहता हूं हम सब एक हों, एक पार्टी हो हम सब गरीबों के

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

खिलाफ लड़ें, अशिक्षा के खिलाफ लड़ें, और डिजीज के खिलाफ लड़ें। जब ऐसा होगा तभी देश उन्नति कर सकेगा। यही मुझे कहना था।

श्री बृजमोहनलाल गुप्त (जिला बांदा)—

अधिष्ठाता महोदय, मैंने माननीय कुंवर श्रीपाल सिंह जी के भाषण को बड़े ध्यान से सुना। जिन परिस्थितियों में हमें आजादी मिली वह आज एक खतरे में है। कुछ तो खतरा देश के बाहरी हालतों से है, और कुछ अन्दरूनी हालतों से जिसका जिक्र कुवर साहब ने भी किया। हमें अभी अपनी पुरानी गुलामी के दिन भूले नहीं हैं, भूतकाल का इतिहास भी भूला नहीं है। हम भारतवर्ष के रहने वाले राम और कृष्ण की सन्तान हैं। हमारे देश में ही महाराजा शिवा जी और महाराणा प्रताप जैसे लोगों ने जन्म लिया है। हम उस आजादी को कायम रखना चाहते हैं। वह आजादी जभी कायम रह सकती है जब हमारे देश में सुरक्षा होगी जब हममें राष्ट्रीय एकता होगी और उसकी उन्नति करने की भावना होगी। पार्टियों का भेद हो सकता है, सैद्धान्तिक मतभेद हो सकता है लेकिन जहां तक राष्ट्रीय एकता का सवाल होगा तो वहां हमारे देश का जो नागरिक होगा, जो भारत-माता का पुत्र होगा, चाहे वह किसी कौम का हो उसको रक्षा के लिये, कुर्बानी के लिये हर वक्त तैयार रहना पड़ेगा। आज जैसा कि हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि चाहे कहने को ताशकन्द समझौता है फिर भी पाकिस्तान की नीति हमारी तरफ अच्छी नहीं है उसके इरादे नापाक हैं। चीन की फौजें भी घेरे हुए हैं। जैसा कि जिक्र किया गया है कि चीन जो भूमि कब्जा किये हुए है वह भी हम नहीं ले सके हैं। यह कोई खुशी की बात नहीं है। इसके लिये, चाहे वह किसी भी पार्टी का हो, उसको अफसोस है पंडित नेहरू का जो स्वर्गवास हुआ वह भी इसी सदमें से हुआ है। इस हालत में भी अगर हम आपस में मनमुटाव रक्खेंगे तो इससे हमारी शक्ति और एकता को हानि पहुंचेगी।

अभी आपने देखा केरल में क्या हालत हुई, बंगाल और नागालैण्ड की क्या हालत हुई। आज पंजाब की जो हालत है वह भी इस बात को साबित करती है कि बाहरी और घरेलू संकटों से हमारी आजादी खतरे में है। आज हमको इस बात पर नहीं सोचना है कि हम कांग्रेस का विरोध करते हैं या समर्थन करते हैं। आज हमको इस दृष्टि से भी देखना है कि हम आजादी कायम रख सकते हैं या नहीं। बाहरी हमलों के लिये सेना और फौज हुआ करती है और घरेलू इन्तजाम के लिये नागरिक सुरक्षा परिषद् या हमारी जो राष्ट्रीय सेना है, होम गार्ड्स हैं वे इस काम को करते हैं। आपने देखा कि हमारे देश का उत्पादन या उद्योग धन्धे जब तक नहीं बढ़ेंगे तब तक हम तरक्की नहीं कर सकते। इसके बढ़ाने के लिये आवश्यकता है कि इनकी सुरक्षा को पूरा इन्तजाम करना चाहिये। इन होमगार्ड्स को बनाये रखने का उद्देश्य यही है कि हमारे देश का उत्पादन और देश के उद्योग धन्धों को बढ़ाने में भी पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हो सके। पाकिस्तान की लड़ाई के दौरान में हमने देखा कि देश के नौजवानों ने कितनी बहादुरी से पाकिस्तान का मोर्चा लिया और दुनिया के लोगों को दिखला दिया कि हिन्दुस्तान के लोग केवल शान्ति के उपासक नहीं हैं, हिन्दुस्तान के नौजवान लड़ाई के मैदान में भी लड़ सकते हैं जिससे हमारे देश का गौरव ऊंचा हुआ। आपने यह भी देखा कि स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री के नेतृत्व में और उनके आवाहन पर हमारे नौजवानों ने जिस बहादुरी से देश का गौरव ऊंचा किया है वह किसी से छिपी हुई बात नहीं है।

हमारे विरोधी पार्टियों के माननीय सदस्यों द्वारा इस बात का लांछन लगाया गया है कि कांग्रेस की विचारधारा हिन्दू विचारधारा के खिलाफ है। मैं यह कह सकता हूं कि यह उनकी संकुचित विचारधारा है। इस विचारधारा के अनुसार कांग्रेस दल नहीं हो सकता। यहां तो धर्म निरपेक्ष राज्य है, सब को समान दृष्टि से देखता है और उसी भावना से हमारी नीति भी चल रही है।

ताशकन्द समझौते की तरफ भी इशारा किया गया कि यह समझौता अच्छा नहीं हुआ। मैं समझता हूं कि देश की सुरक्षा के लिहाज से देश की आजादी को कायम रखने के लिहाज से जो समझौता शास्त्री जी ने किया है और वह जिस वातावरण में किया गया है उससे अच्छा समझौता नहीं हो सकता था। किसी भी मुल्क की तरक्की के वास्ते अमनो अमान कायम रखना जरूरी

[श्री बृजमोहनलाल गुप्ता]

है, उसी के लिये यह ताशकन्द समझौता हुआ। यह भी कहा गया कि इसके लिये हमें हाजीपीर और बहुत से स्थान छोड़ने पड़े। यह देखने की बात है कि पांच अगस्त से पहले की पोजीशन रक्खी गई है। यू० एन० ओ० में जो फैसला हुआ था उसी फैसले को हमारी सरकार ने मान लिया। इसके अलावा यह दूसरा फैसला नहीं था। हम जानते हैं कि हमको इसके लिये कीमतें अदा करनी पड़ी हैं। उस कीमत को अदा करने के बाद अगर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में ईमानदारी के साथ अमनो-अमान कायम रहा तो ही हम तरक्की कर सकेंगे, खुशहाल होंगे। जो कुर्बानी है वह भी एक अच्छा फल साबित होगी। यह तो भविष्य बतलायेगा कि उसके अन्दर कितनी सच्चाई और ईमानदारी है। ताशकन्द का जो फैसला हुआ है, मेरी समझ से इससे अच्छा और कोई फैसला नहीं हो सकता।

उन्होंने एक बात और कही कि कुंभ के मेले में किसी मुसलमान ने कोई बदचलनी की। जिस भी शख्स ने ऐसा काम किया उसने जघन्य अपराध किया, उसको कोई भी इन्सान माफ नहीं कर सकता। अगर किसी आदमी का कोई फेल गलत है तो उसको सख्त सजा दी जानी चाहिये, इसकी जिम्मेदारी मुकामी आफीसरों पर आती है, उसके लिये पूरी सरकार को बदनाम करने की जरूरत नहीं है। एक मिसाल और दी गयी कि यह विभाग तो खाली कुनबापरस्ती के लिये ही खोला गया है। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं है। हर एक विभाग में देश को ऊंचा उठाने वाले भी होते हैं और खराब आदमी भी होते हैं। मैं यह मानता हूं कि इस विभाग में भी सब कमचारी दूध के धोये नहीं हैं। उनमें कुछ खराब भी होंगे लेकिन बहुत से ऐसे भी हैं जिन्होंने देश की सुरक्षा के लिये अपनी आहुति तक दे दी, उनकी हमें प्रशंसा करनी चाहिये। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो उनका मनोबल कैसे बढ़ेगा। उनको अगर हम हमेशा ही घृणित निगाह से ही देखते रहेंगे तो हम कभी भी उनको उन्नत नहीं कर सकते। एक ओर तो कहा जाता है कि इस विभाग को खत्म कर दिया जाय, दूसरी ओर जब लोगों को निकाला जायगा तो कहा जायगा कि लाखों आदमी बेकार हो जायेंगे। दोनों तरफ की चीजें नहीं चल सकती है।

मेरा यह पूरा विश्वास है कि जब तक हमारे आध्यात्मिकता को सामने रख कर, ईश्वर और सत्यनिष्ठा की भावना को सामने रख कर, नहीं चलेंगे और खाली भौतिकता से चलेंगे, तब तक हमारे देश का उत्थान नहीं हो सकता। हमको अपनी पुरानी मर्यादाओं को, पुराने शास्त्रों को आधार मान कर चलना होगा। जब तक हम में सेवा की भावना, सच्चाई की भावना, और महात्मा गांधी द्वारा बतायी गयी अहिंसा की भावना न होगी, तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकते। फौज के सिपाहियों में भी हमें इस भावना को भरना होगा। यह केवल इस विभाग के लोगों के करने से न हो सकेगा। इसके लिये तो हम सब जिम्मेदार हैं। हम लोग जो वरिष्ठ हैं उनको पहले अपना चरित्र ऊंचा करना होगा तभी सबका चरित्र ऊंचा हो सकता है।

आज के जमाने में होम गार्ड्स ने जो काम किया है वह सराहनीय है। कुछ पुरुषों की और कुछ महिलाओं की टोलियां खोली गयीं, सब ने मिल कर बहुत अच्छा काम किया। कुंभ मेले में सराहनीय इन्तजाम किया। रेल की पटरियों की सुरक्षा के लिये, स्टेशनों की सुरक्षा के लिये, राज्य सम्पत्ति की सुरक्षा के लिये बहुत ही अच्छा कार्य उन्होंने किया है। उत्पादन बढ़ाने की दिशा में बहुत काम किया है। बाहरी आक्रमण को रोकने और आन्तरिक सुरक्षा के लिये भी बहुत सराहनीय कार्य किया है। इन शब्दों के साथ मैं इस अनुदान का समर्थन करता हूं और जो काम इस विभाग द्वारा हुआ है उसकी सराहना करता हूं।

श्री हिम्मतसिंह (जिला बुलन्दशहर)—

माननीया अधिष्ठाता महोदया, कुंवर श्रीपालसिंह जी द्वारा जो कटौती का प्रस्ताव पेश किया गया है, मैं उसका समर्थन करते हुए अपने विचार प्रकट करूंगा। यह अनुदान राष्ट्रीय संकट के व्यय के लिये रखा गया है। राष्ट्रीय संकट दो तरफा होता है। एक तो पड़ोसी राष्ट्रों के द्वारा और उनके यहां जो अनुयायी और समर्थक हैं उनके द्वारा आन्तरिक सुरक्षा खत्म हो रही है

और दूसरे जो अपने ही देशवासी हैं उनके द्वारा राष्ट्रीय संकट पैदा किया जा रहा है। यह किस के द्वारा हो रहा है कि कोई पंजाबी सूबा बनवा रहा है, कोई उत्तर प्रदेश को बटवाना चाहता है, कोई बंगाल को विच्छेद चाहता है, कोई नागालैण्ड चाहता है, कोई महाराष्ट्र बनवाता है। यह सब क्यों हो रहा है किस की कमजोरी से हो रहा है? सब समझने लगे हैं कि इस कमजोर कांग्रेस सरकार के जमाने में जो चाहें ले लो, ऐसी मनोवृत्ति आज बटवारे के सिद्धान्त को मानने वालों में घर करती जा रही है। इस तरह से आज अपने ही लोगों के द्वारा यह आन्तरिक राष्ट्रीय संकट पैदा किया जा रहा है। क्या इस विषय पर इस कांग्रेस सरकार ने या सत्तारूढ़ कांग्रेस दल ने कुछ विचारा। जिस तरह से पंजाब का बटवारा स्वीकार हुआ है इसी तरह से यहां भी आवाज आने लगी है। इस तरह से बटवारे की प्रवृत्ति से कोई राष्ट्रीय समस्या हल नहीं हो सकती। उत्तर प्रदेश के विभाजन की बात भी सुनी जा रही है और अगर उस चीज को बल मिला तो यहां भी एक राष्ट्रीय संकट पैदा होगा, यहां भी उसकी भूमिका बन गई है, यहां के कुछ लोगों को दिल्ली में आमंत्रित किया गया था कि इस मसले पर विचार किया जाय, मेरे पास भी बुलावा आया था लेकिन मैंने कह दिया था कि मैं इसमें इसलिये शामिल नहीं होऊंगा क्योंकि यह राष्ट्रीय संकट पैदा करने की बात है। पिछली बार सूबा सीमा निर्धारण कमीशन के सामने भी मैंने अपने विचार प्रकट किये थे और मैंने उसी समय यह बात साफ कह दी थी कि हमारे दल जनसंघ का दृष्टिकोण इस विषय में बिलकुल साफ है कि अपने देश में एकात्मक शासन हो अर्थात् इस देश की एक यूनिटरी फार्म आफ गवर्नमेंट बनाई जाय और पूरे देश को ५ भागों में बांट दो। इस तरह से बंटने के सिद्धान्त से देश नष्ट हो सकता है और अगर देश सुसंगठित होकर मजबूत होकर खड़ा होगा तभी हमारा भला हो सकता है। लेकिन कांग्रेस सरकार इस दिशा में कोई प्रयास नहीं कर रही है। यह विभाजन पर ही उतारू है और यह रवैया राष्ट्रीय संकट को कम न करके और बढ़ायेगा। काश्मीर के बारे में बराबर जनसंघ की नीति स्पष्ट रही है और आज भी जनसंघ बराबर कह रहा है कि यह आपका ताशकन्द समझौता जिस पर आप बड़े खुश हो रहे हैं एक खतरे की घंटी है।

दूसरी बात यह है कि अभी यहां हमारे मित्र बक्शी जी बोले और उन्होंने कहा कि यह इधर के लोग सम्प्रदायवादी हैं और बड़े ही संकीर्ण विचार वाले लोग इधर हैं। यह मुसलमानों को और ईसाइयों को निकालना चाहते हैं और कहते हैं कि यह हमारे गेस्ट बन कर रह सकते हैं। जब मैं अपने दल की ओर से विचार रखता हूं तो मुझे वह बात याद आती है कि हंस के लिया पाकिस्तान और लड़ कर लेंगे हिन्दुस्तान। वह कहते हैं कि हम अखंड भारत बनायेंगे और यहां से मुसलमानों और ईसाइयों को भगा देंगे और हम को जिबह कर देंगे। जनसंघ अखंड भारत की जब बात करता है तो वह भारत की शासन पद्धति की बात करता है। वह किसी पर आधिपत्य जमाने की या किसी को भगाने की बात नहीं करता। यह तो वही कहते हैं कि लड़ कर लेंगे, जो खुद सम्प्रदायवादी हैं। जो कुछ देश के बटवारे के सम्बन्ध में अभी तक हुआ वह यहां के राजनैतिक नेताओं की भूल रही है। जो राजनैतिक नेताओं ने अपनी स्याही से लिख दिया, काश्मीर के बारे में लिखे या हाजीपीर के बारे में लिखे यह राजनैतिक भूल ही होगी। हम को, जो आप देते जाते हैं उससे दुख होता है और महान् दुख है। आप ने हमारे नौजवानों को सन् ४७ में हर तरह की कुरबानी देने के बाद वापस बुलाया और उस से आपने यहां की मिलिटरी के मारेल को खत्म कर दिया और रहा-सहा जो था उस को आपने इस ताशकन्द के समझौते से खत्म कर दिया। इसका नतीजा आगे क्या होगा यह आप जानें। इन बातों से जो हालत तुर्कों की हो रही है वही आप की होगी, आप आज चाहें जितना अपने घमंड में कहें कि पाकिस्तान के लोगों को हम ने खत्म कर दिया। यह भ्रम आप को दूर करना चाहिये अपने में से।

आप हमें चाहे जितना प्रतिक्रियावादी कहें, ठीक है कहते जाइये लेकिन हम प्रतिक्रियावादी नहीं हैं। जनसंघ की मिट्टी से यहां की, पानी से, फल से, वृक्ष से, सब से प्रेम है। जो अपने को प्रगतिशील कहते हैं और जिनकी प्रगतिशीलता अमरीका या रूस से सम्बन्धित हो, उसे इसकी चिन्ता नहीं है। ऐसे लोग हमें

[श्री हिम्मतसिंह]

चाहे जो भी नाम से पुकारें लेकिन उन्हें अपने देश की कोई चिन्ता नहीं है। अपने को प्रगतिशील कह कर ऐसे ही लोग देश को नुकसान पहुंचाते हैं। आज यहां चीन और पाकिस्तान के एजेन्ट मौजूद हैं। अपने को प्रगतिशील कहने वाले हमको कहते हैं कि हमारा दृष्टिकोण संकीर्ण हो गया है। हम कहते हैं कि आप हमें कुछ भी नाम दें हमें उसकी चिन्ता नहीं है, हमें तो अपनी भूमि से प्रेम है और अपनी भूमि को किसी को नहीं देंगे। यहां पाकिस्तान के नागरिक ४, ४ साल से बैठे हुये हैं और सी० आई० डी० कहती है कि इनको निकालो। लेकिन कलेक्टर से रिपोर्ट दिलवाकर आप कहते हैं कि नहीं ये देश भक्त हैं। चीन समर्थकों को आपने डी० आई० आर० में बन्द कर दिया वह ठीक है, लेकिन पाकिस्तानियों के लिये आपने क्या किया। मेरे जिले में रामपुर एक गांव है वहां मस्जिद बनाने पर झगड़ा हो गया और यह खबर शाम को रेडियो पाकिस्तान ने सुना दी। अब आप बतायें कि अगर लोगों के पास ट्रांसमीटर नहीं हैं तो यह खबर इस शासन को लगने से पहले पाकिस्तान से कैसे ब्राडकास्ट हो गई। कानपुर में मजदूरों का झगड़ा हुआ और पेकिंग से वह न्यूज ब्राडकास्ट हुई। यह कैसे होता है। माननीय नरसिंहनारायण कहते हैं कि हम झठी खबर देते हैं। अगर हम झूठी खबर देते हैं तो पाकिस्तान और पेकिंग से खबरें कैसे ब्राडकास्ट हो जाती हैं ?

श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

मैंने यह नहीं कहा। माननीय सदस्य को भ्रम हो गया। मैंने यह कहा कि पहले ठाकुर साहब ने यह कहा कि ७ ट्रान्समीटर सेट्स हजरतगंज में पाये गये। अब की बार कहा कि एक पाया गया। मैंने कहा कि इसकी सफाई हो जाना चाहिये चाहे आप करें या होम मिनिस्टर करें, क्या बात है जो ७ से १ हो गया। इस को अल्फ लैला का किस्सा न बनायें।

श्री हिम्मतसिंह—

अल्फ लैला कह कर आप उसको दबाना चाहते हैं। हम कहते हैं कि ये अल्फ लैला के किस्से नहीं हैं। ८ मील की दूरी पर रेडियो ट्रांसमीटर का स्थान है जहां प्रतिष्ठित लोग जाते थे और यहां से खबरें दूसरी जगह प्रसारित करते थे। अब हमारे पास साधन नहीं हैं जो ऐसे लोगों को पकड़ सकें, और जब हमारे पास शासन की बागडोर होगी तो हम आपको ऐसे लोगों को पकड़ कर दिखा देंगे। लेकिन आपका भी तो कुछ कर्तव्य है। क्यों नहीं आप ऐसे लोगों को पकड़ते। आप को इन बातों पर विचार करना चाहिये। मेरे जिले में घुसपैठिए हैं और मेरा जिला दिल्ली और पंजाब से मिला हुआ है, आपने ऐसे लोगों के खिलाफ क्या कार्यवाही की। आंतरिक सुरक्षा तब होगी जब यहां के नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना होगी, अन्यथा पी० आर० डी० कुछ नहीं कर सकती। १६, १६ कत्ल हो जाते हैं लेकिन होता कुछ नहीं। जब तक प्रत्येक नागरिक के अन्दर राष्ट्रीय चेतना नहीं आयेगी, राष्ट्रीय चेतना तो आपने शन्य कर दी, तब तक देश की रक्षा नहीं हो सकती। कुंवर श्रीपालसिंह जी ने बताया कि ६ वर्ष की कन्या के साथ कैसा कुकर्म किया गया, लेकिन सरकार ने उस सम्बन्ध में कुछ नहीं किया और न करने का इरादा है। आपने ऐसे लोगों में राष्ट्रीय चेतना भरने का क्या प्रयास किया ? माननीय दत्ता जी चले गये, नागालैंड मांग रहे हैं केवल इसलिये कि धर्म परिवर्तन होते ही उस की मांग हो गई। तो जो राष्ट्रीयता धर्म परिवर्तन होते ही बदल जाती है उसका कोई उपाय आपने सोचा ? आज प्रदेश के अन्दर सैकड़ों आदमी धर्म परिवर्तन करते हैं और उसी के साथ उनकी राष्ट्रीयता बदल जाती है। इसलिये यह राष्ट्रीय संकट हमारे देश में बढ़ रहा है।

मेरे जिले में और प्रायः सभी जिलों में सुरक्षा कोष का पैसा जबरदस्ती नीचे के कर्मचारी ले रहे हैं। अहलमद असला १० रु० काश्तकार से लेते हैं और रसीद ५ रुपये की काटते हैं। धकाधक इसी तरह रुपया ले रहे हैं। हर वक्त किसान की लुटाई हो रही है, बी० डी० ओ० सीपेंट वाले, बन्दूक वाले, सभी ले रहे हैं। तो मैं मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि सुरक्षा कोष में जो धांधली हो रही है उसको रोका जाय। मेरा सुझाव है कि गजटेड अफसर के अलावा और

कोई सुरक्षा कोष के लिये पैसा न लें। इन शब्दों के साथ में माननीय कुंवर श्रीपालसिंह के कटौती के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री कल्पनार्थसिंह (जिला गोरखपुर)—

माननीय अधिष्ठाता महोदया, नागरिक सुरक्षा के सिलसिले में मैं आपकी इजाजत से माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहूंगा कि नागरिक सुरक्षा का प्रश्न केवल यह नहीं है कि जब लड़ाई चलती रहे उसी समय उसकी आवश्यकता है, बल्कि मेरी राय में नागरिक सुरक्षा का प्रश्न लड़ाई के बाद भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। और उस दृष्टि से नागरिक सुरक्षा के जो कार्य अब तक किये गये उनको अगर और मजबूती दी जाय तो बहुत उत्तम होगा। मैं इस अनुदान का इसलिये समर्थन करना चाहता हूं कि सरकार ने पिछली लड़ाई के दौरान में या उससे पूर्व जब चाइनीज आक्रमण हुआ उस समय जो कुछ भी नागरिक सुरक्षा के सम्बन्ध में कार्य किये वे निःसन्देह प्रशंसनीय हैं। आप अगर देखें तो नागरिक सुरक्षा का कार्य प्रदेश में जो रक्षा की द्वितीय पंक्ति है उस से सम्बन्धित है और इस पंक्ति ने खासतौर पर जिस तरह से उत्साहवर्धक कार्य किये उससे मैं समझता हूं कि मूवर महोदय भी इस बात से सहमत होंगे कि निःसन्देह एक ऐसा वातावरण पैदा हुआ है इस प्रदेश में जिसने राष्ट्रीयता की तरफ लोगों का ध्यान दिलाया और राष्ट्रीय सुरक्षा की तरफ लोगों का ध्यान गया।

यह भी चर्चा की गई कि जो रुपया सुरक्षा कोष में इकट्ठा किया गया उसमें जोर जबरदस्ती की गई मेरी समझ में सरकार की तरफ से कोई ऐसा आदेश नहीं गया। बल्कि मैं समझता हूं कि अगर इस तरह की बात कहीं हुई भी है तो वह गलत है क्योंकि सुरक्षा कोष में चंदा देने वाले जो भी आदमी हैं उन्होंने स्वेच्छा से दान दिया है। राष्ट्र के नाम पर कोई फौज में लड़ रहा है, कोई अन्न उत्पादन के मोर्चे पर लड़ रहा है, कोई होम गार्ड में काम कर रहा है और कोई दूसरे सुरक्षा मोर्चों पर लड़ रहा है और जो लोग ये काम कर रहे हैं वे सब स्वेच्छा से काम करते हैं, निःसन्देह वे सब बधाई के पात्र हैं। और यही नहीं मैं यह भी समझता हूं कि एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिसने अपनी स्वेच्छा के विपरीत राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दान दिया हो और अगर ऐसा है तो उससे वह मकसद हमारा पूरा नहीं होता जिसके जरिये हम एक जनमत तैयार करके नई दिशा की ओर उसे ले जाना चाहते हैं। सभी माननीय सदस्य और सरकार भी इस बात की कतई हामी हो नहीं सकती कि राष्ट्रीय सुरक्षा कोष को जबरदस्ती जमा करने की बात आये। हो सकता है कि किसी की दृष्टि में सरकारी अफसर कोई काम करने लगे तो वह यह समझने लगे कि कुछ अफसरियत की बू आती है। जहां तक मैं समझता हूं राष्ट्रीय सुरक्षा की रसीदें गजटेड अफसरों तक ही सीमित रहीं।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)—

श्री कल्पनाथ सिंह जी को शायद याद हो कि आजमगढ़ जिले में श्री रामवचन यादव प्रेसीडेंड जिला कांग्रेस कमेटी ने और बनारस में जिला कांग्रेस कमेटी के प्रेसीडेंट, श्री श्याम बिहारी सिंह ने भी अपनी-अपनी रसीदें छपवा कर सुरक्षा कोष का रुपया जमा किया और उसे खा गये।

श्री कल्पनार्थसिंह—

नेता संसोपा अपनी जानकारी के हिसाब से कह रहे हैं और मैं अपनी जानकारी के मुताबिक कह रहा हूं। हो सकता है चीन के एग्रेसन के वक्त एकआध जगह ऐसा हो गया हो कि गैर-सरकारी रसीदें छपी हों।

उपनेता कम्युनिस्ट पार्टी ने यह कहा कि डेढ़ करोड़ रुपया राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में आया और वह कांग्रेस विशेष कर गुप्ता गुट को मजबूत करने के लिये लगाया गया। मैं उनसे निहायत अदब से अर्ज करना चाहता हूं कि इस बात के कहने के पूर्व उन्होंने वस्तुस्थिति की जानकारी कर ली होती तो अच्छा था। एक बार इस सदन में इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न भी हुये थे और

[श्री कल्पनाथसिंह]

सब बातें सदन में आयीं और जहां तक मुझे याद है कि वह रुपया किसी बैंक में जमा है और उसके महज सूद से उन लोगों को मदद की जाती है जो पी० ए० सी० के जवान अथवा हमारे प्रदेश के जवान फौजी मोर्चे पर रहे हैं। यह भी कहा गया कि राज्यपाल महोदय तो केवल अध्यक्ष मात्र हैं। इस की सफाई भी सरकार से हो जाय कि उसमें बहुत से मिलीटरी के पर्सोनल भी मेम्बर हैं। एक सेक्रेटरी भी सदस्य हैं। गुप्ता जी तो मेम्बरों में से एक मेम्बर हैं और उस पैसे के दुरुपयोग का तो प्रश्न ही नहीं उठता जब कि केवल उसके सूद से ही यह सब काम हो रहे हैं और यह एतराज केवल भ्रमवश है।

एक बात यह कही गयी कि कुछ लोग जेल में बन्द हैं उनको छोड़ देना चाहिये।

कुछ वक्त पहले शायद जनसंघ के नेता या कटौती के प्रस्तावक महोदय ने कहा कि अराष्ट्रीय तत्वों के बारे में हमेशा उनकी यह मांग रही है कि उनके ऊपर कड़ी निगाह रखी जाय (व्यवधान)। अब सवाल यह है कि एक दल कहता है कि वे न छोड़े जायं और दूसरा दल कहता है कि छोड़े जायं। मैं समझता हूं कि कम्युनिस्ट पार्टी में आपस में मतभेद है। दो दल हो गये हैं उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि उनकी विचारधारा चीन के प्रति है और बहुत से लोग खुल्लम खुल्ला चीन के बारे में प्रचार भी करते हैं। बहुत बार ऐसी बातें सदन में उठाई गयीं। मैं समझता हूं कि ये सब ऐसी बातें हैं जिनका इस प्रांट और इस प्रदेश से कोई खास सम्बन्ध नहीं है। ये सारी बातें केन्द्र से सम्बन्ध रखती है और केन्द्र के लोग इन बातों को देखेंगे। यह भी सही है, मैं भी इसका हामी नहीं हूं कि डी० आई० आर० का प्रयोग किसी नागरिक के अधिकारों पर कुठाराघात पहुंचाने के लिये किया जाय। आये दिन हैबियस कारपस हाईकोर्ट में जाते हैं। उसमें से बहुत से छूट भी जाते हैं और जिनका रिट साबित नहीं हो पाता वे नहीं छोड़े जाते। लेकिन इसको नागरिक सुरक्षा विभाग के कार्यकलाप से जोड़ना कुछ समझ में नहीं आता।

एक बात यह भी कही गयी कि चीन से समझौते की पहल की जाय। उत्तर प्रदेश की सरकार और नागरिक सुरक्षा विभाग इस सम्बन्ध में क्या करे। यह आप स्वयं सोच सकते हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि अगर इस में पहल किसी को करनी है तो वह चीन को करनी है। और साथ ही साथ उसको यह कहना चाहिये कि हम कभी भी भविष्य में हिन्दुस्तान के प्रति वह व्यवहार करने के लिये तैयार नहीं हैं जो सन् १९६२ में हमने किया था। हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को मर्यादा के अनुकूल ही अगर चीन का कोई प्रस्ताव आता है या चीन के जो दूसरे हमदर्द देश हैं उनकी तरफ से आता है चीन की स्वीकृति तभी हम उस पर विचार करेंगे। तब तक चीन के उन नापाक हौसलों को पस्त करने के लिये हमें हमेशा तैयार रहना चाहिये।

मैं एक निवेदन करना चाहूंगा होम गार्ड के सिलसिले में। पता नहीं फाइनेन्शियल पोजीशन या और दूसरी वजहों से सरकार को वह कहां तक उचित मालूम होगा लेकिन मेरा कहना यह है कि होमगार्ड में जिन जवानों को हमने प्रलिमिनरी ट्रेनिंग दे रखी है उनको आहिस्ता-आहिस्ता पुलिस के रेगुलर फोर्स में भरती कर लिया जाय। जो पी० ए० सी० के काबिल हों उनको पी० ए० सी० में और जो सिविल पुलिस के काबिल हों उनको उसमें बजाय इसके कि हम बाहर से रिक्रूट करें, होम गार्डस् के माध्यम से करें तो एक अच्छी बात होगी। मैं पी० आर० डी० के बारे में भी यही सुझाव देता हूं जो होम गार्ड्स के लिये दिया है। यही नहीं जो महिलायें नागरिक सुरक्षा के नाम में लगी हुई हैं, उनमें से भी अगर कोई ऐसी नौकरी के लिये, ऐसे काम के लिये, दूसरी जगह जाने के लिये उत्सुक हों और उनकी शैक्षिक योग्यता या अन्य योग्यतायें ठीक हों तो उस भर्ती में उन महिलाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिये जो इस कार्य में अपना योगदान दे रही हैं। मैं अर्ज करना चाहूंगा कि हर स्टेशन पर जब हमारी पी० ए० सी० जाती थी या सेना के जवान जाते थे तो जिस तरह से उसकी सेवा नागरिक सुरक्षा की तरफ की गई है और जगह-जगह उनका स्वागत किया गया है, ऐसी महिलायें जो समाज में फैले परदे के रिवाज को

उठा कर काम करने के लिये, समाज की और देश रक्षा के लिये आगे आकर काम कर रही हैं उनको पूरा पूरा प्रोत्साहन मिलना चाहिये और अधिक से अधिक उनके चित्त को संजोने का काम यदि इस विभाग द्वारा किया जाय तो मैं समझता हूं कि वह एक बहुत अच्छी बात होगी ।

श्री केशरीप्रसाद पांडेय (जिला जौनपुर)—

अधिष्ठाता महोदय, मैंने आज सदन में जितने भाषण सुने उनसे मेरे दिमाग पर यह प्रभाव पड़ा कि यह सदन काफी आतंकित है और संत्रस्त है और उससे छुटकारा पाने के लिये हर किस्म के रास्ते निकालने की कोशिश कर रहा है । उस से निकलने का जो तरीका अपनाया जा रहा है वह इस तरीके का है कि इधर के लोग उन पर आरोप लगा रहे हैं और उधर के लोग हम पर आरोप लगा रहे हैं । यह रास्ता मेरा खयाल है कि अच्छा और सुगम नहीं है ।

श्रीमन्, राष्ट्रीय संकट की जो स्थिति है वह ऐसी है कि असाधारण परिस्थिति को साधारण परिस्थिति में बदल दिया गया है, कुछ मनोवैज्ञानिक स्थिति ऐसी हो गई है कि हम इस स्थिति को समझ नहीं पा रहे हैं और साधारण स्थिति को समझ कर व्यवहार कर रहे हैं । जिसका नतीजा यह है कि साधारण और असाधारण में भेदभाव न होने के कारण जन साधारण में प्रभाव नहीं पड़ रहा है । इसका नतीजा यह है संकट की स्थिति को न समझ कर लोगों ने और समझना शुरू कर दिया है । रास्ते में, बस में या कहीं भी चले जाइये, आज यह स्थिति अजीब सी है और इसकी आलोचना इस प्रकार हो रही है कि किसी प्रकार से मौजूदा शासन को हटाया जाय तो स्थिति काबू में आजायेगी । यह नहीं कहा जा सकता है कि क्या विकल्प है लेकिन आज इस शासन से जनता ऊब गई है । यह स्थिति भयावह है । जनतंत्र में यहां हम लोग बैठते हैं और उसके लिये सक्रिय कार्य करते हैं फिर भी यह स्थिति यदि जन मानस में पैदा हो जाये तो यह बड़ा दुर्भाग्य होगा और वह ऐसे अन्त की ओर इशारा करता है जिसका अन्दाजा हम यहां नहीं कर सकते हैं । राष्ट्रीय संकट का अर्थ होता है समान त्याग और समान बलिदान । हमने देखा, जब युद्ध की स्थिति आयी तो हमारे किसान और मजदूरों के अनपढ़ लड़के फौज में भरती हुये और अपनी जिन्दगी हथेली पर ले कर मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राण गवायें और उन्होंने, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है, अपने खून से हमारे मुख की कालिमा को धोया और भारत के शौर्य की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित किया । लेकिन उसके विपरीत जब हम बड़े तबके की तरफ नजर डालते हैं जो देश की सारी पूंजी लिये बैठे हैं उनका एक भी बच्चा छोटे सिपाहियों के दरमियान दिखाई नहीं पड़ा । अगर आया है तो अफसर बन कर आया है । उसके अफसर लड़के में और हमारे सिपाही में कोई ताल्लुक नहीं है । इस प्रकार के लोग देश की रक्षा कर पायेंगे इसमें यदि संदेह उत्पन्न हो जाय, तो आश्चर्य की बात नहीं होगी ।

संकट कोई नया नहीं है । मैं रन आफ कच्छ की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं । छोटा सा इलाका है । वीरान और रेगिस्तान हो सकता है । लेकिन उसकी उपेक्षा कर देना कहां की बुद्धिमानी थी ? जब वह स्थिति आयी कि आप उस पर जमकर सौदा कर सकते थे, प्रभुत्व जमा सकते थे आप बे मौत मारे गये । मुसीबत यह है कि जहां और चीजों का दिवाला है वहां आपकी अकल का भी दिवाला है । रन आफ कच्छ का सौदा हमारे खिलाफ पड़ गया । डिटरमिनेशन और डिमार्केशन में हमारे राजनीतिज्ञ कोई अन्तर नहीं कर सके । विनोबा जी ने यह सलाह दी थी भूतपूर्व प्रधान मंत्री को कि आप जा रहे हैं तो अपने साथ मेनन साहब को लेते जाइये । मेनन साहब की इतनी अहमियत है कि वह अंग्रेजी सोसाइटी में रहे हुये आदमी हैं । वह उनके दाव पेंच समझते हैं । हो सकता है कि ऐसे दाव पेंच अंग्रेजों की तरफ से आयें तो उनका वह जवाब दे सकें । लेकिन दुर्भाग्य से उनकी वह सलाह नहीं मानी गयी । नतीजा यह हुआ कि डिटरमिनेशन और डिमार्केशन के बीच हम पिस गये और रन आफ कच्छ के मैदान में जीतने पर भी हम हार गये । यह हमारा दुर्भाग्य है ।

ताशकन्द का समझौता है । शान्ति के लिये जो हमने बलिदान किया है उसकी दुनियां में शायद कोई मिसाल नहीं मिलेगी, लेकिन साथ ही यह कहना पड़ेगा कि हमने जो मैदान में लड़ाई जीती थी जिसमें हमारे नौजवानों ने अपना बलिदान दिया था और अपना शौर्य प्रतिष्ठित किया था उसको डेस लगी, उसकी परवाह न करते हुये समझौता किया । हमने युद्ध जीता किन्तु

[श्री केशरी प्रसाद पाण्डेय]

समझौते की मेज पर हमारी पराजय हुई। राष्ट्रीय संकट की स्थिति चारों तरफ खड़ी हुई है। यह नहीं है कि हिमालय की तरफ से यह स्थिति बढ़ती चली आ रही है, वरन नेफा में है, मीजोलैंड और नागा लैंड में भी खतरा है। आपको सुनकर शायद आश्चर्य नहीं होगा कि आज हमारा समुद्री तट भी खतरे में है। इंडोनेशिया से पाकिस्तान तक एक बेल्ट तैयार की जा रही है जिसके जरिये जहाजी नाका बन्दी करने की कोशिश की जा रही हैं साम्राज्यवादी ताकतें डेमोक्रेसी का ढिंढोरा जरूर पीटती हैं लेकिन दिल में इम्पीरियलिस्ट भावना ले कर आगे बढ़ती हैं। उन्होंने हमारे तट से मुश्किल से एक हजार मील की दूरी पर अड्डा बना रखा है। इस प्रकार साम्राज्यवादी ताकतें और हमारे पड़ोसी दुश्मन चारों तरफ से नाका बन्दी कर रहे हैं। हम कन्टेन करने के लिये नाकाबन्दी करके घेरने की भावना रखते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि हम एशिया के सबसे बड़े राष्ट्र हैं जिसकी ४८ करोड़ जनता है। अगर वह हुंकार कर उठेगी तो उनका अस्तित्व डगमगा उठेगा। इसलिये वह चाहते हैं कि यह देश उनका पिछलग्गू बना रहे, अपना विकास न कर सके, अपने पैरों पर खड़ा न हो सके। उसको घेर कर नष्ट कर दो। उसका विकास रोक दो। राष्ट्रीय संकट की स्थिति आज उग्रतर है, लेकिन आज हमारे सत्ताधारी लोग उस असाधारण स्थिति को साधारण स्थिति मान बैठे हैं, यह मेरा निश्चित मत है और उनमें वह मेच्योरिटी नहीं वह प्रौढ़ता नहीं कि वह उसे संभाल सकें और उसके अनुरूप अपना कार्य कर सकें।

दूसरी तरफ मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मुल्क के अन्दर इस सदन में ही संघर्ष नहीं है, आज जो मुल्क के कण कण में संघर्ष है और इसके लिये यदि कोई उत्तरदायी है तो आपकी सरकार ही है। आज यदि मैं यह कहूं कि उधर के बैठे लोग अर्थात कम्युनिस्ट अपने दांतों पर शान चढ़ा रहे हैं और उधर के लोग जनसंघी अपनी छरियों पर शान बैठा रहे हैं तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। बंगाल में जो लौ जल रही है, केरल में जो जली हुई लौ दबी हुई है वह कहीं भूसे की आग की तरह भड़क न उठे और ऐसा न हो कि दोनों टार्च-लौ दिल्ली की ओर और दोनों तरफ से आगे बढ़ें और उनकी टक्कर दिल्ली की तख्त से हो, उनमें मुठभेड़ हो जाये, और गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाय जो बड़ी भयावह होगी। मैं नहीं समझता कि उस स्थिति में डेमोक्रेसी का क्या होगा ? आप हर चीज को समझने की कोशिश कर सकते हैं और यह आपका कर्तव्य भी है।

दिन पर दिन आपकी आन्तरिक स्थिति खराब होती जा रही है। इसका कारण है आपकी आपसी गुटबन्दी जो कि आपको और देश को मारे दे रही है। इस गुटबन्दी की मिशाल देना तो बेकार है क्योंकि वह इतनी ज्यादा है कि स्वयं सिद्ध है। पुलिस विभाग के सम्बन्ध में जो किताब दी गयी है उसमें अपराध वृद्धि के कारण के सम्बन्ध में कहा गया है कि इसका कारण दलबन्दी और गुटबन्दी है। आपने यह तो कहा है कि यह राजनैतिक दलबन्दी और गुटबन्दी नहीं है, लेकिन यह तो कहने की बात है। इसे हर कोई समझता है कि आपका इशारा किस तरफ है। एस० पी० और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट जिसकी नहीं सुनते हैं वह समझता है लीडर ही नहीं हैं। इसलिये वह एक दूसरे से जलते हैं और जले जा रहे हैं। देश की स्थिति दिन पर दिन खराब होती जा रही है। इसलिये मैं कहूंगा कि आज सारे देश के ऊपर आने वाले बाहरी संकट और राज्य के अन्दर उत्पन्न होने वाले जो संकट हैं, जो डेमोक्रेसी के लिये, जनतंत्र के लिये घातक हैं, उनको नजरन्दाज नहीं किया जा सकता है और न करना ही चाहिये। तो क्या करना चाहिये, स्पष्ट है कि व्यक्ति के लिये यही जरूरी नहीं है कि वह ईमानदार हो, भले ही ईमानदार हो यह भी जरूरी है कि जनता भी उसको ईमानदार समझे। लेकिन आज वह स्थिति नहीं है, आज बराबर गृह मंत्री जी पर आरोप पर आरोप लगाये जा रहे हैं किन्तु सरकार अन्धी, बहरी और गूंगी हो गयी है। मैंने आज अखबार में पढ़ा, माननीय गृह मंत्री ने कल सदन में कहा कि यदि कोई उन पर कुनबापरस्ती, परिवार परवरिश और पद के दुरुपयोग के एक भी केस को सिद्ध कर दे तो वह अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। मैं माननीय गृह मंत्री की चुनौती को स्वीकार करता हूं और सबूत में केवल एक चीज को पेश करना

चाहता हूं। १३० माननीय सदस्यों द्वारा जो प्रतिवेदन गवर्नर महोदय को दिया गया है, माननीय मुख्य मंत्री सुचेता जी को दिया गया है और नन्दा जी को दिया है, केवल उसी पर एक जुडीशियल इन्क्वायरी बैठा दी जाए और उसकी निष्पक्ष जांच करा ली जाए। मैं कहता हूं कि उस जांच से एक नहीं एक सौ एक प्रमाण उनके विरुद्ध सिद्ध हो जाएंगे। तब माननीय गृह मंत्री जी अपने पद से इस्तीफा दें।

श्री अधिष्ठाता—

अब आपका समय समाप्त।

श्री केशरीप्रसाद पाडेय—

अभी दो मिनट और बोल लेने दीजिये।

श्री अधिष्ठाता—

अच्छा बोलिये।

श्री केशरीप्रसाद पांडेय—

मैं समझता हूं कि ऐसी बात को माननीय गृह मंत्री को नहीं कहना चाहिये, उनको अपना दामन देखना चाहिये अब वह हमारे दामन को देखने की कोशिश करते हैं, उन्हें इस सदन के माननीय सदस्यों को हिस्ट्री शीटर समझने के पहले अपने को भी देखना चाहिये। यदि वह गृह मंत्री न होते तो शायद पुलिस की निगरानी में होते। माननीय गृह मंत्री जी ने चुनौती दी और किसी ने कल उसे स्वीकार नहीं किया इसके लिये मुझे दुःख है। मैं आज स्वीकार करता हूं और जुडीशियल इन्क्वायरी कान्सटीट्यूट करने की मांग करता हूं। उसके सामने मैं सारे सबूत दूंगा। आरोप सिद्ध हो जाने पर उपनेता सदन उनका इस्तीफा ले लें या उनको उनके पद से बरखास्त कर दें।

एक बात जिसके लिये मैं खड़ा हुआ था वह पी० आर० डी० के बारे में है। राष्ट्रीय संकट के बारे में जब मैंने दो वर्ष पूर्व कटौती का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था उस समय भी मैंने कहा था कि पी० आर० डी० वह संस्था है जिसके जवान इनके साथ कंधे से कंधा मिला कर आजादी की लड़ाई लड़े हैं। उनमें से कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो नये हों, लेकिन अधिकांश ऐसे हैं जो मुल्क की आजादी के लिये बड़ी बड़ी कुरबानियां कर चुके हैं और आज भी जब एलेक्शन आता है तब बिना संकोच ये पी० आर० डी० के लोग इनका झंडा उठाते हैं और इनको वोट दिला कर यहां बैठाते हैं। लेकिन ऐसे लोग जिनकी आवाज अखबार में भी नहीं पहुंच पाती है उनको माननीय मंत्री जी हरचन्द दबाने की कोशिश करते हैं। इसलिये कि ऐसे लोग समान त्याग, तपस्या करने वाले लोग हैं और जिनके मुकाबिले में माननीय मंत्री जी की आवाज धीमी पड़ सकती है। मैं कहना चाहता हूं कि इनसे ग्रामीण क्षेत्रों में काम लिया जाय। इनके द्वारा युवकों को ट्रेनिंग दिलाई जाय, इनसे डेवलपमेंट का काम लिया जाय। यह सारे काम सुरक्षा के लिये हितकर हैं और यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो यह पी० आर० डी० बेकार की संस्था बन कर रह जायगी।

श्री अधिष्ठाता—

आपका समय समाप्त।

श्री चन्द्रसिंह रावत (जिला गढ़वाल)—

अधिष्ठाता महोदय, मैंने जिन भाषणों को सुना है वह ड्रामेटिक परफार्मेन्सेज का एक थी उसमें मैंने पार्लियामेंटरी डिबेट की बातों को बहुत कम देखा। पहली बार यह बात मैंने इस सदन में देखी। मैं प्रस्तुत अनुदान का समर्थन करता हूं और विरोधी दल की तरफ से लाये कटमोशन के प्रस्ताव का विरोध करता हूं। मुझे बड़ा खेद है कि आज की दुनिया में जब कि तमाम राष्ट्र राजनीतिक चालों को खेलता हुआ आगे बढ़ रहा है, हमारे देशवासी आज भी उन चालों को देख नहीं पाये। मैं आप को बताना चाहता हूं कि इन राजनीतिक खेलों में मेरी बड़ी रुचि है। मैंने

[श्री चन्द्रसिंह रावत]

१७ बार पंडित नेहरू को लिखा है और २२ अक्तूबर, १९६२ को पंडित नेहरू को मैंने दावे के साथ लिखा था कि अगर हिन्दुस्तान को कोई खतरा है तो वह पाकिस्तान से है चीन से नहीं है। इस बात को समझने के लिये आप को मुल्क की जहनियत को समझने की जरूरत है। इन्सानी दिलों दिमाग किस तरह काम किया करते हैं जिन्होंने साइकोलोजी को स्टडी किया है और जिन्होंने मनुष्यों को पढ़ने की कोशिश की है वे इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं। जो यह समझते हैं कि एक मुल्क दूसरे मुल्क पर हावी हो जायगा वह स्वप्न में हैं। वे दुनिया को राजनीति को समझते नहीं हैं। एक जमाना था जब कि आर्थिक व्यवस्थायें राजनीति पर आधारित हुआ करती थीं लेकिन आज राजनीति आर्थिक व्यवस्थाओं पर आधारित होती हैं। हमारे इस खेल को हमारे देशवासी नहीं समझते। आज दुनिया में मेल मिलाप बढ़ाने की लड़ाई है। आज हथियारों की लड़ाई नहीं है, किसी की जमीन को लेने की लड़ाई नहीं है बल्कि अपने विचारों को फैलाने की लड़ाई है। आज इकानामिक इम्पीरियलिज्म को बढ़ाने की चारों तरफ लड़ाई है। यहां पर हमारे बहुत से माननीय सदस्य यूनिवर्सिटी की चोटी को पार करके आये हैं। वे इस बात को नहीं समझते हैं कि अधिकांश इकानामिक इम्पीरियलिज्म की लड़ाई चल रही है। किसी मुल्क पर कब्जा करने के लिहाज से हिटलरिज्म की लड़ाई नहीं है। जितनी भी वेस्टर्न पावर हैं उनको इकानामी के लिये एक तरह से यह कांस्प्रेसी है कि जो यूरोपियन कामन मारकेट है उसके अन्दर दुनिया को लाकर रखें। यही असल आज की दुनिया में झगड़ा है। इस बात को मद्देनजर रखते हुये मुझे बड़ा खेद है कि हमारे माननीय सदस्य इन बातों पर अपना दिमाग खराब करते हैं। वह देखना नहीं चाहते हैं कि दुनिया के अन्दर कौन से फोर्सेज काम कर रहे हैं। अगर इस बात को उन्होंने महसूस नहीं किया तो वह खतरा भारतवर्ष के लिये बहुत नजदीक चला आ रहा है। अफरीकन कंट्रीज और एशिया की कन्ट्रीज जितनी हैं उनको अमेरिकन पावर अपने साथ लेने की चेष्टा कर रही है। आज जो भी इस तरह के झगड़े आपको दिखाई देते हैं वह उसी का नतीजा है।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप देखेंगे कि स्टेटस के अन्दर बड़े बड़े बलवे होंगे और हुकूमत भी गायब होती दिखाई देगी। वह घड़ी दूर नहीं है। मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि उनके पास इसका क्या इन्तजाम है। हम जानते हैं कि इस मुल्क में राजनैतिक पार्टियां अमेरिकन डालर पर पनपती हैं, रूस के रुपये से पनपती हैं, चीन के रुपये से पनपती हैं। क्या कारण है कि जो मुल्क की डिफेन्स की बात करते हैं किन्तु उन देशद्रोहियों को जेल में क्यों नहीं रखा जाता है जो देश को अमेरिका के हाथ में रखना चाहते हैं, जो रूस या चीन को भाई समझते हैं। मैं समझता हूं ऐसे लोगों को सरकार पकड़ कर जेल में बन्द कर दे। जो लोग अमेरिका या रूस या चीन का पैसा खाते हैं उनको क्यो नहीं पकड़ा जाता है। इसलिये मैं बतलाना चाहता हूं कि अगर मुल्क को खतरा है कोई तो वह हमारे भारतवर्ष की इन्टरनल पालिसी से है। मैंने पं० जवाहरलाल जी को ५ चिट्ठियां लिखी थीं और उनको लिखा था कि अगर हमारे मुल्क को खतरा है तो वह यू० एस० ए० से खतरा है। इनका जाल बहुत गहरा है। मुझे खेद है कि देश के बड़े बड़े लीडरों ने १९५४ में वादे किये थे और कहा था कि अन्न में हम आत्म निर्भर हो जायंगे। अगर मेरी पावर होती तो मैं इन नेताओं को पकड़ कर जेलखाने में बन्द कर देता। मुझे खेद है कि हमारे देशवासी इन बातों को समझते नहीं हैं।

दूसरा प्रश्न आता है डिफेन्स का। यह प्रश्न ऐसा प्रश्न है जिसको देखने की जरूरत है। जिस मुल्क की इन्टरनल हालत खराब हो, जिसकी इकानामी चौपट हो उस देश को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। जिस देश की इकानामी डामाडोल हो उसका अपने पैरों पर खड़ा होना कठिन होता है। इसलिये जो आप तनख्वाह बढ़ाने की बात करते हैं उसका क्या नतीजा होगा इसको आपने सोचा नहीं है। एक बात यह कहना चाहता हूं कि हो सकता है कि हमारे कांग्रेसी भाई नाराज हो जायं लेकिन मैं बड़े अदब से कहना चाहता हूं कि जो आफिसर्स साहब या मिनिस्टर साहब तकरीर करते रहे कि हिन्दुस्तान सन् ५४ या ५५ में अन्न में आत्म-निर्भर हो जायगा तो उनको कानून के द्वारा ट्रायल होनी चाहिये कि उन्होंने क्यों मुल्क को और

सरकार को धोखे में रखा ? हमको क्यों मुगालते में रखा ? आज उनकी पब्लिकली ट्रायल होनी चाहिये। मैं उनको इंश्योर करता हूं। मुझे कोई डर नहीं है। मैंने संविधान की कसम खायी है, किसी दूसरे की नहीं। इसलिये आई मस्ट बी ट्रू टु माई कंट्री, टु माई पीपुल ऐंड टु माई कांस्टीट्यूशन। मैं यह बतलाना चाहता हूं कि यहां जो छोटी-छोटी बातें हो रही हैं उससे आप देश को फ्री नहीं कर सकते। हमारा जो फूड मिनिस्टर सेंटर में बैठा है अगर वही रहा तो हिन्दुस्तान कभी आगे नहीं बढ़ सकता। उस आदमी का दिमाग नाकाबिल है। इस मिनिस्टर सुब्रमनियम को छुट्टी ले लेनी चाहिये। वह मिनिस्टर कभी भी इस मुल्क को आगे बढ़ाने में नाकाबिल ही साबित होगा। यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

(लाल बत्ती होने पर)

मुझे ५ मिनट का समय और दिया जाय। जिस मिनिस्टर ने अपनी मिनिस्ट्री काल में फूड ग्रेन्स का इंपोर्ट बढ़ाया हो, वह एक बात ही उस की नाकाबलियत का सबूत है। उस के माने हैं कि कंट्री का प्रोडक्शन बढ़ा नहीं, घटा है।

श्री अधिष्ठाता--

आप का समय समाप्त।

*श्री शारदाभक्तसिंह (जिला हरदोई)--

अधिष्ठात्री महोदया, आज बोलने की मेरी इच्छा नहीं थी, लेकिन फिर भी माननीय सदस्यों के विचार सुन कर मैं अपने विचार यहां रखना आवश्यक समझता हूं। सुरक्षा का प्रश्न एक राष्ट्रीय प्रश्न है, दलगत बातों की बहुत कुछ इस प्रश्न में गुंजायश नहीं है। यह एक ऐसा व्यापक प्रश्न है कि जिसमें सभी दलों की ओर से यह अनुभव हो र ा है कि जो कुछ प्रदेश में होना चाहिये था वह नहीं हुआ है। राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर जो भी कदम उठाये जा रहे हैं उनमें सब से पहले जो विचार हमें करना है वह है जनता का मनोबल ऊंचा करने की बात। जनता इसके लिये तैयार रहे कि किसी प्रकार का आन्तरिक षडयंत्र संभव नहीं हो सकेगा। किसी की नियत पर आक्षेप करना मैं समझता हूं कि न तो उचित ही है और न राजनीतिक जीवन में यह करना किसी भी प्रकार से हमको आगे बढ़ा सकता है। इस प्रश्न के बारे में हमें इस तरह विचार करना होगा कि जहां तक राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल है उस ओर तथा इस ओर बैठने वाले माननीय सदस्य सभी एक मत हैं, सभी चाहते हैं कि आन्तरिक सरक्षा रहे और जो खतरा हमारे सामने है उस पर हम गम्भीरता से विचार करें। कई माननीय सदस्यों ने कहा कि जो कलकत्ते में हो रहा है वह यहां भी हो सकता है। मीजो में जो विप्लव हो रहा है वह सारे देश में संभव है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि उत्तर प्रदेश में कम से कम यदि विरोधी दल और सरकार जिस प्रकार से राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न पर आज तक विचार करके चलती रही है, यदि यही स्थिति रही तो यह यहां संभव नहीं हो सकेगा। मैं जानता हूं कि कुछ लोगों की ओर से यह बराबर विचार दिये जा रहे हैं कि देश में एक प्रकार का अशान्त वातावरण हो सकता है। मैं अनुभव करता हूं कि जहां तक अराष्ट्रीय संस्थाओं का सवाल है, उन पर उत्तर प्रदेश में किसी न किसी प्रकार हम काबू रख सके हैं। मैं यह नहीं कहता कि इसमें केवल सरकार को ही बधाई होनी चाहिए, विरोधी दल के लोगों ने भी सरकार के सामने वह सारी परिस्थितियां हमें इस सदन में रखी हैं और उनके द्वारा उसको लाभ हुआ है और हम इस प्रदेश में शान्ति बना रहे हैं और बना सके हैं।

कुछ थोड़े दिनों से मुझे ऐसा अनुभव होता है कि एक आवाज उठायी जा रही है प्रदेश में कि वातावरण अशांत होगा और मैं माननीय गृह मंत्री से कहना चाहता हूं कि वातावरण कुछ व्यक्तियों के द्वारा अशांत नहीं हो सकता। अशांत वातावरण बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं और उनमें जो सफलता नहीं मिली उसका कारण यह है कि जहां सरकार की ओर प्रयत्न हो रहे हैं वहां विरोधी दल की ओर से सरकार को पूरा सहयोग दिया जा रहा है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री शारदाभक्तसिंह]

कई माननीय सदस्यों और कुछ राजनीतिक दलों की ओर से यह मांग हो रही है कि जो साम्यवादी आज बन्द हैं उनको छोड़ा जाना चाहिये और इसके लिये यह कहा जा रहा है कि चूंकि इमरजेंसी खत्म हुई है, खत्म होने के बाद भी तमाम लोग जेल में हैं, यह अनुचित है। उनको चाहे बुरा लगे, लेकिन मैं स्पष्ट कहना चाहता हूं कि अगर कोई अराष्ट्रीय तत्व हैं और चीन से साठ गांठ किये हुये हैं या पाकिस्तान से संबंध रखते हैं, तो चाहे इमरजेंसी हो या न हो, उनका स्थान केवल जेल के भीतर है, बाहर नहीं होना चाहिये। अगर यह बाहर रहेंगे तो षडयंत्र करेंगे, लोगों के बीच में ऐसे विचार रखेंगे कि आगे आने वाले कठिन समय में फिर अशांति हो सकती है। इसलिये मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि....

श्री रामसुन्दर पांडेय—

मुकदमे चला दीजिये, सजा दे दीजिये।

श्री शारदाभक्तसिंह—

मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि जो यह वकालत बराबर इस सदन में होती है और जो कल तक कहते थे कि जो लोग चीन से साठ गांठ किये हुए हैं उनसे कोई हमें मुहब्बत नहीं है, हमें उनके साथ खड़े नहीं होना चाहिये, आज उन्हें उनसे इतनी मुहब्बत क्यों पैदा हो गयी है? क्योंकि शांति हो गयी है, ज्यों ज्यों प्रदेश में वातावरण बदलता जा रहा है जो लोग साठ-गांठ किये हैं वह लाभ उठाना चाहते हैं। जो राजनीतिक संस्थायें हैं उनको स्पष्ट कहना होगा कि मूल अधिकारों की आड़ में वह षड़यंत्र हम प्रदेश नहीं चलने देंगे। मुझे माफ करें साम्यवादी दल के लोग कि जिन लोगों की रिहाई की आज मांग की जा रही है जिस समय चीन का खतरा था उन्होंने कहा था कि ऐसे लोगों से हमें कोई मुहब्बत नहीं है। क्या आज उनमें बदलाव आ गया है जो विपरीत बातें कही जा रही हैं। मैं कहना चाहता हूं कि यह आवाज राष्ट्रीय लोगों की आवाज नहीं है इस बात में गलतफहमी नहीं रहनी चाहिये कि जिन लोगों ने ऐसे कदम उठाये हैं जिनसे हमारी सुरक्षा को खतरा हो सकता है तो उनको हम कभी माफ नहीं करेंगे और चूंकि चीन ने आक्रमण नहीं किया है तो स्वतंत्र नहीं करेंगे। मैं, व्यक्तिगत आक्षेप नहीं करना चाहता। लेकिन इससे प्रदेश की समस्या हल नहीं होगी। यह सभी दल वाले मानते हैं कि हमारे यहां पाकिस्तानी लोग हैं। लेकिन उनके खिलाफ हमें सतर्क रहना है। देश दलों के ऊपर है। मैं आपसे स्पष्ट कहना चाहता हूं कि जो शक्तियां षड़यंत्र करना चाहती थीं वे आज भी यह कह कर कि अब तो हमारी दोस्ती हो गयी है, फिर से अपना हाथ पैर फैला रही हैं और जब भी मौका आयेगा वे नुक्सान पहुंचायेंगी। हम जानते हैं कि आपने समझौता किया, आप उसमें सफल हुये, मगर जो कदम आप उठा रहे हैं उसमें हमारा मतभेद है और जिम्मेदारी के साथ हमारा मतभेद है। हमने गांव गांव में जाकर उस समय यह प्रचार किया कि पाकिस्तान मिल कर नहीं रहना चाहता, वह हमारी शांति की नीति का लाभ उठाना चाहता है, वह हमारे ऊपर कब्जा जमाना चाहता है और आज हम उन लोगों से यह कहें कि हमारा उनसे समझौता हो सकता है, हमारा समझौता हो गया है। सुरक्षा दल के लोगों ने यह वातावरण पैदा किया कि पाकिस्तान से समझौता नहीं हो सकता, हम लड़ाई नहीं चाहते, मगर लड़ाई हम पर थोपी गयी है, मगर आज वे क्या कहें। मैं आपसे स्पष्ट कहना चाहता हूं कि जहां और खतरे आपके सामने हैं, वहां इन दोनों खतरों से भी आप सावधान रहें। पाकिस्तान की लड़ाई के समय जो कदम आपने उठाया उसका असर हुआ। लेकिन आज यह कह कर कि पाकिस्तान से दोस्ती हो गयी है, आपको सुरक्षा प्रयत्नों में ढील नहीं डालनी है। आपकी सतर्कता और कड़ाई के कारण लोग अपना कार्य नहीं कर पाये। आज भी आपको वही सतर्कता बरतनी है। मुझे डर है कि आज नये माहौल में फिर से एक ऐसा वातावरण पैदा किया जा रहा है जिससे वे तत्व जो आगे नहीं बढ़ पाये थे, आगे बढ़े और समय आने पर अपना कार्य करें। अशांति का वातावरण पैदा करें। मैं कहता हूं खतरा अभी है और आगे आने वाला है। आपको उसके लिये अभी से सतर्क रहना है, सुरक्षा प्रयासों में किसी प्रकार की ढील

नहीं डालना है । उसके लिये बराबर आपको तैयारी करनी है । मैं चाहता हूं सरकार इस पर गम्भीरता के साथ विचार करे ।

जहां तक होम गार्डस का सवाल है, मैं यह कहना चाहता हूं कि होमगार्डस ने कुछ काम किया है। हम लोगों को यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि शांति के संबंध में उन्होंने काम किया है, पटरियां बनाई हैं और स्थान स्थान पर उन्होंने काम किया है परन्तु इस बात से भी इंकार नहीं हो सकता कि जिस तरह के लोग हम लाना चाहते हैं वे आये नहीं । कहा गया कि उनको नौकरी में पैसा कम दिया जाता है । हम नहीं चाहते कि होमगार्डस में भी पुलिस की तरह से दूसरी लाईन खड़ी कर दी जाय । हम चाहते हैं कि देश भक्ति के आधार पर देश की सुरक्षा में रुचि लेकर कम पैसा से भी कार्य करने में जवान आगे बढ़ें लेकिन हमें अभी भी ऐसे पढ़े लिखे लोग नहीं मिल पा रहे हैं । जो आदमी अभी तक आये हैं उनको हम आधार बनाकर नहीं चल सकते । हमने जिलाधीश को कहा कि होमगार्डस में अच्छे आदमी नहीं आ रहे हैं उस पर विचार करना चाहिये । आज चारों ओर से आवाज उठ रही है कि जनता को बंदूक के लाइसेंस मिलने चाहिये, राईफलों के लाइसेंस मिलने चाहिये । मेरा तो विचार है कि अगर यह रख दिया जाय कि जो लोग लाईसेंस चाहते हैं और जो अपने आप से बंदूक रख सकते हैं अगर वे सुरक्षा दल में आयेंगे और अगर उनके चरित्र के बारे में पूरी पूरी जानकारी हो जायेगी तो उन लोगों को भरती किया जायेगा तथा उनको लाइसेंस मिल जायगा । हम जानते हैं कि इससे दोनों बातें पूरी हो सकती हैं । इससे अच्छे लोग भी आ सकते हैं, अपने आपसे बंदूक भी खरीद सकते हैं, और आपकी ट्रेनिंग भी प्राप्त कर सकते हैं । आप बता दीजिये कि अगर आप ट्रेनिंग लेंगे तो बन्दूक मिलेगी । मैंने लोगों से बात की है और वे लोग चाहते हैं कि सुरक्षा में शामिल हों । आज जहां बंदूक के लाइसेंस पर पैसा चल रहा है उसको कोई नाही कर सकता । मंत्री जी इसको जानते हैं और वे प्रयत्न करें तो भी वह बन्द नहीं हो सकता । ऐसे लोग जो लाईसेंस लेना चाहते हैं उनको क्यों न मौका दिया जाय कि वे ट्रेनिंग लें और उसके बाद उनको लाईसेंस दिया जाय । अगर उनकी इच्छा है देशभक्ति की, सार्वजनिक कार्य भी करना चाहते हैं, स्थान स्थान पर खड़े होकर सुरक्षा की दृष्टि से तो हम उनको मौका दें । वे जिले जिले में नाम लिखायें । अगर पचास आदमी दरख्वास्त देते हैं तो उनकी जांच हो, उससे अच्छे आदमी भी आ सकेंगे । बंदूक भी दे सकते हैं, असला भी दे सकते हैं । इससे ऐसी स्थिति बन जायेगी जिससे जिले के लोग प्राप्त हो सकेंगे । इन शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं ।

*कुंवर श्रीपालसिंह—

आदरणीया अधिष्ठाती महोदया, सर्वप्रथम तो मैं इस विवाद में जिन माननीय सदस्यों ने भाग लिया उनके प्रति आभार प्रकट करता हूं और कुछ थोड़ी सी बातें जो रह गई थीं उनको सेवा में उपस्थित करता हूं । इस अनुदान को प्रस्तुत करते समय ही माननीय गृह मंत्री तथा अन्य वक्ताओं ने कहा कि इसकी बड़ी आवश्यकता है । हम भी समझते हैं, आवश्यकता है । परन्तु उस आवश्यकता की तरफ ध्यान हो । अगर यह देखने की चीज है तो उसके बारे में मैं केवल इतना ही निवेदन करूंगा कि यह १९६५ की आडिट रिपोर्ट है और इस आडिट रिपोर्ट को अगर आप देखें अधिष्ठात्री जी, तो ९१ ग्रांट्स ऐसी बतलाई गई हैं जिनमें जितना रुपया सरकार ने मंजूर कराया वह खर्च नहीं हुआ । उनमें से सबसे अधिक किसी भी ग्रांट में बचत हुई है तो केवल इस सुरक्षा वाले में । श्रीमती जी, नेशनल एमरजेंसी नाम से जो ग्रांट है उस ग्रांट में ६१ प्रतिशत रुपया खर्च नहीं किया गया । सोचें आप किस मुंह से गृह मंत्री महोदय यह कह सकते हैं कि नागरिक सुरक्षा की तरफ सरकार का ध्यान है । हमने जब इस सदन में मंजूर करके रुपया दिया खर्च करने के लिये । मैंने पहिले ही अधिष्ठाता महोदया, यह नोट किया था कि चीन के साथ

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[कुंवर श्रीपालसिंह]

जब हमारा युद्ध हुआ और चीन ने हमारे मुंह में झापड़ मारा । तो जब तक उसकी करारी चपत की हमारे गाल पर तमतमाहट थी तब तक हो हम समझे कि हां, कुछ है । उसके खत्म होते ही हम भूल गये । इसी सदन ने जितना रुपया खर्च करने के लिये इन्हें दिया था उसमें से कम नहीं, ६१ प्रतिशत ये बचा लिये, और हमसे कहते हैं कि तुम समझो कि अब भी एमरजेंसी है ।

अब दूसरी बात पर आता हूं । पाकिस्तानी आक्रमण के समय जिला गोंडा में तुलसीपुर नोटीफाइड एरिया का सभापति जनसंघ का है । उन्होंने प्रस्ताव पास किया कि १ ००० रुपया डिफेंस फंड में सुरक्षा के लिये दे दिया जाय । इसकी कलेक्टर साहब से अनुमति मांगी । वहां के सदस्य श्री सुखदेव प्रसाद जी ने इस पर प्रश्न किया तो उत्तर मिला कि कमिश्नर साहेब के यहां विचार हो रहा है । सुरक्षा के प्रति हमारी सरकार की यह जागरूकता है । एक प्रमाण तो मैंने आडिट रिपोर्ट से दिया कि लेखा परीक्षक कहते हैं कि ६१ प्रतिशत रुपया खर्च नहीं किया और दूसरा प्रमाण यह मैंने जनता की ओर से दिया । जनता ने देना चाहा और नहीं दे सकी । नोटीफाइड एरिया में जनता के ही प्रतिनिधि होते हैं। पाकिस्तान ने जितनी हमारी मां और बहनों की गोद और मांग सूनी करनी थी, वह करके अपनी जगह पर फिर वापिस चला गया । जितनी उसकी भूमि हमारे कब्जे में थी जिसे हमारे जवानों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर लिया, उसे फिर हम उसे दे चुके और जनता ने १ ००० रुपया देना चाहा तो वह भी कमिश्नर साहब की हांडी में अभी तक चुर रहा है ।

अब मैं माननीय झारखंडेराय जी की बात पर आता हूं। उन्होंने एक बड़ी भारी थीसिस सामने रख दी । उन्होंने कहा कि देशभक्ति दो प्रकार की, एक प्रतिक्रियावादी और दूसरी प्रगतिशील । यानी बकौल उनके देशभक्त भी दो तरह के हो गये । हमने तो सोचा था कि देश भक्ति एक ही प्रकार की होती है और वह वही है जो देशवासियों के खून से रंगी हुई माता की लाज बचाने के लिये हर समय काम में आवे । मैं उनसे सीखूंगा और पूछूंगा कि पुरु की देशभक्ति प्रतिक्रियावादी थी, भामाशाह की देशभक्ति प्रतिक्रियावादी थी, महाराणा प्रताप की देशभक्ति प्रतिक्रियावादी थी, महाराणा प्रताप का साथ देने वाले उन भील सरदारों की देश भक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, शिवाजी की देशभक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, नानाजी की देशभक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, गुरु गोबिन्द सिंह जी की देशभक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, हजरत महल की देशभक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, मौलाना अहमद शाह की देशभक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, महात्मा गांधी की देशभक्ति क्या प्रतिक्रियावादी थी, भगतसिंह आजाद और अनेकों क्रांतिकारी जो हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर, उसे अपने मुंह से चूमते हुए चढ़ गये, फांसी को अपने गले में डाल लिया, क्या उनकी देशभक्ति प्रतिक्रियावादी थी ? मैं अन्य को क्या कहूं स्वयं झारखंडे राय जी से पूछना चाहता हूं कि सन् ४२ के पहले जब यह भरी हुई पिस्तौल को ले कर अंग्रेजी सरकार को उखाड़ने के लिये दौड़ा करते थे तो क्या उनकी देशभक्ति प्रतिक्रियावादी थी । यदि थी तो हम सहर्ष स्वीकार करते हैं कि हमारी देशभक्ति प्रतिक्रियावादी है ।

श्री झारखण्डेराय--

इस कुल का जवाब है--नहीं ।

कुंवर श्रीपालसिंह--

यदि प्रगतिशील देश भक्ति यह है कि एक दो नहीं, ५०-१०० नहीं कम्युनिस्ट पार्टी के ४४ प्रतिशत लोगों ने स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया कि चीन ने भारत पर आक्रमण नहीं किया क्या यह प्रगतिशील देश भक्ति है ? बंगाल, आसाम, तेलंगाना में उपद्रव कराकर शान्ति भंग कराना शान्ति भंग कराने के येन केन प्रकारेण प्रयास करना और उनसे अपना मतलब साधना क्या यह प्रगतिशील देश भक्ति है ? भारत में चीन मैत्री संघ और रूस मैत्री संघ बनाने का

प्रयास क्या प्रगतिशील देश भक्ति है । केवल कलकत्ते के एक शहर में १,००० हजार आदमी चीन के टुकड़ों पर पले उस और देश का कार्य करें यह प्रगतिशील देश भक्ति है? इंडोनेशिया, अफ्रीका के अन्य देशों में जो देश भक्ति फैल रही है, क्या वह प्रगतिशील देश भक्ति है । सन् ४२ में जब हमारे देशभक्त नेता जेलों में ठुसे हुये थे और देश आजादी के लिये छटपटा रहा था उस समय अंग्रेजों का साथ देना क्या प्रगतिशील देशभक्ति थी ? यदि हां, तो हम नमस्कार करते हैं ऐसी देश भक्ति को, हम ऐसी देश भक्ति के पास भी नहीं आना चाहते । मैं अपनी जबान से क्या कहूं । मुझे तो कह दिया जायगा कि तुम प्रतिक्रियावादी हो और फिर कह दिया जायगा, साम्प्रदायिक हो, इसलिये मैं अपनी बात न कहूंगा । मैं समाजवादी की मुंह की बात कहता हूं । डाक्टर लोहिया को, जो न जमींदार हैं, न ताल्लुकेदार हैं और न जनसंघी हैं, न हिन्दू हैं, न मुसलमान हैं, पता नहीं क्या हैं । उन्होंने कहा है "कांग्रेस कुशासन की कीचड़ में कम्युनिस्ट कीड़ा कीड़ा कर रहा है" । अगर यह देश भक्ति है तो हम क्षमा चाहेंगे कि हम उस देशभक्ति को मानने के लिये तैयार नहीं है । इस प्रगतिशील देश भक्ति का एक नमूना यह है कि जब माउत्सेतुंग का राज्य चीन में आया तो उन्होंने एक संदेश हमारे यहां के कम्युनिस्टों को भेजा । संसार भर में अगर कोई देश दूसरे देश को संदेश भेजता है तो वह अपने दूत के द्वारा वहां की गवर्नमेंट को भेजता है मगर माउत्सेतुंग ने कम्युनिस्ट पार्टी को यह संदेश भेजा--- "भारत राष्ट्र एशिया के महान राष्ट्रों में से एक है । इस राष्ट्र का एक दीर्घ कालीन इतिहास है, तथा इस राष्ट्र में अनेक जनगण हैं । इस राष्ट्र की भूतकालीन विडम्बना तथा भावी पथ अनेक प्रकार से चीन के ही समान हैं । मुझे विश्वास है कि सभी देशभक्तों की संगठित शक्ति एवं भारत की वीर कम्युनिस्ट पार्टी की सामर्थ्य से भारत अधिक समय तक साम्राज्यवादियों एवं उनके पिट्ठुओं की कठपुतली बना नहीं रहेगा । चीन की भांति वह भी एक दिन प्रजातंत्रात्मक समाजवादी परिवार का एक अंग बन कर रहेगा । प्रगतिशील देशभक्ति की परिभाषा, यानी देशभक्ति की संगठन शक्ति । कौन सी देशभक्ति--वही प्रगतिशील देशभक्ति, प्रतिक्रिया वादी नहीं । भारत माता के लिये उत्सर्ग करने वाले और जीवन की जाज्वल्य मान ज्योति को जलाने वाले देशभक्ति क्या प्रगतिक्रिया वादी है और भारत माता को पददलित कराने के लिये दूसरे देशों की ओर नजर लगाकर आंख गड़ा कर देखने वालों की देशभक्ति क्या प्रगतिशील देशभक्ति है । मुबारक हो उनको यह प्रगतिशीलता हमें नहीं चाहिये वह ।

अभी मैं यह निवेदन करना चाहता था कि मुझे बहुत अच्छा मालूम हुआ जो उन्होंने कहा, हमारी देशभक्ति न रूस के प्रति है, न अमेरिका के प्रति है, न चीन के प्रति है न इंग्लैंड के प्रति है, हमारी देशभक्ति यदि है तो वह केवल भारत माता के प्रति है। इस भूमि के कण-कण के प्रति है, इस भारत भू पर पैदा होने वाले अन्न, पत्ते, पेड़, पौधे, पहाड़, नदी और कंकर पत्थर तक के प्रति है और यह देशभक्ति भारत माता के प्रति यहां के रहने वाले चाहे जिस धर्म के मानने वाले हों सब में होनी चाहिये । दत्ता जी ने उस देशभक्ति को नीचा गिराने का प्रयास किया लेकिन उनकी साम्प्रदायिकता की बात यहां चल नहीं सकती ।

श्री मेवालाल जी ने कहा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश का नक्शा बदल दिया । हम भी मानते हैं कि उन्होंने नक्शा बदल दिया मगर उन्होंने नक्शे को किस तरह से बदला । किधर बदला ? वह नक्शा बदला है नपुंसकता की तरफ । पिछले १७ साल में जब कि हम देश को इतना मजबूत बना सकते थे कि जो भी इसकी तरफ आंख उठाता उसकी आंख जल जाती लेकिन हमने उस अवसर का किस तरह से दुरुपयोग किया है । मेनन जैसे आदमी को साथ लेकर हमने कैसा बंटाधार किया, जिसने कि स्कीम बनाई हुई थी कि भारत पर चीन आक्रमण करे और जवाहर लाल नेहरू को हटा कर मेनन यहां का प्रधान मंत्री बने । यह नक्शा उसका था । हमारा कश्मीर जो देश का अभिन्न अंग था उसका मामला सुरक्षा परिषद् में ले जाकर बिना वजह उसने झगड़ा खड़ा किया । यह नक्शा जरूर बदला है । आज हमारे नेता रूस अमरीका आस्ट्रेलिया सब के आगे और सारे संसार में भीख मांग रहे हैं, न हमारे पास भोजन है न कपड़ा है । तीसरी योजना के अन्त तक हम ४ हजार २०० करोड़ टन गल्ला बाहर से मंगा चुके हैं । १७ साल में यह प्रगति हुई है कि हमारे यहां जो गल्ला सेरों में बिकता था वह

[कुंवर श्रीपालसिंह]

छटांकों में बिकने लगा है और कपड़ा भी जो गजों में बिकता था वह इंचों में बिकने लगा है। यह पूंजीपतियों और कम्युनिस्टों ने मिलकर देश के साथ षडयंत्र किया है और वह दोनों ही इसके लिये बराबर भागी हैं और इसीलिये हम कहते हैं कि हमें न पूंजीपतियों के साथ जाना है और न कम्युनिस्टों के साथ ही जाना है। हमें तो भारत माता के साथ जाना है। हमारी भारत माता ने पूंजीपति और कम्युनिस्ट करोड़ के करीब पैदा किये हैं और हमारी तो यह सभ्यता ही है कि हम तो वसुदेव कुटुम्बकम् के आधार पर सारे संसार का भला चाहते हैं, हमारी तो संस्कृति है कि हम तो सारे संसार के जीवित प्राणियों को भोजन देने की सामर्थ्य रखते हैं। रूस और चीन जिसके पैसे से वह एलेक्शन लड़कर यहां आते हैं और रूस और चीन जो पैसा उनको दे रहा है और सारे संसार में प्रचार के लिये दे रहा है क्या वह इस मामले में पूंजीपति नहीं है उससे ज्यादा धुरन्धर पूंजीपति और कौन हो सकता है, वह सबसे ज्यादा पूंजीपति हैं और उन्हीं का यह दल है। अमरीका में भी फोर्ड और राकफेलर जैसे पूंजीपति हैं और क्या और न जाने कितने वहां हैं तो इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है, दोनों ही पूंजीपति हैं।

बहुत सी बातें कही गयीं। हमें यह भी कहा गया कि आलोचना करते हो, तुम्हारा काम आलोचना का है। सरकार के चश्में यदि गंदे हो जायं सरकार बहरी हो जाय सरकार से बोलते न बने, मुंह बन्द हो जाय तो हम इसलिये रहते हैं कि उसके कान, नाक और मुंह खोल दें लेकिन यदि सरकार उस त्रिमूर्ति की तरह से अपनी नाक, कान, आंख बन्द किये रहे तो हम क्या कर सकते हैं। अभी कल का ही किस्सा है। गृह मंत्री ने बतलाया कि सीतापुर केस के बारे में कि जो लाश मिली उसमें मेडिकल रिपोर्ट में यह है कि कोई चोट नहीं है। सड़ी हुई लाश थी। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मेडिकल रिपोर्ट को पुनः मंगा कर देखें उसमें यह लिखा हुआ है कि उस लाश के केवल सिर पर १४ चोटें हैं। रावत जी के लिये मैं क्या कहूं? बड़े जोर से बोले लेकिन समझ में नहीं आया कि क्या कह रहे थे लेकिन इतनी बात समझ में आयी कि माननीय हरगोविन्द सिंह पर सहस्र धारा वर्षा कर रहे थे।

अन्त में मैं यह निवेदन करूंगा कि केवल होमगार्ड बनाने से, पी० आर० डी० बनाने से देश की आन्तरिक सुरक्षा नहीं हो सकती। वाह्य सुरक्षा के लिये सैनिक चाहिये, उनके लिये अच्छी शिक्षा चाहिये, सैनिक सज्जा चाहिये परन्तु आन्तरिक सुरक्षा के लिये हृदय चाहिये और मस्तिष्क चाहिये और उसके लिये निर्माण का प्रयास कीजिये। देशभक्ति जाग्रत करने के लिये आपने कौनसा कदम उठाया, यह मैं जानना चाहता हूं? जब कम्युनिस्ट पकड़ कर ले जाते हैं हमारे एक सिपाही को तो उसका ब्रेन वाश किया जाता है लेकिन हमारे यहां कौनसा प्रचार कार्य किया जाता है और सरकार की तरफ से जिसमें लोगों में देशभक्ति जाग्रत हो। जो नेता हैं, जो कुर्सियों पर बैठने वाले हैं, ये नित्य जनता के अन्दर जा कर प्रत्यक्ष प्रमाण रखें तभी देश की जनता के अन्दर देशभक्ति की भावना जाग्रत हो सकती है और ऐसा किया जायगा तो एक होमगार्ड नहीं एक हजार होमगार्ड जितना काम करता है उतना एक आदमी काम करेगा। होमगार्ड में कोई आदमी गलत रास्ते से घुस कर के वहां अराष्ट्रीय तत्व पहुंच कर के नुकसान पहुंचा सकते ह। परन्तु जिसके हृदय में मां की शान की रक्षा की कुछ जलन होगी उसके सामने गलत काम करने वाला आदमी आया कि उसकी गर्दन पकड़ कर मरोड़ दी। उस भावना को जागृत करने की आवश्यकता है। यह चीन और पाकिस्तान कोई मामूली दुश्मन नहीं हैं। ये केवल जमीन के लिये ही लालायित नहीं हैं। इनकी और हमारी विचारधाराओं की लड़ाई है। इनसे हमें पुश्तों लड़ना पड़ेगा और इसके लिये जब तक हम प्रगाढ़ राष्ट्रीयता का प्रचार, प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर मातृभूमि के प्रति प्रगाढ़ देश भावना जागृत नहीं करेंगे तब तक होमगार्ड या पी० आर० डी० बनाने से वह कार्य सिद्ध होने वाला नहीं है।

श्री हरगोविन्दसिंह—

श्रीमन्, मैं माननीय सदस्यों का बड़ा आभारी हूं इसलिये कि इस अनुदान पर अपने विचार व्यक्त करते समय उन्होंने सभी सम्बन्धित प्रश्नों पर जिनका इससे स्पष्ट या अस्पष्ट सम्बन्ध नहीं

भी था, अपने विचार व्यक्त किये । मैं आशा करता था चूंकि इस एक नये विभाग का सृजन किया गया है और ऐसी अवस्था में उसका सृजन हुआ है कि जैसा मैंने पहले कहा कि भौगोलिक स्थिति से देश ऐसी जगह पर है कि यदि यह सोचा जाय कि वह बहुत काल तक आक्रमण की आशंका से गुजरता रहेगा तो गलत नहीं होगा । इसलिये यह आवश्यक हो गया कि हम सब ही ऐसी आशंका और विपत्ति के लिये तैयार रहें । चूंकि यह एक नया विभाग है और स्वतंत्र भारत को लड़ाई का कोई पहले अनुभव भी नहीं था इसलिये मैं आशा करता था कि माननीय सदस्य ऐसे विचार देंगे जिनसे इस विभाग के सृजन में कुछ सहायता मिल सके । लेकिन मैं यह अवश्य कहूंगा कि इसमें मुझे निराशा हुई, मुझे उन सुझावों का कोई लाभ नहीं मिल सका । इसलिए मैं समझता हूं कि बहुत बातें मेरे पास उत्तर देने के लिये नहीं हैं । हां यह मैंने पहले भी कहा, अब भी कहता हूं कि आपत्ति काल में हमारी इन संस्थाओं ने सराहनीय कार्य किया और उसके द्वारा हमारे लिये यह संतोष होना चाहिये कि जिस समय ऐसी आशा की जा सकती थी और पाकिस्तान भी ऐसी आशा करता था कि लड़ाई के समय देश में और विशेषकर इस प्रान्त में एक उथल-पुथल मचेगी, साम्प्रदायिक झगड़े होंगे जिनके कारण आंतरिक ढांचा अस्त व्यस्त हो जायगा । लेकिन वह दो कारणों से सम्भव नहीं हो सका । एक तो यह कि सरकार जाग्रत थी और उस पर एक निगाह रखी जाती थी और दूसरी ओर मैं इस अवसर पर उन सभी लोगों को भी बधाई देना चाहता हूं जिनके प्रति पाकिस्तान यह आशा लगाये बैठा था कि वह देश के अन्दर एक गड़बड़ी पैदा करेंगे । मुझे संतोष है इस बात का कि यू० पी० को वह प्रान्त है जहां बहुसंख्यक मुसलमान और प्रान्तों की अपेक्षा हैं । हमें सबसे कम आदमियों के ऊपर ही कोई कार्यवाही करनी पड़ी । वह इसलिये कि उनकी ओर से या किसी की ओर से ऐसी सम्भावना मुझे दिखाई नहीं पड़ी कि यह देश के लिये या देश के भविष्य के लिये, देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिये कोई ऐसी चीज है और उसके प्रति हम अपना आभार जरूर प्रकट करना चाहते हैं ।

इस मसले पर अपने विचार व्यक्त करते हुये कुछ माननीय सदस्यों ने सुरक्षा कोष इत्यादि की बातें कीं । मैं समझता हूं कि वे असंगत बातें थीं और उनका उत्तर देने का न अवसर है, न समय है, उसका उत्तर देना भी सम्भव नहीं है और न देना चाहिये । (व्यवधान) उत्तर है और जितनी बातें हैं वे सब मेरी जानकारी में हैं । अगर किसी ने पहले कोई रुपया इकट्ठा किया था, चीन के एग्रेशन के समय, जब सरकार की ओर से नहीं कहा गया था कि सब रसीदें कलक्टर ही देगा, उससे पहले की मैं नहीं कहता लेकिन उसके बाद ऐसी कोई घटना या ऐसा कोई दृष्टान्त नहीं मिला जिसमें लोगों ने अपनी रसीद छपवाकर सुरक्षा कोष का रुपया इकट्ठा किया हो। पाकिस्तान की लड़ाई के समय कुछ गांव सभाओं ने अपने यहां कुछ रुपया इकट्ठा किया था । लेकिन कलक्टर ने उसकी रसीद दी और उसकी रसीद पर ही इकट्ठा हुआ । रुपया सरकारी कोष में जमा हुआ । इसलिये उसकी कोई घटना ऐसी नहीं हुई और इस सबध में जो विचार प्रकट किये गये शायद वह निर्मूल हैं ।

होम गार्ड के सिलसिले में एक सुझाव दिया माननीय कल्पनाथ जी ने कि उनको पुलिस में भरती की सुविधायें दी जायं । मैं समझता हूं कि कोई उसमें रुकावट नहीं है । होमगार्ड का व्यक्ति उसमें लिया जा सकता है बशर्ते कि नापजोख में वह ठीक हो । मैं नहीं कहता कि होम गार्ड में सभी अच्छे आदमी हैं लेकिन बड़ी जांच पड़ताल के बाद उसमें भरती की जाती है । जब यह मालूम हो जाता है कि किसी के खिलाफ शिकायत है तो उसको हटा दिया जाता है । इसलिये जितना सम्भव हो उतना किया जाता है और अवश्य किया जायगा । आर्म्स की जहां तक बात है उसमें कोई रुकावट नहीं हैं । यों हमने सर्कुलर निकाला है कि हर गांव में कम से कम दो तीन बन्दूकें हम जरूर चाहते हैं लोगों के पास रहें क्योंकि तजुरबे से हमने यह देखा है कि जिन गांवों में असलहे हैं उसमें डकैतियां बहुत कम होती हैं । माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि यदि वह गांवों में विलेज डिफेंस सोसाइटी बनायें और उसमें हमारे अधिकारियों द्वारा भी उनको प्रोत्साहन मिलेगा, एस० पीज से मैंने कहा है कि वह विलेज डिफेन्स सोसाइटी बनायें तो उनको असलहा पाने की कोई दिक्कत नहीं होगी । (व्यवधान) जब हम असलहा

[श्री हरगोविन्दसिंह]

देंगे तो कारतूस भी देंगे लेकिन जो दाम होता है वह तो देना ही पड़ेगा । सस्ता कहां से लायेंगे ? क्योंकि यहां तो बनता नहीं कारतूस ।

श्री अधिष्ठाता—

मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि कितना समय आप लेंगे ?

श्री हरगोविन्दसिंह—

मैं एक मिनट और लूंगा । कहा गया कि यह क्या बात है कि जब पुलिस का बजट आया तो राजा साहब जौनपुर ने कटमोशन पेश किया और जब इसका आया तो श्रीपालसिंह जी ने कटमोशन पेश किया । लेकिन शायद केशरी प्रसाद जी बहुत उतावले थे कि मैं तो कहीं आया नहीं इस लिये आखिर में वह भी उठ गये । उनको जो हरगोविन्दसिंह का भूत चढ़ा हुआ है उसी को कहने के लिये बड़ा भारी तूमार बांधा । एक बात मैं कहना चाहता हूं कि जो किसी के प्रति जुडीशियल इन्क्वायरी की मांग करे उसका भी कुछ स्तर होना चाहिये तब उसके मुंह से शोभा देता है । मैं इन्हीं शब्दों के साथ एक दफा फिर माननीय सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूं और चाहता हू कि इस अनुदान को पास किया जाय ।

श्री केशरीप्रसाद पांडेय—

मैं जानना चाहता हूं कि क्या सदस्य का कोई और स्तर होगा जो इनक्वायरी मानी जायगी । हमारा स्तर उनसे ऊंचा है । यह इस सदन के सदस्य नहीं है । यह चोर दरवाजे से तशरीफ लाये हैं । इत्तफाक से मंत्री बन गये ।

श्री अधिष्ठाता—

अब इन बातों का समय नहीं है ।

प्रश्न यह है कि सम्पूर्ण अनुदान संख्या ४६ के अधीन मांग की राशि घटाकर एक रुपया कर दी जाय ।

कमी करने का उद्देश्य विभागीय नीति की आलोचना करना तथा सुझाव देना ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और अस्वीकृत हुआ ।)

श्री अधिष्ठाता—

प्रश्न यह है कि अनुदान संख्या ४६—राष्ट्रीय संकट से सम्बद्ध व्यय के अन्तर्गत ३,८९,८४,९०० रुपये की मांग वर्ष १९६६-६७ के लिये स्वीकार किया जाय ।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।)

श्री अधिष्ठाता—

अब हम उठते हैं और सोमवार को ११ बजे फिर मिलेंगे ।

(इसके बाद सदन ४ बजकर ५९ मिनट पर सोमवार, १४ मार्च, १९६६ के ११ बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया ।)

देवकी नन्दन मित्थल,

सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ :
१२ मार्च, १९६६ ।

पी० एस० यू० पी०—ए० पी०—४ एल० ए०—१९६६—८६२ ।